



श्रीपंचपरमेष्ठिस्तोत्रम् ॥

॥ अथ श्रीपालराजाकोरास लिख्यते ॥

दोहरा ॥ कल्पवेली कवियणनणी, सरसाति  
करि सुपसाय ॥ सिद्धचक्रगुण गावतां, पूर म  
नोरथ माय ॥ १ ॥ अलियविघन सवि उपशमे,  
जपतां जिन चोवीश ॥ नमता निजगुरु पथकमल,  
जगमां वधे जगोश ॥ २ ॥ गुरु गौतम राजगृ  
ही, आव्या प्रज्जुआदेश ॥ श्रीमुख श्रेणिक प्रम  
खने, इणपरिदे उपदेश ॥ ३ ॥ उपगारी अरिहं  
तप्रज्जु, सिद्ध नजो जगवंत ॥ आचारज उव  
झाय तिम, साधु सकल गुणवत ॥ ४ ॥ दरि  
शण दुर्लज ज्ञान गुण, चारित्र तप सुविचार ॥  
सिद्धचक्र ए सेवतां, पामीजे नवपार ॥ ५ ॥ इ  
हजव परजव एहथी, सुख संपद सुविशाल ॥  
रोग ओक रौरव टले, जिम नगपनी श्रीपा

॥ ६ ॥ पुढे श्रेणीकराय प्रज्जु, तेकुण पु  
 गयपवित्र ॥ इंद्रजुति तव उपदिशे, श्री श्री  
 पाल चरीत्र ॥ ७ ॥

ढाल पहेली ॥ ललनानीदेशीमे ॥ देश मनोहर  
 मालवो, अति उन्नत अधिकार ललना ॥ देश अव  
 ४ मानुचिहुं दिशे, परवारिया परिवार ॥ ललना  
 ॥ दे० ॥ १ ॥ तससिर मुगट मनोहर, निरुपम  
 नयरी उज्जेण ललना ॥ लखमी लीला जेहनी,  
 पार कर्लीजे केण ललना ॥ दे० ॥ २ ॥ सरगपुरी  
 सरगे गइ, आणी जस आशंक ललना ॥ अलका  
 पुरी अलगी रही, जलधी ऊंपावी लंक ललना  
 ॥ दे० ॥ ३ ॥ प्रजापाल प्रतपे तिहां, ज्ञपति स  
 वि सिरदार ललना ॥ राणी सौभाग्यसुंदरी, रू  
 पसुंदरी नरतार ललना ॥ दे० ॥ ४ ॥ सहेजे सो  
 हउगसुंदरी, मन माने मिथ्यात्व ललना ॥ रूपसुं  
 दरी चित्तमां रमे, सुधी समकित वान ललना ॥  
 ॥ दे० ॥ ५ ॥ सुरपरे सुख संसारनां, जोमवतां

जुगल ललना ॥ पुत्री एकेकी थड, गणी दोव  
 रसाल ललना ॥ दे० ॥ ६ ॥ एक अनौपम सु  
 रलता, बाधे बधते रूप ललना ॥ श्रीजी बीज न  
 णी परे, इदु कला अनिरूप ललना ॥ दे० ॥  
 ॥ ७ ॥ सोहृगदेवी सुतातणु, नाम ठवे नगना  
 ह ललना ॥ सुरसुंदरी सुहामणी, आणी अधि  
 क उच्चाह ललना ॥ दे० ॥ ८ ॥ रूपसुंदरी गणी  
 तणी, पुत्री पावन अग ललना ॥ नाम ताम न  
 रपति ठवे, मयणासुंदरी मनरग ललना ॥ दे० ॥ ९ ॥  
 वेदविचक्षण विप्रने, सोंपे सोहृगदेवी ललना ॥  
 सकल कलागुण शीखवा, मुग्गसुंदरीने हेवि ॥  
 ललना ॥ दे० ॥ १० ॥ चतुःकला चोमठनणी,  
 बहु बुद्धिनिधान ललना ॥ शद्ध शाम्भू भवि आ  
 वरुया, नामानिघंट निदान ललना ॥ दे० ॥  
 ॥ ११ ॥ मयणाने माता ठवे, जिनमतपंडित पा  
 स ललना ॥ सार विचार सिद्धांतना, आनरवा  
 अर्यास ललना ॥ दे० ॥ १२ ॥ कविन कला गु

ण केलवे, वाजिंत्र गीत संगीत ललना ॥ ज्योति  
 ष वैद्यक विधि जाणे. राग रंग रसरीत ललना  
 ॥ दे० ॥ १३ ॥ सोल कला पुरण शशि, कुरवा  
 कला अज्यास ललना ॥ जगति जमे जस मु  
 ख देखी. चौसट कला विलास ललना ॥ दे० ॥  
 ॥ १४ ॥ मयणासुंदरी माति अति जन्नि, जाणे  
 जैनसिद्धांत ललना ॥ स्यादवाद तस मन वस्यो,  
 अवर असत्य एकांत ललना ॥ दे० ॥ १५ ॥  
 नय जाणे नवतत्त्वना, पुदगल गुण पर्याय ललना  
 ॥ कर्मग्रंथ कंठे करघ्या, समकित शुद्ध सुहाय ल  
 लना ॥ दे० ॥ १६ ॥ सुत्रअर्थ संघयणना, प्र  
 वचनसारोद्धार ललना ॥ खेन्न विचार खरा ध  
 रे, एम अनेकविचार ललना ॥ दे० ॥ १७ ॥  
 रास जलो श्रीपालनो, तेहनी पहेली ढाल लल  
 ना ॥ विनय कहे श्रौता घरे, हौजो मंगल माल  
 ललना ॥ दे० ॥ १८ ॥

दोहरा ॥ एक दिन अवनीपाति इस्यो, आणी

मन उल्लास ॥ पुत्रीनुं जोउं पाखुं. विद्याविनय  
 विलास ॥ १ ॥ सजामाय शिणगार करि, बो  
 लावी बेउ बाल ॥ आवी अध्यापक सहित. मो  
 हन गुण मणिमाल ॥ २ ॥ अर्थ अगोचर शा  
 स्त्रना, पुढे नुपति जेह ॥ बुद्धिबले बेउ बालिका,  
 आपे उत्तर तेह ॥ ३ ॥ अध्यापक आनदिया.  
 सज्जन सवे मुख पाय ॥ चतुर लोक चित चम  
 क्रिया, कल्या मनोरथ माय ॥ ४ ॥ विनय बल्ल  
 न निज बालनी, शास्त्र सुकोमल नाप ॥ सर  
 स जिसी सहकारनी, साकर मरखी साख ॥ ५ ॥  
 ढाल बीजा ॥ राग धोरणी ॥ पुण्य प्रसंशो  
 ए एदेशी ॥ प्रश्नोत्तर पुढे पितारे, आणी अधि  
 क प्रमोद ॥ मन लागे अति मीठडारे, बालक  
 वचन विनोदरे ॥ वढ विचारजो, देइ उत्तर एइ  
 रे, संशय वारजो ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ कुण  
 लक्ष्मण जीविततणुरे, कुण मनमथ घरनारि ॥  
 कुसुम कुण उत्तम कह्युरे, परणी गुंहरे कुमारि ॥

रे ॥ वच्च विचारजो ॥ २ ॥ एके वयणे एहनोरे;  
 उत्तर एणिपरे थाय ॥ मुरसुंदरी कहे तातजीरे;  
 सुणजो सासरे जायरे ॥ नृप अवधारजो, अर  
 थ सुणी अम एहरे, महोत वधारजो ॥ ३ ॥ म  
 यणाने महीपति कहेरे, अर्थ कहो अम एक ॥  
 जो तुमे शास्त्र संजालतारे, वाध्यो ऋदय विवेक  
 रे ॥ वच्च० ॥ ४ ॥ आदी अक्षरविण जेहोरे, ज  
 ग जीवाडणहाररे ॥ तेहिज मध्याक्षरविनारे, जग  
 मंहारणहाररे ॥ व० ॥ ५ ॥ अंत्याक्षरविण आ  
 पणारे, लागे संहुने मीठ ॥ मयणा कहे सुणजो  
 पितारे, ते में नयणे दीठरे ॥ नृप० ॥ ६ ॥ सु  
 गुण समश्वा पुरजोरे, नुपति कहे धरी नेह ॥  
 अर्थ उपावी अजिनवोरे, पुण्ये पामीजे जेहरे ॥  
 व० ॥ ७ ॥ सुरसुंदरी कहे चातुगीरे, धन यौ  
 वन वरदेह ॥ मन वल्लन मेलावडोरे, पुण्ये पा  
 मीजे एहरे ॥ नृप० ॥ ८ ॥ मयणा कहे मति  
 न्यायनीरे, शीलसुं निर्मल देह ॥ संगति गु

रु-गुणवंतनीरे, पुण्ये पाभीजे एहरे ॥ नृप० ॥  
 ॥ ९ ॥ इण अवसर जुपतिजणेर, आणी मन  
 अजिमान ॥ हुं त्रुठयो तुम उपररे, देजं वंछित  
 दानरे ॥ वृ० ॥ १० ॥ हुं निर्वनने धन देजरे, करुं  
 रंजने राय ॥ लोक सयल मुख जोगबरे, पाभी  
 मुज पसायरे ॥ वृ० ॥ ११ ॥ सकल पदार्  
 थ पाभीएरे, में तुठये जगमाय ॥ में रुठये जग  
 रौलीएरे, जजो न रहे कोइ बायरे ॥ वृ० ॥  
 ॥ १२ ॥ सुंदरी कह साचुं पितारे, एमा किशो  
 संदेह ॥ जग जीवारण दोयबरे, एक महीपति दु  
 जो मेहरे ॥ नृप० ॥ १३ ॥ साचुं साचुं सहु क  
 हरे, सकल सजा तिणीवार ॥ ए सुरसुंदरी जेह  
 वीरे, चतुर नको संसाररे ॥ नृप० ॥ १४ ॥ रा  
 जा पिण मन रंजितरे, कहे सुंदरी वर माग ॥  
 वंछित वर तुज मेलवीरे, देजं सयल सौजाग  
 रे ॥ वृ० ॥ १५ ॥ तिहां कुरुजंगल देशथीरे,  
 आव्यो अवनिपाल ॥ सजामाहे सोहे घणोरे, यौ



वन रूप रंसाळरे ॥ नृ० ॥ १६ ॥ शंखपूरीनयरी  
 धणीरे, अरिदमन तस नाम ॥ ते देखी सुरसुं  
 दरीरे, अंगे उपन्यो कामरे ॥ वृ० ॥ १७ ॥  
 पृथ्वीपाति तस उपरेरे, परंखी तास सनेह ॥  
 तिलक करी अरिदमननेरे, आपी अंगजा तेह  
 रे ॥ वृ० ॥ १८ ॥ रास रच्यो श्रीपालनोरे,  
 तेहनी बीजी ढाल ॥ विनय कहे श्रोता घरेरे,  
 होजो मंगल मालरे ॥ १९ ॥

दोहरा ॥ मयणा मस्तक धुणती, जव निर  
 खी नरराय ॥ पुढे पुत्री वात ए, तुम मन क्युं  
 न सुहाय ॥ १ ॥ सयल सजार्थी सोगुणी, चतु  
 राई चितमाह ॥ दीसेवे ते दाखवो, आणी अंग  
 उत्साह ॥ २ ॥ उचित नहिं इहां बोलवुं, मयणा  
 कहे महाराय ॥ मोहे मन माणसतणां, विरुआ  
 विषय कषाय ॥ ३ ॥ निर्विवेक नरपति जिहां,  
 अंश नहीं उपयोग ॥ सजा लोक सहु हाजि  
 या, सरिखो मिल्यो संयोग ॥ ४ ॥

ढाल त्रीजी ॥ राग केदारी ॥ कपुर हुवे अ  
 ति उजलुरे एदेसी ॥ मन मंदिर दीपक जिस्यो  
 रे, दीपे जास विवेक ॥ तास न कहिये परान  
 वेरे, अंग अज्ञान अनेक ॥ पिताजी मकरो जु  
 ठ गुमान, ए रुद्धि अथिर निदान ॥ पिताजी  
 जहेवो जलधी उधान ॥ पिताजी मकरो ० ॥ १ ॥  
 सुख दुख सहुए अनुजवेरे, केवल कर्मपसाय ॥  
 अधिकुं न उठुं तेहमारे, कीधुं कोणे न जाय ॥  
 पिताजी मकरो ० ॥ २ ॥ राजा कोपे कलकल्यो  
 रे, सांजलतां ते वात ॥ वहाली पण वेरण थई  
 रे, कीधो वचन विघातरे ॥ बेटीं जलीरे जणी  
 तुं आज, तें लोपी मुज लाजरे ॥ बे० ॥ विण  
 साड्य निज काजरे ॥ बे० ॥ तुं मुख शिरताज  
 रे ॥ बे० ॥ ज० ॥ ३ ॥ पोपीने पोढी करीरे, जो  
 जन कुर कपुर ॥ रयण हिडोले हींचतीरे, जोग  
 जला जरपुरे ॥ बे० ॥ ज० ॥ ४ ॥ पाट पटं  
 र पहेरणेरे, परिजन सेवे पाय ॥ जगमा सहु जी

जी करेरे, ए सवि मुज पसायरे ॥ बे० ॥ न०  
 ॥ ५ ॥ तत्व विचारो तातजिरे, मत आणो म  
 न रोप ॥ कर्म तुज कुल अवतरीरे, में किहां जो  
 यो जोश ॥ पि० ॥ म० ॥ ६ ॥ महलावो मोठ म  
 नेरे, नव नव करो निवेद ॥ ते सवि कर्म पसा  
 उल्लेरे, ए अवधारो जेद ॥ पि० ॥ म० ॥ ७ ॥  
 जो हठ वाद तुमने घणोरे, कर्म उपर एकंत ॥  
 तो तुमने परणावशुरे, कर्म आयो कंतरे ॥  
 बेटी० ॥ न० ॥ ८ ॥ मान हण्युं जो एणीयेरे, मा  
 हरुं सजा समद्ध ॥ फल देखाडुं एहनेरे, सकल  
 सजा प्रत्यक्षरे ॥ बे० ॥ न० ॥ ९ ॥ सोखीए एशुं शी  
 खव्युरे, अध्यापक अज्ञान ॥ सज्जन लोक लाजे  
 सहुरे, देखी ए अपमानरे ॥ बे० ॥ न० ॥ १० ॥  
 नगरलोक निंदे सहुरे, नण्युं एहनं धुल ॥ जुन  
 वातनी वातमारि, पिता करयो प्रतिकुलरे, ॥ बे०  
 ॥ न० ॥ ११ ॥ मिथ्यात्वी कहे जैननीरे, वात सवे  
 विपरीत ॥ जगत नीति जाणे नहींरे, आबला न

अविनीतरे ॥ बे० ॥ न० ॥ १२ ॥ अनसरूयी  
मी रायनोरे, रोप समावण काज ॥ कहे परधान  
पधारियेरे, रगवाडी माहागजरे ॥ बे० ॥ न० ॥  
॥ १३ ॥ रास नलो श्रीपालनोरे, तेहनी त्रिजी  
ढाल ॥ विनय कहे मद परिहरोरे, जेहथी बहु  
जंजालरे ॥ बे० ॥ न० ॥ १४ ॥

दोहरा ॥ राजा रगवाडी चढयो, सबल सेन  
परीवार ॥ मदमाता मंगल घणा. सहसगमे अ  
सवार ॥ १ ॥ मुजट सिपाई सामटा जिस्या पं  
चायणसिंह ॥ आयुव आडंबर अधिक, अटल  
अजग अवीह ॥ २ ॥ बागा केसरिया किया, र  
ढियाला रजपुत ॥ मुठाला मुठरायला, जोध ज  
सा यमदुत ॥ ३ ॥ पाखरिया पंखीपरे, ऊने अं  
बर जाम ॥ पंचवरण नेजा नवन्त, गयण चोक  
चित्राम ॥ ४ ॥ सरणाई वाजे सरस, घुरे गुहि  
र निसाण ॥ पुरमाहिर नृप आविया, नाला ऊ  
लहल नाण ॥ ५ ॥

ढाल चौथी ॥ रामचंद्रके बाग चांपो पौरी  
 रह्योरी एदेशी ॥ मारग सनमुख ताम, उमे खे  
 ह घणारी ॥ पुढे चुपति दृष्टि, देई मंत्री नणारी  
 ॥ १ ॥ कुण आवेढे एह, एवडा लोक घणारी ॥  
 कहे मंत्री रहौ दुर, दरिशन एह तणारी ॥ २ ॥  
 ए कुष्टि सयसात, थाई एक मणारी ॥ थापी रा  
 जा एक, जाचे रायराणारी ॥ ३ ॥ मारग मुक्ती  
 जाम, नरपती दूर टलेरी ॥ गलितांगुली तस  
 दुत, आवी ताम मिलेरी ॥ ४ ॥ उत्तम मारग  
 काई, जांए दूर तजीरी ॥ उज्जैणीना राय, हारि  
 कीर्तिसजीरी ॥ ५ ॥ निर्मुख आशाजंग, जाचक  
 जास रह्यारी ॥ नारचुत जगमांहि, निर्गुण तेह  
 कह्यारी ॥ ६ ॥ शी जाचोवो वस्तु विगतै, तेहन  
 णोरी ॥ रायकहे अमआज, कीराति काई हणो  
 री ॥ ७ ॥ दुत वहे अमराय, रुदली क्रुद्धि मि  
 लीरी ॥ राजवट्ट परगट्ट, बांधीअमे चलीरी ॥  
 ॥ ८ ॥ पण सुकुलिणी एक, कन्या कोइ दीएरी ॥

तो तसराणी होय, अम ए हरप हीयेरी ॥ ९ ॥  
 मन चिंते तव राय, मयणा देउ परीरी ॥ जगमां  
 राखु कीर्ति, अविचल एह खरीरी ॥ १० ॥ फ  
 ल पामे प्रत्यक्ष, मयणा कर्म तणांगी ॥ साले हिय  
 डामाहि, वयणा तेह घणांगी ॥ ११ ॥ वले रूख  
 घन वुठ, दाध्यां जेह दवेरी ॥ कुवयण दाध्या जे  
 ह, नवले तेह नवेरी ॥ १२ ॥ रोष तणे वश राय,  
 शुद्धिबुद्धि सर्व गईरी ॥ कहें दूत तुजराय, अम  
 घर आणो गईरी ॥ १३ ॥ देउं राजकुवरी, रू  
 पे रंज जमरी ॥ दुततणे मन बात, विस्मय ए  
 ह वसीरी ॥ १४ ॥ कशुं विमासे मुठ, में जे बात  
 कहीरी ॥ न फिरे जगमां तेह, अविचल साच  
 सहीरी ॥ १५ ॥ श्री श्रीपालनो रास, चौथी  
 ढाल कहीरी ॥ विनय कहे निरवाण, क्रोध सि  
 द्धि नहींरी ॥ १६ ॥

दोहरा ॥ कोप कठिन ज्ञपति द्वित्रे, आव्यो  
 निज आवास ॥ मिहासण बेठो अधिक, मन

अनिमान विलास ॥ १ ॥ मयणाने तेडी कहे.  
 कर्मतणो पख ठोड ॥ मुज पसाय मन आण जि  
 म, पुरू वंछित कोड ॥ २ ॥ मयणा कहे दुरे त  
 जो, ए सवि मिथ्यावाद ॥ सुख दुख जे जग पा  
 मिए, ते सवि कर्म प्रसाद ॥ ३ ॥ बालकने वत  
 लावतो. हठे चढावे राय ॥ वाद करंतां बालसुं,  
 लघुता पामे न्याय ॥ ४ ॥ कोइ कहे ए बालि  
 का, जुठ हठीली थाय ॥ अवसर उचित न उ  
 लखे, रीश चढावे राय ॥ ५ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ ईंमर आंवा आंवलीरे. ई  
 मर दामिम द्राख एदेशी ॥ राणो उंवर इण स  
 मेरे, आव्यो नयरीमांह ॥ सटित करण सुपम  
 जीसुरे, ठत्रधरे शिरबांय ॥ चतुरनर कर्मतणी ग  
 तिजोय ॥ कर्म सुख दुःख होय ॥ च० ॥ कर्म  
 न ठुटे कोय ॥ च० ॥ क० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥  
 श्वेतांगुली चामर धरेरे, अविगतना सुखवास ॥  
 घोर नाद घोवर स्वरेरे, अरज करे अरदास ॥

॥ च० ॥ कर्म० ॥ २ ॥ वेसर असवारी करीरे,  
रोगी सवि परिवार ॥ बलि बाबलीए परिवरयोरे,  
जिस्यो दग्ध सहकार ॥ च० ॥ क० ॥ ३ ॥ को  
इ थुटा कोइ पागलारे, कोइ खोडा कोइ खीण॥  
कोइ खसिया कोइ खासियारे, कोइ ददर कोइ  
दीण ॥ च० ॥ क० ॥ ४ ॥ एक मुखे माखी नणनणे  
रे, एक मुख पडती लाल ॥ एकतणे चांदां चगे  
रे, एक गिर नाठा बाल ॥ च० ॥ क० ॥ ५ ॥  
चउटामाहे चालतारे, सोर करे सयसात ॥ लोक  
लाख जोवा मिल्यारे, एह किस्यो उतपात ॥  
च० ॥ कर्म० ॥ ६ ॥ ढोर धसे कुतर नसेरे, धि  
क धिक कहे मुखवाच ॥ जन पुढे तुमे कोणगे  
रे, झुत के प्रेत पिशाच ॥ च० ॥ कर्म० ॥ ७ ॥  
कहे रोगी तूम रायनीरे, पुत्री रूप निधान ॥ ते अ  
म राणो परणशेरे, एह जाए तस जान ॥ च० ॥  
क० ॥ ८ ॥ नगर लोक साथे थयारे, कौतुक जो  
वा काज ॥ उबर राणो आवियोरे, जिहा बेठा



महाराज ॥ च० ॥ ९ ॥ मयणाने जुपती कहैरे, ए  
 आव्यो तुम नाह ॥ सुख संपुरण अनुनवोरे,  
 करमे करयो विवाह ॥ च० ॥ १० ॥ मयणा मु  
 ख नवी पालटेरे, अंश न आणे खेद ॥ ज्ञानीनुं  
 दीठुं हुवेरे, तिहां नही किस्यो विनेद ॥ चतु० ॥  
 ॥ ११ ॥ जेह पिता ए पांचनीरे, साखे लीधो कं  
 त ॥ देवपरे आराधवोरे, उत्तम मन ए खंत ॥  
 चतु० ॥ १२ ॥ करी प्रणाम निज तातनेरे, व  
 यण विमल मुख रंग ॥ आवीने ऊंनी रहीरे, उं  
 वरने वामंग ॥ च० ॥ १३ ॥ तव ऊंवर एणप  
 रे जणेरे, अनुचित एह जुपाल ॥ न घटे कंठे  
 कागनेरे, मुक्ताफलनी माल ॥ चतु० ॥ १४ ॥  
 राय वहे कन्या तणेरे, कर्मे ए बल कीध ॥ घणुं  
 कहुं में एहनेरे, दोप नको में लीध ॥ चतु० ॥  
 ॥ १५ ॥ रोगी रलीयायत थयारे, देखी कन्या पा  
 स ॥ परमेश्वर पुरण करीरे, आज अमारी आ  
 श ॥ चतु० ॥ १६ ॥ सुगुण रास श्रीपालनोरे,

तिहां ए पांचमी ढाल ॥ विनय कहे श्रोता घरे  
रे, होजो मंगलमाल ॥ चतु० ॥ १७ ॥

दोहरा ॥ कोइ कहे धिक रायने, एवो रोप अ  
गाध ॥ कोइ कहे, कन्यातणो, ए सधलो अप  
राध ॥ १ ॥ ऊनारे आव्या सह, सुणता इम  
जनवात ॥ अनुचित देखी आथम्यो, रवि प्रग  
टी तव रात ॥ २ ॥ यथाशक्ति उत्सव करी,  
परणावी ते नार ॥ मयणा ने ऊंवर मिली, थे  
ठा जुवनमजार ॥ ३ ॥

ढाल ठठी ॥ कोइलो पर्वत धुंवल्लोरेलो ए दे  
शी ॥ ऊंवर मनमां चितवेरेलो, धिक धिक मुज  
अवताररे ठगीली ॥ मुज संगतथी विणसशेरे  
लो, एहवी अदनुत नाररे रंगीली ॥ १ ॥ सुंद  
री हजीय विमासजोरेलो, ऊंडो करी आलोच  
रे ॥ ठ० ॥ काज विचारी कीजीएरेलो, जेम न  
पडे फिरी शोचरे ॥ रंगी० ॥ सुं० ॥ २ ॥ मुज  
संगे तुज विणससेरेलो, सोवन सरखो देहर ॥

ठ० ॥ तुं रूपे रंजा जिसरिलो. कोढीसुं शो ने  
 हरे ॥ रंगी० ॥ सुं० ॥ ३ ॥ लाज इहां मन ना  
 णीएरेलो, लाजे विणसे काजरे ॥ ठ० ॥ निज  
 माता चरणे जइरेलो, सुंदर वर कर राजरे ॥  
 ॥ रं० ॥ सुं० ॥ ४ ॥ मयणा तस वयणां सुणीरे  
 लो, हीयडे दुःख न मायरे वालेश्वर ॥ ढलक  
 ढलक आंसु पडेरिलो, विनवे प्रणमी पाय  
 रे वालेश्वर ॥ वचन विचारी ऊच्चरोरेलो, तुमे  
 ठो चतुर सुजाणरे ॥ वाले० ॥ वच० ॥ ५ ॥  
 एह वचन किम बोलीएरेलो, इणे वचने जीव  
 जायरे ॥ वाले० ॥ जीव जीवन तुमे वालहारेलो,  
 अवर न नाम खमायरे ॥ वा० ॥ ६ ॥ पछिम र  
 वि नवि ऊगमरेलो, जलधि न लोपे सीमरे ॥  
 वा० ॥ सती अवर इठे नहींरेलो, ज्यां जीवे  
 त्यां सीमरे ॥ वाले० ॥ वा० ॥ ७ ॥ उढ्याचल ऊ  
 पर चढ्योरेलो, मानु रवि परनातरे ॥ वाले० ॥  
 मयणामुख जोवा नणीरेलो, शील अचल अव

दातरे ॥ वा० ॥ व० ॥ ८ ॥ चक्रवाकदुःख चूर  
 तोरेलो, करतो कमल विकासरे ॥ वाले० ॥ जग  
 लोचन जव उगीयोरेलो, पसरयो पुहवी प्रका  
 शरे ॥ वाले० ॥ व० ॥ ९ ॥ आवो देव जुहारी  
 एरेलो, ऋपनदेव प्रासादरे ॥ वा० ॥ आदीसर मु  
 ख देखतारेलो, जाजे दुःखविपवादरे ॥ वाले० ॥  
 ॥ व० ॥ १० ॥ मयणावयणे आवियोरेलो, ऊं  
 र जिनप्रासादरे जिणेंसर ॥ आदीश्वर अविलोक  
 तारेलो, उपन्यो मन अल्हादरे जिणेंसर ॥ ति  
 हुं अणनायक तुं वडोरेलो, तुमसम अवर नको  
 यरे जिणेंसर ॥ ति० ॥ ११ ॥ मयणा ए जिन पु  
 र्जाआरेलो, केसर कुमुम कपुररे ॥ जिणें० ॥ ला  
 खीणुं कंठे ठळ्युरेलो, टोमर परिमल पुररे ॥ जि  
 णें० ॥ ति० ॥ १२ ॥ चैत्यवंदन करी जावनारे  
 लो, जावे करी काऊसग्गरे ॥ जिणें० ॥ जयज  
 य जगचितामणिरेलो, दायक शिन्नपुर मग्गरे ॥  
 जिणें० ॥ ति० ॥ १३ ॥ इह जव परजव तु

जविनारेलो, अवर नको आधाररे ॥ जिणे० ॥  
 दुःख दोहग दूरे करोरेलो, अप शेवक साधाररे  
 ॥ जिणे० ॥ तिहुं० ॥ १४ ॥ कुसुममाल निज  
 कंठथीरेलो, हाथतणुं फल दीधरे ॥ जिणे० ॥ प्र  
 नुपसाय सहु देखतारेलो, ऊंवरें ए बेऊ लीधरे  
 ॥ जि० ॥ ति० ॥ १५ ॥ मयणा काऊसग्ग पा  
 लियोरेलो, हियडे हर्ष न मायरे ॥ जिणे० ॥  
 ए सही शासनदेवतारेलो, कीधो अम सुपसा  
 यरे ॥ जिणे० ॥ तिहुं० ॥ १६ ॥ सुगुण रास  
 श्रीपालनारेलो, तिहाए ठळी ढालरे ॥ जिणे० ॥  
 विनयकहे श्रोताघरैरेलो, होजो मंगलमातरें ॥  
 ॥ जिणे० ॥ तिहुं० ॥ १७ ॥

दोहरा ॥ पासे पौसहशालमां, बैठा गुरु गु  
 णवंत ॥ कहे मयणा दे देशना, आवो सुणिए कंत  
 ॥ १ ॥ नरनारी देऊ जणां, आव्यां गुरुने पा  
 य ॥ विधिपूर्वक वंदन करी, बेठां बेसणठाय ॥  
 ॥ २ ॥ धर्मलान देई गुरु, आणी धर्मसनेह ॥

યોગ્ય જીવ જાણી હિવે, ધર્મ કહે ગુરુ તેહ ॥ ૩ ॥  
 ઢાલ સાતમી ॥ વાત મ વાઢે હો વ્રતતણી,  
 એદેશી ॥ જમતો એહ સંસારમાં, ટુલહો નરજવ  
 લાધ્યોરે ॥ ઢાંઢી નિંદ પ્રમાદને, આપસવરથ  
 સાધ્યોરે ॥ ચેતન ચેતોરે ચેતના, આણી ચિત્તમ  
 ઝારે ॥ ૧ ॥ સામગ્રી સવિ ધર્મની, આલે જે  
 નર સ્વોદરે ॥ માંચીનીપરે હાથને, ઘસતાં આપ  
 વિગોદરે ॥ ચેત૦ ॥ ૨ ॥ જાન લેઈં બહુ જુ  
 ક્તિમું, જિમ કોઈ પરણવા જાયરે ॥ લગનવેલા  
 ગઈં ઝગમા, પઢે ઘણું પસતાયરે ॥ ચેત૦ ॥ ૩ ॥  
 ણીપેરે દેઈં દેશના, કરે જવિક ઉપકારરે ॥ ગુરુ  
 મયણાને ઝલચી, વોલાંચે તિણીવારરે ॥ ચે૦ ॥  
 ॥ ૪ ॥ રે કુમરી તું રાયની, માથે સબલ પરિવા  
 રરે ॥ અમ ઝપાસરે આવતી, પુઠણ અર્થ વિચા  
 રરે ॥ ચેત૦ ॥ ૫ ॥ આજ કિસ્યુંં હમ એકલી  
 એ કુણ પુરુષ રતનરે ॥ ધુરથી વાત સવે ક  
 હી, મગણા થિર કરી મનરે ॥ ચેત૦ ॥

मनमांहे नथी आवतुं, अवर किस्युं दुःख पु  
 ज्यरे ॥ पण जिनशासन हेलना, साले लोक अ  
 बुजरे ॥ चे० ॥ ७ ॥ गुरु कहे दुःख न आण  
 जो, उंठुं अंश न जावेरे ॥ चिंतामाणे तुज कर  
 चढयो, धर्म तणे परजावेरे ॥ चे० ॥ ८ ॥ बड  
 वखती वर एहबे, होशे रायां रायरे ॥ शासन  
 सोह वधारशे, जग नमशे जस पायरे ॥ चे० ॥  
 ॥ ९ ॥ मयणा गुरुने वीनवे, देइ आगम उप  
 योगरे ॥ करी उपाय निवारी ए, तुम श्रावकत  
 नुरोगरे ॥ चे० ॥ १० ॥ सुरि कहे ए साधुनो,  
 उतम नही आचाररे ॥ यंत्र जकी मणिमंत्र जे,  
 औपध ने उपचाररे ॥ चे० ॥ ११ ॥ पण ए सु  
 पुरुष एहथी, थाशे धर्म उद्योतरे ॥ तिणे एक  
 यंत्र प्रकाशशुं, जस जग जागती ज्योतरे ॥ चे०  
 ॥ १२ ॥ श्रीमुनिचंद गुरू तिहां, आगमग्रंथ  
 विलोइरे ॥ माखणनी परे उद्धरी. सिद्धचक्रयंत्र  
 जोईरे ॥ चे० ॥ १३ ॥ अग्निहंतादिक नवपदे,

ॐ ह्रीं पद संयुतरे ॥ अवर मंत्राक्षर अग्निनवा,  
 लहिए गुरुगम तत्तरे ॥ १४ ॥ सिद्धादिकपद चि  
 हुं दिशे, मध्ये अरिहंत देवरे ॥ दरिसण नाण  
 चरित ते, तप चिहुं विदिशि सेवरे ॥ चेत० ॥  
 ॥ १५ ॥ अष्टकमलदल एणांपरे, यंत्र सकल  
 गिरताजरे ॥ निर्मल तन मन सेवता, सारे वं  
 छित काजरे ॥ चे० ॥ १६ ॥ आशो शुद्धमाहे  
 मांकीए, सातमर्था तप एहरे ॥ नव आंबिल क  
 री निर्मलां, आराधो गुणगेहरे ॥ चे० ॥ १७ ॥  
 विधिपूर्वक करी धोतियां, जिन पुजो त्रण का  
 लरे ॥ पुजा आठ प्रकारनी, कीजे थड उजमा  
 लरे ॥ चेत० ॥ १८ ॥ निर्मल नुमि संथारिये,  
 धरिए शील जगीशरे ॥ जपीए पद एकेकनी,  
 नोकरवाली वीशरे ॥ चे० ॥ १९ ॥ आठे थोड  
 ए वांदीए, देव सदा त्रण वाररे ॥ परिकमणा  
 दोय कीजीए, गुरु वेयावञ्च साररे ॥ चेत० ॥  
 ॥ २० ॥ काया वश करी राखीए, वचन विचा



री बोलरे ॥ ध्यान धर्मनुं धारीए, मनसा कीजे  
 अढोलरे ॥ चेत० ॥ २१ ॥ पंचासृत करी एक  
 ठां. परिमल कीजे पखालरे ॥ नवमे दिन सि  
 द्धचक्रनी, कीजे नक्ति विशालरे ॥ चे० ॥ २२ ॥  
 शुद्ध सातमर्था इणीपरं, चैत्री पुनम सीमरे ॥ उ  
 ली एह आराधीए. नव आंविलनो नीमरे ॥ चे  
 त० ॥ २३ ॥ एम एकवाशी आंविले, उली नव  
 निरमायरे ॥ साढा चार संवत्तरे, एतप पुरण था  
 यरे ॥ चेत० ॥ २४ ॥ ऊजमणुं पण कीजीए.  
 शक्तितणे अनुसाररे ॥ इह नव परनव सुखघ  
 णां. पामीजे नव पाररे ॥ चेत० ॥ २५ ॥ आ  
 राधन फल एहनां, इह नवे आण अखंडरे ॥  
 रोग दुहग दुःख उपशमे, जिम घन पवन प्रचं  
 डरे ॥ चेत० ॥ २६ ॥ नमणजले सिद्धचक्रने,  
 कुष्ठ अढारह जायरे ॥ वाय चोराशी उपशमे,  
 रुजे गुंबड घायरे ॥ चे० ॥ २७ ॥ जीम जगंद  
 र नय टले, जाय जलोदर दुररे ॥ व्याधि वि

विव विपवेदना, ज्वर थाये चकचुररे ॥ चे० ॥  
 ॥ २८ ॥ खास खयन खय चकना, रोग मिटे  
 सनिपातरे ॥ चोर चरडने माकणी, कोइन करे  
 उपघातरे ॥ चेत० ॥ २९ ॥ हीक हरस ने हे  
 मकी, नारा ने नासुररे ॥ पाठां पोडा पेटनी, ट  
 ले दुख दंतनां सुलरे ॥ चेत० ॥ ३० ॥ निर्ध  
 नियां धन संपजे, पुत्र अपुत्रीया होयरे ॥ विण  
 केवली सिद्धचक्रना, गुण न शके कही कोयरे ॥  
 ॥ चेत० ॥ ३१ ॥ रास जलो श्रीपालनो, ति  
 हां ए सातमी ढालरे ॥ विनय कहे श्रोताघरे,  
 होजो मंगल मालरे ॥ चेत० ॥ ३२ ॥

दोहरा ॥ श्री मुनिचंद मुनीश्वरे, सिद्ध यत्र  
 करि दीद ॥ इहनव परजव एहथी, फलशे वं  
 गित सिद्ध ॥ १ ॥ श्री गुरु श्रावकने कहे, एवं  
 उ सुगुणनिधान ॥ कोडक अवसर पाविए, से  
 वो थड सावधान ॥ २ ॥ साइमिना मगप  
 सम, अवग न सगपण कोय ॥ करया

हमितणी. समकित निर्मल होय ॥ ३ ॥ पधरा  
वे आदर करी, साहमि निज आवास ॥ नक्ति  
करे नवि नविपरे. आणी मन उल्लास ॥ ४ ॥  
त्यां सघलो विधि साचवे, पामी गुरु उपदेश.  
सिद्धचक्रपुजा करे, आंबिल तप सुविशेष ॥ ५ ॥

ढाल आठमी ॥ चोपाइनी देशी ॥ आ  
सो शुदि सातम सुविचार, उली मांमी स्त्री न  
रतार ॥ अष्ट प्रकारी पुजा करी. आंबिल कीधां  
मन संवरी ॥ १ ॥ पहेले आंबिल मन अनुकु  
ल, रोगतणुं त्यां दाध्युं मुल ॥ अंतरदाह सय  
ल उपशम्यो, यंत्र नमण महिमा मनरम्यो ॥  
॥ २ ॥ बीजे आंबिल बाहिर तचा. निर्मल थड  
जपतां जिनरुचा ॥ एम दिन दिन प्रत्ये वाध्यो  
वान. देह थयो सोवन्न समान ॥ ३ ॥ नवमे आं  
बिल थयो निरोग, पामी यंत्रनमणसंयोग ॥ सि  
द्धचक्रनो महिमा जुव. सकल लोक मन अच  
रित हुव ॥ ४ ॥ मयणा कहे अवधारो राय, ए स

वि सहगुरुतणो पमाय ॥ मातपिता बंधव सुत  
 होय, पण गुरुसम हेतु नहिं कोय ॥ ५ ॥ कष्ट नि  
 वारे गुरु इहलोक, दुर्गतिथी-वारे परलोक ॥ सु  
 माति होय सद्गुरु सेवतां, गुरु दीवोने गुरु देवना  
 ॥ ६ ॥ धन गुरु ज्ञानी धन ए धर्म, प्रत्यक्ष दीठो  
 जेनो मर्म ॥ जैनधर्म परशंसे सहु, बोधबीज पा  
 म्या त्या बहु ॥ ७ ॥ सातमेंह रोगीना रोग, ना  
 ठा यंत्रनमणसयोग ॥ ते साते सय सुखिया थया,  
 हृष्या निज निज थानिक गया ॥ ८ ॥ इक दिन  
 जिनवर प्रणमी पाय, पाठा बलता दीठी माय ॥  
 हर्ष धरीने चरणे नमे, मयणा पण आशी ते  
 समे ॥ ९ ॥ सासु जाणी पाये परे, विनय करं  
 तां गिरिवर चढे ॥ सासु वहुने दे आशीप,  
 आचरज देखी धुणे शीश ॥ १० ॥ कहे कुंवर  
 माताजी सुणो. ए पसाय सवि तुमबहुतणो ॥  
 गयो रोगने वाध्यो रग, बली लह्यां जिनधर्म  
 प्रसंग ॥ ११ ॥ सुगुणबहु निर्मल निजनद. दे

स्त्री माय अधिक आणंद ॥ पुनिमपरे बहुए ज  
 श लीध, सकलकलापुण पियु वीध ॥ १२ ॥  
 सुणो पुत्र कोसंबी सुणयो, वैद एक वैदक बहु न  
 एयो ॥ तेहजणी त्यां जाऊं जाम, ज्ञानी गुरु मुज  
 मिलिया ताम ॥ १३ ॥ में पृष्ठुं गुरुचरणे नमी,  
 कर्म कदर्थन में बहु खमी ॥ पुत्र एकठे मुज  
 चालहो, ते पण कर्म रोग ग्रह्यो ॥ १४ ॥ तेहत  
 णो किम जाशे रोग. के नहीं जाय पापसंयोग ॥  
 दया वरी मुज दाखो तेह, हुंहुं तुमचरणोनी खेह  
 ॥ १५ ॥ तव बोल्या ज्ञानी गुणवंत, सतकर खे  
 द सांजल विगंत ॥ ते तुज पुत्र कुष्टिए ग्रह्यो,  
 जंवरराणो करि जश लह्यो ॥ १६ ॥ मालवपति  
 पुत्रीए व थो, तस विवाह कुष्टिए कर्यो ॥ घरु  
 णो वयणे तप आदः, सिद्धचक्र आराधन क  
 र्यं ॥ १७ ॥ तेथी तुज सुत थयो निरोग, प्रग  
 ट्यो पुण्यतणोसंयोग ॥ वली एहथी बधशे लाज,  
 जीती घणं जोगवशे राज ॥ १८ ॥ गुरुवचने

हूं आवी आज, तूम दीठे मुज सरियां काज  
 ॥ त्रणे नणे हिवे रह सुखवास, लील करे सा  
 हमि आवास ॥ १९ ॥ सिद्धचक्रनो उत्तम  
 रास, जणता सुणतां पुगे आश ॥ ढाल आ  
 ठभी एणिपरे सुणी, विनय कहे चित्त धरनो  
 गुणी ॥ २० ॥

दोहरा ॥ एकजिन जिन पुजा करी, मधु  
 रस्वरे एक चित्त ॥ चैत्यवंदन करी कुंवरे.  
 सामू बहू सुणत ॥ १ ॥ मयणानी माता घणं,  
 दुहवाणी नृपसाथ ॥ जब मयणा मत्सर धरि,  
 दीधी ऊबर हाथ ॥ २ ॥ पुण्यपाल नामे नृपति,  
 निज बध्व आवास ॥ गीसावि आवि रही, मुके  
 मुख नीसास ॥ ३ ॥ जिनवाणी द्वियडे धरी,  
 वीसारी दुःख दंद ॥ आवी देव जुहारवा, तिण  
 दिन त्या आणद ॥ ४ ॥ माए मयणा उलखी,  
 अन्नमारे निज बाल ॥ आगल नर दीठो बच  
 र, योवन श्वरमाल ॥ ५ ॥

री, कां दीधीकिरतार ॥ जिणे कुष्टिबर परहरी,  
 अवर कियो जरतार ॥ ६ ॥ रूपसुंदरी एणिप  
 रे, घणुं, रुदन करे तिणिवार ॥ वज्र पमो मुज कु  
 खने, धिक धिक मुज अवतार ॥ ७ ॥ रोती दीठी  
 दुख नरे, मयणाए निजमाय ॥ तव आवी ऊ  
 तावली, लागी-जननी पाय ॥ ८ ॥ हर्षतणे था  
 नक तुमे, कां दुख आणो माय ॥ दूख दोहग  
 दुरे गयां, श्रीजिनधर्मपसाय ॥ ९ ॥ निसिही  
 कहिने आवियां, जिणहरमांहे जेण ॥ करतां क  
 था संसारनी, आशातन हुए तेण ॥ १० ॥ ह  
 मणां रहिएछे जिहां, आवो तेह आवास ॥ वात  
 सयल सुणजो तिहां, होशे हिये उल्लास ॥ ११ ॥  
 तिहां आवि बेठां मिली. चारे चतुर सुजाण ॥  
 जे दिन सजन मिलावडो, धन ते दिन सुवि  
 हाण ॥ १२ ॥ मयणाना मुखथी सुणी. सघलो  
 ते अवदात ॥ रूपसुंदरी सुप्रसन थइ, हियमे  
 हर्ष न मात ॥ १३ ॥

ढाल नवमी ॥ अधर मंडित गोरी नागिलारे,  
 एदेशी ॥ वर बहु बेहु सामुमिलीरे, करे वेवाह  
 ण वातरे ॥ कमला रूपाने कहेरे, धन तुम कुल  
 विख्यातरे ॥ जुन आगमगति पुण्यनीरे, पुण्ये  
 वाचित थायरे ॥ सवि दुःख दूर पलायरे, जुन  
 आगमगति पुण्यनीरे ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ बहुए  
 अम कुल ऊधरयुंरे, कीधो अम उपकाररे ॥  
 अमने जिनधर्म बुझव्योरे, उतारयां दुःख पाररे  
 ॥ जु० ॥ २ ॥ सुढ जिम दोरा प्रतेरे, आणे  
 कसीदे ठामरे ॥ तिम बहुए मुज पुत्रनीरे,  
 घणी बधारी मामरे ॥ जु० ॥ ३ ॥ रूपा क  
 हे नाग्ये लह्योरे, अमे जमाइ एहरे ॥ रय  
 ण चिंतामणी सारखोरे, सुंदर तनु ससनेहरे ॥  
 ॥ जु० ॥ ४ ॥ सुणवा अम इठा घणीरे, एहना  
 कुल घर वंशरे ॥ प्रेम तेह प्रकाशीएरे, जिम हं  
 से अम हंसरे ॥ जु० ॥ ५ ॥ कहे कमला रूपां  
 सुणोरे, अम अनौपम देशरे ॥ त्यां चंपानयरी



जलीरे, ज्यां नही पाप प्रवेशरे ॥ जु० ॥ ६ ॥  
 तेह नयरीनो राजियारे, राजा गुण अजिरामरे  
 ॥ सिंहथकी रथ जोडनारे, प्रगट होए तस ना  
 मरे ॥ जु० ॥ ७ ॥ राणी तस कमलप्रनारे, अंगे  
 धरे गुणसेनरे ॥ कोंकणदेश नरिंदनारे, जे सुणी  
 ए लघु बेहेनरे ॥ जु० ॥ ८ ॥ राजा मन चिंता  
 घणीरे, पुत्र नहीं अम कोयरे ॥ राणी पण आरं  
 ती करेरे, निशदिन फुरे दोयरे ॥ जु० ॥ ९ ॥  
 देव देहेरडां मानतारे, इच्छतां पुढतां एकरे ॥ रा  
 णी सुत जनम्यो यथारे, विद्या जाणे विवेकरे ॥  
 ॥ जु० ॥ १० ॥ नगर लोक सवि हरपियारे, घर  
 घर तोरण त्राटरे ॥ आवे घणी वधामणारे, शि  
 णंगारयां घर हाटरे ॥ जु० ॥ ११ ॥ राजा मन  
 उल्लट घणेरे, दान दिए लख कोडीरे ॥ वयरी प  
 ण संतोषियारे, बंधीखाना ढोडीरे ॥ जु० ॥ १२ ॥  
 धवल मंगल दीए सुंदरीरे, वाजे ढोल निसाणरे  
 ॥ नाटक होये नव नवारे, महोत्सव अधिक मंडा

एरें ॥ जु० ॥ १३ ॥ नाति सज्जन सहु नोतरयारें,  
 नोजन पटरस पाकरे ॥ पार नहीं पकवाननोरे,  
 सालि सुरहां घृत शाकरे ॥ जु० ॥ १४ ॥ नुपण  
 वस्त्र पेहेरामणीरे. श्रीफल कुमुम तबोलरे ॥ के  
 शर तिलक करी बाटणारे. चंदन चुआ गंगरो  
 लरे ॥ जु० ॥ १५ ॥ राजरमणी अम पालशेरे.  
 पुण्ये लह्यो ए बालरे ॥ सज्जन चुआ मिली ते  
 हनुरे, नाम ठवे श्रीपालरे ॥ जु० ॥ १६ ॥ रासरुडो  
 श्रीपालनोरे. तेहनी नवमी ढालरे ॥ विनय कहे  
 श्रोता घरेरे, होजो मगल मालरे ॥ जु० ॥ १७ ॥

दोहरा ॥ पाच वरसनो जव थयो, ते कुवर  
 श्रीपाल ॥ तामशुल रोगे करी, पिता पहोच्यो  
 काल ॥ १ ॥ शिरकुटे पीटे हियु, रुवे सकल परि  
 वार ॥ रवामी ते माया तजी, कुण करशे अम  
 सार ॥ २ ॥ गया विदेशे बाहुले. वाला कोइक  
 वार ॥ इण वाटे बोलाविया, नमिले बीजी वार  
 ॥ ३ ॥ हैजे हंसि बोलावता, जे क्लणमां केड

वारा॥नजर न मांफेते सजन, फटे न हियु गिमा  
 र ॥ ४ ॥ नेह न आयो माहरो, पुत्र न था  
 प्यो पाट ॥ एवढि ऊतावल करी, शुं चाल्या  
 इण वाट ॥ ५ ॥ रोती हियडे फाटते, कपला क  
 रे विलाप ॥ मतिसागर मंत्री तिसे, इम सम  
 जावे आप ॥ ६ ॥ हिवे हियडुं काठुं करी, स  
 कल संनाहो काज ॥ पुत्र तुमारी नानडो, रोतां  
 न रहे राज ॥ ७ ॥ कमला कहे मंत्री प्रते, हि  
 वे तुमे आधार ॥ राज देइ श्रीपालने, सफल  
 करो अधिकार ॥ ८ ॥

ढाल दशमी ॥ जगतगुरु हीरजीरे, एदेशी ॥  
 मृतकारज करी रायनुरे, संकल निवारी शो  
 क ॥ मतिसागर मंत्रीश्वरेरे, थिर कीधा स  
 धी लोक ॥ देखो गति दैवनीरे, दैव करे ते हो  
 य ॥ कुणे चाले नहीरे ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥  
 राज ठवी श्रीपालनेरे, वरतावी तस आण ॥ रा  
 ज काज सावि चालवेरे, मंत्री बहु बुद्धिखाण ॥

देखो० ॥ २ ॥ एणे अवसरे श्रीपालनेरे, पित  
 रियो मतिमुढ ॥ परिकर सगलो पालटीरे, गुह्य  
 करे इम गुढ ॥ दे० ॥ ३ ॥ भतिसागरने मा  
 रवारे, बाले हणवा श्रीपाल ॥ राज लेवा चंपा  
 तणुंगे, दुष्ट थयो उजमाल ॥ देखो० ॥ ४ ॥ कि  
 महिक मन्त्रीसर लहीरे, ते बथरीनी वात ॥ राणी  
 ने आवी कहेरे, नागो लेई-रात ॥ दे० ॥ ५ ॥  
 जो जागो तो जीवशेरे, सुत जीवाडणकाज ॥ कु  
 वर जो कुशलो हशेरे, तो बलि करगो राज ॥  
 देखो० ॥ ६ ॥ गणी नाठी एकलीरे, पुत्र चना  
 वी केड ॥ ऊवट ऊजाडे पडीरें, विपमी जिहा  
 वे वेम ॥ देखो० ॥ ७ ॥ जास जमोजड जां  
 खरागे, खाखर चाखर-खोह ॥ फाणिधर माणि  
 धर जिहां फिगेरे, अजगर उदर गोह ॥ दे  
 खो० ॥ ८ ॥ ऊजड अवला रडवडेरे, रसणी  
 घोर अंगार ॥ चरणे खुंचे कांकगरे, ऊगे लो  
 हीनां धार ॥ देखो० ॥ ९ ॥ वरू घने

डारे, सोर करे शीयाल ॥ चोर चरडने चीतरां  
 रे, दीए ऊबलता फाल ॥ देखो० ॥ १० ॥ घुघु  
 घु घुअड करेरे, वानर पाडे हीक ॥ खलहल प  
 रवतथी पडेरे, नदीनी ऊरणा नीक ॥ देखो० ॥  
 ॥ ११ ॥ वलियुं वेउनुं आउखुंरे, सत्य शीयल  
 संघात ॥ वखत बली कुंवर बडांर, तेणे न करे  
 कोइ घात ॥ देखो ० ॥ १२ ॥ रयणहिंडोले हिं  
 चतीरे, सुती सोवन खाट ॥ तस शिर आ वे  
 ला पडीरे, पडो दैवशिर दाट ॥ देखो० ॥ १३ ॥  
 रडवरडतां रयणी गइरे, चडी पंथशिर शुद्ध ॥ त  
 व बालक जुखो थयोरे, मागे साकर दुव ॥ देखो०  
 ॥ १४ ॥ तव रोती राणी कहेरे, दुध रह्यां व  
 त्म दुर ॥ जो लहीए हिवे कुशकारे, तो लह्यांकु  
 र कपुर ॥ देखो० ॥ १५ ॥ हिवे जातां मार्गे  
 मिलिरे, एक कुठानी फोज ॥ रोगी मिलिया सा  
 तशेरे, हिंडे करता मोज ॥ देखो० ॥ १६ ॥ क  
 ठीए पुढ्या पढीरे, सयल गुणावी यात ॥ वल

तं कुटी डम कहरे, आगति म करो मांत ॥ दे  
 खो० ॥ १७ ॥ आवी अमशरणे रहारे, मन रा  
 खो आमारा ॥ ए कोइ अम जीवतारे, कोइ  
 न ले तुम नाम ॥ देखो० ॥ १८ ॥ बेसर आ  
 प्यु बेसवारे, ढाकी सघलुं अंग ॥ बालक रा  
 खी सोडमारे, बेठी थई खमंग ॥ दे० ॥ १९ ॥  
 एहवे आव्या सोधतारे, वयगीना असवारे ॥  
 काइ स्त्री दीठी अहियारे, पुढे वारोवार ॥ दे०  
 ॥ २० ॥ कोइ इहां आव्युं नयीरे, जुठम जंखा  
 आल ॥ वचन न मानो अमतणारे, नयणे जुन  
 निहाल ॥ देखो० ॥ २१ ॥ जो जोशो तो ला  
 गशेर, अंगे रोग असाध ॥ नाठा बीहता बाप  
 डारे, बलगे रखे विराध ॥ दे० ॥ २२ ॥ कुटी  
 संगतथी थयारे सुतने ऊवर रोग ॥ मामी म  
 न चिंता घणीरे, कठिन करमना जोग ॥ दे० ॥  
 ॥ २३ ॥ पुत्र जलावी तेहमेरे, माता चलिय वि  
 देश ॥ वैद्य उपध जोवा जणीरे, सहेंती घणा क

लेश ॥ दे० ॥ २४ ॥ ज्ञानीने वचने करीरे, सय  
 ल फली मुज आश ॥ तेहज हुं कमलाप्रचारे  
 आ बेठी तुम पास ॥ दे० ॥ २५ ॥ रास रुमो  
 श्रीपालनोरे, तेहनी दशमी ढाल ॥ विनय कहे  
 पुण्ये करीरे, दुख थाये विसराल ॥ दे० ॥ २६ ॥  
 दोहरा ॥ रूपसुंदरी श्रवणसुणी, विमल ज  
 माइ वंश ॥ हर्षे हियडे गहगही, एणिपरे करे  
 प्रसंस ॥ १ ॥ वखतवंत मयणा समी, नारी  
 नको संसार ॥ जिणे बेऊ कुल उद्दग्यां, सती  
 शिरोमणि सार ॥ २ ॥ वर पण पुण्ये पावियो,  
 नरपति निर्मल वंश ॥ पुत्र सिंहरथरायनो. क  
 त्रियकुल अवंतम ॥ ३ ॥ रूपसुंदरी रंग जई,  
 वात सुणावी सोय ॥ निजबंधव पुण्यपालने,  
 ते पण हर्षित होय ॥ ४ ॥ चतुरंगी सेना सजी.  
 साथ सबल परिवार ॥ तेजी तुरिय नचावता,  
 अवल वेप असवार ॥ ५ ॥ रत्नजडित ऊलके  
 घणा, धरया सुरिया पान ॥ ढोल नगारां गड

गडे, नेजा फुरे निशान ॥ ६ ॥ जाणेजी वर  
ज्या वसे, त्या आव्या ततकाल ॥ निजमंदिर  
पधराववा. पुण्यवंत पुण्यपाल ॥ ७ ॥

ढाल इगीयारमी ॥ राय कहे राणीप्रते, ए  
देगी ॥ आवो जमाइ प्राहुणा, जयवंताजी ॥  
अमघर करो पवित्ररे, गुणवंताजी ॥ सहुने अ  
चरज ऊपजे, जयवंताजी ॥ सुणता तुम चरित्त  
रे, गुणवंताजी ॥ १ ॥ गज वेसारी जुत्सवे ॥  
॥ जय० ॥ पधराव्या निजगेहरे ॥ गुण० ॥ मा  
उलसुसरो पुरवे ॥ ज० ॥ जोग जला धरी ने  
हरे ॥ गुण० ॥ २ ॥ एकदिन वेठा मालीए ॥  
जय० ॥ मयणाने श्रीपालरे ॥ गु० ॥ वाजे ठंदे  
नव नवे ॥ ज० ॥ मांरुल जुंगल तालरे ॥ गु०  
॥ ३ ॥ राय राणी रंगे जुए ॥ ज० ॥ थइ थइ  
ताचे पात्ररे ॥ गु० ॥ नरह नेद जावे जला ॥  
जय० ॥ वाले परिपरि गात्ररे ॥ गुण० ॥ ४ ॥  
इणे अवसरे रयवामीथी ॥ जय० ॥ पाठो वलि



यो रायरे ॥ गुण० ॥ नृत्य सुणी उन्नो रह्यो ॥  
 ॥ ज० ॥ प्रजापाल तिणे ठायरे ॥ गु० ॥ ५ ॥  
 सुख जोगवतां स्वर्गनां ॥ जय० ॥ दीठां स्त्री  
 नरताररे ॥ गुण० ॥ नयणे लाग्यो निरखवा ॥  
 जय० ॥ चित चमक्यो तिणी वाररे ॥ गुण० ॥  
 ॥ ६ ॥ तत्क्षण मयणा उलखी ॥ ज० ॥ मन  
 उयन्यो संतापरे ॥ गु० ॥ अवर कोइ वर पेखी  
 उ ॥ ज० ॥ है है प्रगट्युं पापरे ॥ गुण० ॥ ७ ॥  
 धिगं धिग क्रोधतणे वशे ॥ जय० ॥ में अवि  
 चार्युं कीधरे ॥ गुण० ॥ मयणा सरखी सुंदरी  
 ॥ ज० ॥ कोढीने कर दीधरे ॥ गुण० ॥ ए पण  
 हुइ कुलखंपणी ॥ ज० ॥ मुज कुल नरियो वा  
 ररे ॥ गुण० ॥ परण्यो प्रीतम परहरी ॥ ज० ॥  
 अवर कियो नरताररे ॥ गुण० ॥ ९ ॥ एणिपरे  
 उन्नो ऊरतो ॥ जय० ॥ जव दीठा ते रायरे ॥  
 ॥ गुण० ॥ पुण्यपाल अवसर लही ॥ जय० ॥  
 आवी प्रणमे पाथरे ॥ गु० ॥ १० ॥ राज प

धारो मुज घरे ॥ जय० ॥ जुठ जमाइ रूपरे ॥  
 ॥ गु० ॥ सिद्धचक्रसेवा फली ॥ जय० ॥ ते क  
 ह्युं सकल स्वरूपरे ॥ गुण० ॥ ११ ॥ राये आ  
 वां वलरुया ॥ ज० ॥ मुख इगित आकाररे ॥  
 ॥ गु० ॥ मन चिंते महिमा निलो ॥ ज० ॥ जै  
 नधर्म जगसाररे ॥ गु० ॥ १२ ॥ मयणा तें सा  
 ची कही ॥ जय० ॥ सजामांहे सवि वातरे ॥  
 गु० ॥ में आज्ञानपणे कह्युं ॥ ज० ॥ ते सघलुं  
 मिथ्यातरे ॥ गु० ॥ १३ ॥ में तुज दुःख देवा न  
 णी ॥ ज० ॥ कीधो एह उपायरे ॥ गु० ॥ दुः  
 ख टलीने सुख थेंयुं ॥ ज० ॥ ते तुज पुण्यपसा  
 यरे ॥ गु० ॥ १४ ॥ मयणा कहे सुणो तातर्जा ॥  
 जय० ॥ इहा नही तुम वाकरे ॥ गुण० ॥ जीव  
 सयल वश कर्मने ॥ ज० ॥ कुण राजा कुण रां  
 करे ॥ गु० ॥ १५ ॥ मान तजी मयणातणी ॥  
 जय० ॥ राये मनावी मायरे ॥ गुण० ॥ सज्जन  
 थया सवी एकमना ॥ ज० ॥ उलट अंगन मा

घरे ॥ गु० ॥ १६ ॥ नयर सयल शिगगागियु  
 ॥ जय० ॥ चौटां चोक विशालरे ॥ गु० ॥ घर  
 घर गुडी उडले ॥ ज० ॥ तोरण जाकजमालरे  
 ॥ गु० ॥ १७ ॥ घरे जमाइ महोत्सवे ॥ ज० ॥  
 तेडी आव्या रायरे ॥ गु० ॥ संपुरण सुख जो  
 गवे ॥ ज० ॥ सिद्धचक्र सुपसायरे ॥ गुण० ॥  
 ॥ १८ ॥ नयरीमांहे प्रगट थई ॥ जय० ॥ मुख  
 मुख एहिज वातरे ॥ गु० ॥ जिनशासननति  
 थई ॥ जय० ॥ मयणाए राखो रूयातरे ॥ गु०  
 ॥ १९ ॥ रास रूडो श्रीपालनो ॥ ज० ॥ तेह  
 नी इग्यारमी ढालरे ॥ गु० ॥ विनय कहे सिद्धच  
 क्रनी ॥ गु० ॥ सेवा फले ततकालरे ॥ जय० ॥  
 ॥ २० ॥ चोपाइ ॥ खंड खंरु मीठो जिम खंरु,  
 श्री श्रीपाल चरित्र अखंड ॥ श्री कीर्ति विजय वा  
 चकथी लह्यो. प्रथम खंड इम विनये कह्यो ॥ १ ॥  
 इति श्रीमन्नहोपाध्याय श्रीकीर्तिविजयगणि शि  
 प्योपाध्याय श्रीविनय विजयगणि विरचिते श्री

श्रीपालचरित्रे प्राकृतप्रबंधे मयणामुंदरीपाणि य  
 इणे श्रीसिद्धचक्राराधनात निरोगत्वप्राप्ति श्री  
 कमलप्रजामिलन स्वव्यतिकरकथनेत्यादि वर्ण  
 नो नाम प्रथम खंड समाप्तः ॥

॥ अथ द्वितीय खंड प्रारंभः ॥

दोहरा ॥ सिद्धचक्र आराधता, पुगे धंढित को  
 ड ॥ सिद्धचक्र मुज मन वस्युं, विनय कहे कर  
 जोड ॥ १ ॥ सारद सार दया करी, दीजे वच  
 न विलास ॥ उत्तर कथा श्रीपालनी, कहेवा म  
 न उल्लास ॥ २ ॥ एक दिन रमवा निकल्यो,  
 चौटे कुवर श्रीपाल ॥ सबल सैन्यमं परवरयो,  
 यौवन रूपरसाल ॥ ३ ॥ मुख सोहे पुरण श  
 शी, अधे चंद्रसम जाल ॥ लोचन अमिय कचो  
 लमां ॥ अधर अरुण परवाल ॥ ४ ॥ दंत जि  
 सा दाडम कली, कंठ मनोहर धंवु ॥ पुर कमा  
 रु परि ऋदय तट, जज नौंगल जिम लवु ॥  
 ॥ ५ ॥ केडलंक केसरि समो, यौवन वान शरि

र ॥ फुल खरे मुख बोलतां, ध्वनी जलधरगंजीर  
 ॥ ६ ॥ चौक चौक चौटेमिल्या, रूपे मोह्या लोक ॥  
 हेमल गोख मेढी चडे, नर नारीना थोक ॥ ७ ॥  
 मुग्धा पुढे मायने, मा ए कुण अनिराम ॥ इंद्र  
 चंद्रके चक्रवे, श्याम रामके काम ॥ ८ ॥ माय  
 वहे मोटे स्वरे, अवर म ऊंखो आल ॥ जाये ज  
 माई रायनो, रमवा कुंवर श्रीपाल ॥ ९ ॥ वच  
 न सुणी श्रीपाल ते, चितमां लागी चौक ॥ धि  
 ग सुसरा नामे करी, मुज ओलखावे लोक ॥  
 ॥ १० ॥ उत्तम आपगुणे कह्या, मज्जिम बाप  
 गुणेण ॥ अधम सुण्या माउल गुणे, अधमा  
 धम सुसरेण ॥ ११ ॥

ढाल पहेली ॥ चतुर सनेही मोहना, एदेशी  
 ॥ क्रीडा करी घरे आवियो, चपल चित्त श्रीपा  
 लोरे ॥ इच्छक मन देखी करी, बोलावे पुण्यपा  
 लोरे ॥ क्रीडा ० ॥ १ ॥ राज कीणे आज रीश  
 व्या, कीणे लोपी तुम आणरे ॥ दीसो कांड दु

मणा, तुम चरणे अम प्राणरे ॥ क्रीडा० ॥ २ ॥  
 चित्त चाहोतो आपणुं, लीजे चंपाराजरे ॥ च-  
 ढ्यो प्रयाणे चालीए, सबल सैन्य लइ साजरो ॥  
 क्रीडा० ॥ ३ ॥ कुंवर कहे सुसरातणे, बले न  
 लीजे राजरे ॥ आपपराक्रम जिहां नहीं, ते आवे  
 कुण वाजरे ॥ क्रीडा० ॥ ४ ॥ तेहजणी, अमे  
 चालशुं, जोशु देश विदेशरे ॥ जुजावले लखमीं  
 लही, करशुं सकल विशेषरे ॥ क्रीडा० ॥ ५ ॥  
 माय सुण आवी कहे, हुं आवीश तुम साथरे ॥  
 घडीय न धीरुं एकलो, तुहिज एक मुज आथरे  
 ॥ क्रीडा० ॥ ६ ॥ कुअर कहे परदेशमां, पगबं  
 धन न खटायरे ॥ तिणे कारण तुमे इहा रहो,  
 द्यो आशीश पसायारे ॥ क्रीडा० ॥ ७ ॥ माय  
 कहे कुशला रहो, उत्तम काम करेजोरे ॥ जुजवले  
 वयरी वश करी, दरिगण वहेलु देजोरे ॥ क्री० ॥  
 ॥ ८ ॥ संकट कष्ट आवी पडे, करजो नवपद  
 ध्यानरे ॥ रयणीए रहेजो जागता, सर्व समय

सावधानरे ॥ क्री० ॥ ९ ॥ अधिष्टायक सिद्धच  
 क्रना, जेह कहांठ ग्रंथेरे ॥ ते सवी देविदेवता, य  
 तन करो तुम पंथेरे ॥ क्री० ॥ १० ॥ इम शि  
 खामण देइ घणी, माता तिलक वचावेरे ॥ शब्द  
 शुक्न होए जला. विजय मुहुरत आवेरे ॥ क्री  
 मा० ॥ ११ ॥ रास रच्यो श्रीपालनो, तेहने बी  
 जे खंमेरे ॥ प्रथम ढाल विनये कही, धर्म उद  
 यथिति मंडेरे ॥ क्रीडा० ॥ १२ ॥

दोहैरा ॥ हिवे मयणा इम वीनवे, तुमसुं अ  
 विहरु नेह ॥ अलगी कृण एक नवीरहुं. ज्यां  
 बायां त्यां देह ॥ १ ॥ अग्नि सहेतां सोहिलो,  
 विरह दोहिलो होय ॥ कंतविगोही कामिनी, ज  
 लण जलंती जोय ॥ २ ॥ कहे कुंअर सुंदरि सु  
 णो, तुं सासुपयसेव ॥ काज करी ऊतावलो, हुं  
 आहुं तुं हेव ॥ ३ ॥ मन पाखे मयणा कहे, पि  
 यु तुम वचन प्रमाण ॥ ठे पंजर शुनु पड्युं, तु  
 म साथे मुज प्राण ॥ ४ ॥

ढाल बीजी ॥ कोस्या ते ऊनी आंगणे. ए  
 देशी ॥ वालम वेहेलारे आवजो, करजो माहेरि  
 साररे ॥ रखेरे विसारी मुक्ता. लही नव नवी  
 नाररे ॥ वा० ॥ १ ॥ आजथी करीश एकासणा,  
 करयो सचिन परिहाररे ॥ केवल जुमि संथारशुं,  
 तज्यां स्नान शिणगाररे ॥ वा० ॥ २ ॥ तेदिन  
 वलि कदी आवशे, जिहां देखीश पियुपायरे ॥  
 विग्रहनी वेदना वारशुं. सिद्धचक्र सुपसायरे ॥  
 ॥ वा० ॥ ३ ॥ सज्जन वलावी सहु इणिपरे, लेइ  
 ढाल कृषाणरे ॥ चंद्रनामी स्वर पेसते. कुंअरे  
 कीध प्रयाणरे ॥ वा० ॥ ४ ॥ देश पुर नगरना  
 नवनवा, जोतोकौतुक रंगरे ॥ एकला सिंहपरे  
 ह्यालतो, चढयो एक गिरिशृंगरे ॥ वा० ॥ ५ ॥  
 सरस शीतल वन गहनमा. जिहां चंपकतरु वा  
 हरे ॥ जाप जपंतो नरपेखीत, करीतुर्ध्व निज बां  
 हरे ॥ वा० ॥ ६ ॥ जाप पुरो करी पुरुष ते वो  
 ल्यो करी परणामरे ॥ सुपुरुष



सरयुं माहरुं कामरे ॥ वा० ॥ ७ ॥ कुंवर कहे  
 मुज सारिखुं, कहो जेह तुम काजरे ॥ घणे आ  
 गे उपगारन, दीधां देह धन राजरे ॥ वा० ॥  
 ॥ ८ ॥ तेह कहे गुरुकृपा घणी, विद्या एक मु  
 ज दीधरे ॥ घणा उद्यम करयो साधवा, पण  
 काज नहीं सिद्धरे ॥ वा० ॥ ९ ॥ उत्तरसाधक न  
 र विना, मन रहे नहीं ठामरे ॥ तिणे तुम एक  
 करुं वीनती. अपवारिए स्वामरे ॥ वा० ॥ १० ॥  
 कुंअर कहे साध्य विद्या मुखे, मन करी थिर  
 थोन्नरे ॥ उत्तरसाधक मुजथकां, करे कोण तुज  
 खोन्नरे ॥ वा० ॥ ११ ॥ कुंवरना सहायथी तत  
 खिणे, विद्या थइ तस सिद्धरे ॥ उत्तम पुरुष जे  
 आदरे, तिहां होए नवनिधरे ॥ वा० ॥ १२ ॥  
 कुंअरने तिणे विद्याधरे, दीधी औषधी दोयरे ॥  
 एक जलतरणी अवरथी, लागे शस्त्र नहीं को  
 यरे ॥ वा० ॥ १३ ॥ कुंअर विद्याधर दोयज  
 णा, चालथा परवतमांयरे ॥ धातुरवादी रस सा

धता, दीठा तिहा तरुणायरे ॥ वा० ॥ १४ ॥ ते  
 ह विद्याधरने कहे. तुमे बिधि कह्यो जेहरे ॥ ते  
 णे विधि खप अमे बहु करयो, न पामे सिद्धि  
 एहरे ॥ वा० ॥ १५ ॥ कुंअर कहे मुज देखतां  
 वली एह करो विद्धरे ॥ कुंअरनी नजर महि  
 माथकी, ते थइ ततखिण सिद्धरे ॥ वा० ॥ १६ ॥  
 धातुर्वादी कहे नीपन्युं ॥ कनक तुम परजावेरे, एह  
 माथी प्रजु लीजीए ॥ तुमह जे मन जावेरे ॥ वा० ॥  
 ॥ १७ ॥ कुंअर कहे मुज खप नही, कुण ऊ  
 चाले नाररे ॥ अल्प तेणे अंचले वावियु, करी  
 घणी मनुहाररे ॥ वा० ॥ १८ ॥ अनुक्रमे कुंअर आ  
 वियो, जरुअचनयरमजाररे ॥ हेम खरची सजा  
 इ करी, जलां वस्त्र हथीयाररे ॥ वा० ॥ १९ ॥  
 सोवन मढीय ते औपधी, वाधी दोय निज बा  
 हरे ॥ बहुविध कौतुक देखतो, फिरे जरुअचमा  
 हरे ॥ वा० ॥ २० ॥ खड बीजो एह रासनो,  
 बीजी एह तस ढालरे ॥ विनय कहे धर्मथी सु

ख हुवे, जिम राय श्रीपालरे ॥ वा० ॥ २१ ॥

दोहरा ॥ कोसंबीनयरी वसे, धवलशेठ धनवं  
त ॥ लोक अनर्गल धनजणी, नाम कुबेर कहंत  
॥ १ ॥ सकट उंट गाडां नरी, किरीयाणां बहु  
जोडि ॥ ते नरुअचे आवियो, लाज लहे लख  
कोमि ॥ २ ॥ वस्तु सकल वेची तिणे, अवर  
वस्तु बहु लीध ॥ जलवट प्रवहण पुरवा, सब  
ल सजाई कीध ॥ ३ ॥ एक जुंग वहाण कियुं,  
कुआ थंन ज्यां शठ ॥ कुआ थंन सोलेसहित,  
अवर जुंग अडसठ ॥ ४ ॥ वड सफरी वहाण घ  
णां, बेडा वेगड द्रोण ॥ शिल्प खुर्प आवर्त इ  
म, नेद गणे तस कोण ॥ ५ ॥ एणिपरी प्रवह  
ण पांचसैं, पुरधां वस्तु विशेष ॥ बंदरमांहे आ  
णिया, पामी नृपआदेश ॥ ६ ॥ मालिम पट पु  
स्तक जुए, सुखाणी सुखाण ॥ द्रु अधिकारी द्रु  
अतणी, नरे दोरि नीसाण ॥ ७ ॥ करे कराणी  
साचवण, नाखदा ले न्याय ॥ वायु परखे पंज

री, नेजामां निज दाव ॥ ८॥ खरीमसागानि खा  
 रुआ, सज्ज करे सद दोर ॥ हलक हलेमा हा  
 लवे, बहु बेठा चिहु कोर ॥ ९ ॥ पंचवर्ण ध्वज  
 बावटा, शिर करे चामर बत्र ॥ वहाण सविशि  
 णगारियां, मांहे विविध वाजित्र ॥ १० ॥ सात  
 जुमि वहाणतणी, निवड नालिनी, पांत ॥ वय  
 रीनां वहाणतणी, करे खोखरी खात ॥ ११ ॥  
 सुनट सनुरा सहसदश, वडा वडा जुजार ॥ वे  
 ठा चिहुदिशि मोरचे, हाथ विविध हथियार ॥  
 ॥ १२ ॥ इंधण जल संवल ग्रही, बहु व्यापारी  
 लोक ॥ सोहे वेठा गोखले, नूर दिए धन रोक  
 ॥ १३ ॥ हिवे नांगर उपारुवा, वडा जुंगनी जा  
 म ॥ नाल धडुकी नाल सनि, हुई घमोघाडि ता  
 म ॥ १४ ॥ सवि वहाणना नांगरी, करे खरा  
 खर जोर ॥ पिण नागर हाले नही, सबल म  
 च्यो तव सोर ॥ १५ ॥ धवल शेठ जाखो थ  
 यो, चिता चित्त न माय ॥ शीकोतर पुठण ग

यो. हिवे किम करवुं माय ॥ १६ ॥ शीकोतर  
 केहे शेठ सुण, वहाण थंज्यां देव ॥ ठांडे बत्रि  
 श लक्षणां, पुरुषतणो बलि लेव ॥ १७ ॥

ढाल ब्रीजी ॥ श्रेणिक मन इचरज थ  
 यो एदेशी ॥ धवल शेठ लेइ नेटणुं, आ  
 व्यो नरपति पायरे ॥ कहे एक नर मुजने  
 दियो. जेम बलिबाकुल थायरे ॥ धव० ॥ १ ॥  
 राय कहे नर ते दियो. सगो नहीं जस को  
 यरे ॥ बलि करजो ग्रही तेहनो, जे परदेशी  
 होयरे ॥ धवल शे० ॥ २ ॥ शेवक चिहुं दिशि  
 शेठना, फिरे नयरमा जोतारे ॥ कुंअर दे  
 खी शेठने, वात कहे समहोतारे ॥ धव० ॥ ३ ॥  
 दीठो बत्रीशलक्षणां, पुरुष एक परदेशीरे ॥  
 कहो तो जाली आणीए, शुद्ध नको तस लेशीरे  
 ॥ धव० ॥ ४ ॥ धवल कह आणो इहां, म क  
 रो घडिय विलंबरे ॥ बलि देईने चालिए, बहार  
 नहिं तस बुंबरे ॥ धव० ॥ ५ ॥ सुनट सहस

दश सामटा, आवे कुञ्जर पासेरे ॥ अजिमाती  
 उद्धतपणे, कडवा कथन प्रकाशेरे ॥ ध० ॥ ६॥  
 ऊठ आव्यु तुज आउष, धवलधिग तुजरुठयो  
 रे ॥ बलि करशु तुजने हणी, म कर मान मन  
 जुठारे ॥ धव० ॥ ७ ॥ बलि नवि थाये सिंहनो,  
 मुरख हिये विमासोरे ॥ धवलपशुनो बलि थशे,  
 वचने काई वारासोरे ॥ ध० ॥ ८ ॥ वचनसुणी  
 तस वांकसां, शेठने सुनट मुणावेरे ॥ शेठ विन  
 वी रायने, बहोलु कटक आणावेरे ॥ ध० ॥ ९॥  
 एकलडो दोय सैन्यसु, जव आतुली बल कुजेरे ॥  
 चौटावञ्चे धुंखल मच्यो, कायर हियडुं धुजेरे ॥  
 ॥ धव० ॥ १० ॥ कुत तीर तरवारना, जे जे घा  
 ले घायरे ॥ कुंजर अंगे लागे नही, औपधीने  
 महिमायरे ॥ ध० ॥ ११ ॥ जेसापरेरणखेतमां,  
 चिहं दिशिं धिगड धायरे ॥ ऊडया जोद्ध वेला  
 जिस्स्या, शिगे वलग्या जायरे ॥ धव० ॥ १२ ॥  
 कुंजर ताकी जेहने, मारे लाठी लोढेरे ॥ लहबह

तो लांवा थई. ते पुहवीए पोढेरे ॥ धव० ॥ १३ ॥  
 मस्तक फूटयां केइनां, पमया केइना दांतरे ॥ केइ  
 मुखे लोही वमे, पढी सुनटनी पांतरे ॥ धव० ॥  
 ॥ १४ ॥ केइ पेठा हाठमां, केइ पोलमां पेठारे ॥ केइ  
 दांते तरणां दई. गलिया थइने वेठारे ॥ ध० ॥ १५ ॥  
 केइ कहे कायर अमे, केइ कहे अमे रांकरे ॥ के  
 इ कहे मारो रखे, नथी अमारो वांकरे ॥ धव०  
 ॥ १६ ॥ केइ कहे पेटारथी. अशरण अमे अनाथरे ॥  
 मुखे दिए दश अंगुली, ये वली आमा हाथरे ॥  
 ॥ ध० ॥ १७ ॥ धवलशेठ ते देवतां, आवी ला  
 ग्यो पायरे ॥ देवसरूपी दिसो तुमे, करो अमने  
 सुपसायरे ॥ ध० ॥ १८ ॥ महिमानिधि मोठा  
 तुमे, तुम बल शक्ति अगाधरे ॥ अविनय कीध  
 अजाणतां, ते खमजो अपराधरे ॥ धव० ॥ १९ ॥  
 अवधारो अम वीनती. करो एक उपगाररे ॥  
 थंज्यां बहाण तारवो, उतारो दुःख पाररे ॥ ध  
 व० ॥ २० ॥ कुंअर कहे ए कामनुं, शुं देशो

मुज जाडुरे ॥ ओठ कहे लख मानैया, खुत्तुं का  
ढो गाडुरे ॥ धव० ॥ २१ ॥ सिद्धचक्र चित्तमां  
धरी, नवपद जाप न चुकेरे ॥ वड वहाण ऊ  
पर चढी, सिंहनाद ते मुकेरे ॥ धव० ॥ २२ ॥  
जे देवी दुस्मन हती, दुष्ट गई ते दुररे ॥ वहा  
ण तग्या कारजसरथा, वाजेमंगल-तुररे ॥ ध०  
॥ २३ ॥ बीजे खडे ढाल ए, श्रीजी-चित्तमां  
धरजोरे ॥ विनयकहे वहाण परे, नवियण नव  
जल तरजोरे ॥ धव० ॥ २४ ॥

दोहरा ॥ ते देखी चिते धवल, चडयो चित्ता  
मणि हाथ ॥ वडो वखत जो मुज हुए, तो ए आवे  
साथ ॥ १ ॥ एक लाख दीनार तस, देइ ला  
ग्यो पाय ॥ करजोमीने वीनवे, वात सुणो एक  
जाय ॥ २ ॥ वरसप्रते-एकेकने, सहस देजं दी  
नार ॥ सेवा सारे सहसदश, जोद्ध जला जुंजार  
॥ ३ ॥ तुमने मुह माग्युं देजं, आवो अमारि  
साथ ॥ ए अवधारो वीनती, अमने करो सना



थ ॥ ४ ॥ कुंअर कहे हुं एकलो, लेनं सर्वनुं मो  
 ल ॥ ए सर्वनुं हुं एकलो. कारज करुं अमोल  
 ॥ ५ ॥ ते धननुं लेखुं करी, शेठ कहे करजोड ॥  
 अमेवणिकजन एकने. किम देवाए कोरु ॥ ६ ॥  
 कुंअर कहे शेवक थई, दाम न ऊलुं हाथ ॥ पि  
 ण देशांतर देखवा, हुं आवुं तुम साथ ॥ ७ ॥  
 जाडु लेइ वहाणमां. द्यो मुज बेसण ठाम ॥ मा  
 स प्रते दीनार शत. जाडुं परठ्युं ताम ॥ ८ ॥  
 ढाल चौथी ॥ राग मल्हार ॥ जीहो जोयुं  
 अवधि प्रयुं जीने, एदेशी ॥ जीहो कुंअर बेठा  
 गोखडे, जीहो महोटा वहाणमांय ॥ जीहो चिहु  
 दिशि जलधि तरंगना, जीहो जोवे कौतुक त्या  
 य ॥ सुगण नर पेखो पुण्य प्रजाव ॥ ए आंकणी  
 ॥ जीहो पुण्ये मनवांछितमिले, जीहो दुर टले  
 दुख दाव ॥ जीहो सढ हंकारया सामटा, जी  
 हो पुरया घण पवणेण ॥ जीहो वड वेगे वहाण  
 वहे, जीहो जोयण जाये खणेणे ॥ सुगण० ॥

॥ २ ॥ जीहो जलहस्ति पर्वत जिस्सा, जीहो  
जलमा करे कल्लोल ॥ जीहो माहोमाहे ऊरुता,  
जीहो उवाले कल्लोल ॥ सु० ॥ ३ ॥ जीहो मग  
रमठ महोटा फिरे, जीहो मुमुवार केड कोमी ॥  
जीहो नक्र चक्र दोमे घणा, जीहो करतां दोडा  
दोमी ॥ सु० ॥ ४ ॥ जीहां इम जाता कहे पंजरी.  
जीहो आज पवन अनुकुल ॥ जीहो जल इंध  
ण जो जोडए, जीहो आव्य बव्वरकुल ॥ सु०  
॥ ५ ॥ जीहो तम बंदरमाहे ऊतरी. जीहो जल  
इंधण लेड लोक ॥ जीहो धवलशेठ काटे रह्या,  
जीहो साथे मुनटना थोक ॥ सु० ॥ ६ ॥ जी  
हो कोलाहल ते मानली, जीहो आव्या अति  
अ पगण ॥ जीहो दाणी बठवरगायना, जीहो  
भाग बंदर दाण ॥ सु० ॥ ७ ॥ जीहो शेट मुन  
टने गोरंघ, जीहो दाण न दीए अबुक्र ॥ जीहां  
तव निहा लाग्युं तेहने, जीहो माहोमाहे ऊरु ॥  
॥ सु० ॥ ८ ॥ जीहो शेटनणे मुनटे हण्या,

जीहो दाणी नाठा जाय ॥ जीहो सैन्य सबल  
 तव सज करी, जीहो आव्यो बब्वरराय ॥ सु०  
 ॥ ९ ॥ जीहो राज तेज न शक्या सही, जीहो  
 दीधी सुनटे पुठ ॥ जीहो मार पड्यो तव नाश  
 तां. जीहो बाण जरी जरी मुठ ॥ सु० ॥ १० ॥  
 जीहो बांध्यो जाली जवितो. जीहो रुख सरीखो  
 शेठ ॥ जीहो बांह बेउ ऊंची करी, जीहो मस्त  
 क कीधुं हेठ ॥ सु० ॥ ११ ॥ जीहो रखवाला  
 मुकी तिहां, जीहो पावो बलियो राय ॥ जीहो  
 तव बोलावे शेठने. जीहो कुंअर करी सुपसाय  
 ॥ सु० ॥ १२ ॥ जीहो सुनट सवे तुम किहां  
 गया, जीहो बांध्या बाह मरोऊ ॥ जीहो एवडुं  
 दुःख न देखता, जीहो जो देता मुज कोड ॥  
 सु० ॥ १३ ॥ जीहो शेठ कहे तुम कां दियो,  
 जीहो दाध्या ऊपर लुण ॥ जीहो पड्या पवे  
 पाटु कसी, जीहो हणे मुआने कुण ॥ सु० ॥  
 ॥ १४ ॥ जीहो कहे कुंअर वथरी ग्रहं, जीहो जो

गलं ए वित्त ॥ जीहो तो मुजने देशो किशुं,  
 जीहो नाखो थिर करी चित्त ॥ सु० ॥ १५ ॥  
 जीहो शेठ कहे सुण साहिवा, जीहो ए मुज कार  
 ज साध ॥ जीहो वहेची वहाण पाचशे. जीहो  
 देइशुं आधोआध ॥ सु० ॥ १६ ॥ जीहो वो  
 ल बंध साखीतणो, जीहो कुंअरे पाढी तंत ॥  
 जीहो धनुष तीर तरकस ग्रही, जीहो चाल्यो  
 तेज अनंत ॥ सु० ॥ १७ ॥ जीहो जइ बठार  
 बोलावियो, जीहो बल पागे बडवीर ॥ जीहो  
 शस्त्र शत जुजबलनणो, जीहो नाद उतारुं नीर  
 ॥ सु० ॥ १८ ॥ जीहो तुज सरखो ने प्राहुणो. जीहो  
 पहाँच्यो अम घर आय ॥ जीहो सुखडली मु  
 ज हाथनी, जीहो चाख्या विण किम जाय ॥  
 ॥ सु० ॥ १९ ॥ जीहो माहाकाल जुए फिरी.  
 जीहो दीठो एक जुवान ॥ जीहो जाजानी परे  
 ऊंऊतो, जीहो लक्षण रूप निधान ॥ सु० ॥  
 ॥ २० ॥ जीहो तु सुंदर सोहामणो. जीहो दीसे

यौवन वेश ॥ जीहो विणखुटे मग्वा जणी, जी  
 हा कांड कर उदेश ॥ सु० ॥ २१ ॥ जीहो कुअ  
 र वहे संग्राममां, जीहो वचने कशो व्यापार ॥  
 जीहो जोखेजोख मिल्या जिहां, जीहो तिहां श  
 खे व्यवहार ॥ सु० ॥ २२ ॥ जीहो माहाकाल  
 कोप्यो तिहां, जीहो हलकारे निज सेन ॥ जी  
 हो मुके शस्त्र ऊडोऊडे, जीहो राता रोप० रसेन  
 ॥ सु० ॥ २३ ॥ जीहो बुठया तीखा तीरना, जी  
 हो गोलाना केइ लाख ॥ जीहो पिण अंगे कुं  
 अर तणे, जीहो लागी नहीं सगाव ॥ सु० ॥  
 ॥ २४ ॥ जीहो आकर्षी जेजे दिसे, जीहो कुं  
 अर नाखे बाण ॥ जीहो सम काले दश विश  
 ना, जीहो तिहां ठंमावे प्राण ॥ सु० ॥ २५ ॥  
 जीहो सैन्य सबल माहाकालनुं, जीहो जागी गयुं  
 दहवट्ट ॥ जीहो नृप-एकाकी कुंअरे, जीहो बां  
 ध्यो बंधन घट्ट ॥ सु० ॥ २६ ॥ जीहो बांधीने  
 निज साथमां, जीहो पासे आयो जाम ॥ जीहो

बंधन बोम्ब्यां शेठना, - जीहो रक्कक नाठा ताम  
 ॥ सु० ॥ २७ ॥ जीहो खड्डु लेइ माहाकालने,  
 जीहो मारण धायो शेठ ॥ जीहो कहे कुंअर  
 वेशी रहो. जीहो बल दीठुं तुम ठेठ ॥ सु० ॥  
 ॥ २८ ॥ जीहो बंधन बब्बररायनां, जीहो बोडा  
 व्या तेणीवार ॥ जीहो नुपण वस्त्र पहेगमणी,  
 जीहो करे घणो सत्कार ॥ सु० ॥ २९ ॥ जीहो  
 सुनट जीके नाठा हता, जीहो ते आव्या सह  
 कोय ॥ जीहो नांजे तस आजीविका, जीहो शे  
 ठ कोपे करी सोय ॥ ३० ॥ जीहो कुंअरे ते स  
 वि राखिया, जीहो दीधी तेहने वृत्त ॥ जीहो  
 वाहण अढीसें माहरां जीहो साचवजो एक चि  
 त्त ॥ सु० ॥ ३१ ॥ जीहो जे पण बब्बररायनो,  
 जीहो नाठो हतो परिवार ॥ जीहो कुंअर तेडी  
 तेहने, जीहो आदर दीए अपार ॥ सु० ॥ ३२ ॥  
 जीहो चांथी ढाल इणीपरे, जीहो बीजे खंडे हो  
 य ॥ जीहो वनिय कहे फल पुण्यनां, जीहो प

वोइरे, जे नजरे जोइरे, हीरो नवि होए विण वे  
 रागरेरे ॥ ५ ॥ महोत्तव मंगलवेरे, साजन सह  
 आवेरे, धवल गवरावे मंगल नरवरूरे ॥ रूप  
 जिसि मेनारे, गुण पार न जेनारे. मदनसेन प  
 रणावी एणी परेरे ॥ ६ ॥ मणी माणिक्य कोडारे,  
 मुगताफल जोडीरे. नरपति करजोडी दिए  
 करमोचनेरे ॥ परे परे पहिरावेरे, मणि नु  
 पण जावेरे, पार न आवे जसगुण बोलतारे ॥  
 ॥ ७ ॥ नाटक नव दीधारे, जिहां पात्र प्रसि  
 द्दारे, जाणे ए लीधां मुल्ये स्वर्गधीरे ॥ बहु दासी दा  
 सरे, सेवक सुविलासरे, दीधा उल्लासे सेवा कार  
 णेरे ॥ ८ ॥ रसनर दिन केतारे, तिहां रहे सुख  
 बेतारे, दान सेवकने देता बहु परेरे ॥ अमने वोलां  
 वोरे, हिवे वार मलावोरे, कहे कुंअर जावुं अ  
 म देशांतरेरे ॥ ९ ॥ नृप मन दुःख आणेरे, किम  
 राखुं प्राणेरे, घर एम जाणे न वसे प्राहुणेरे ॥  
 पुत्री जे जाइरे, ते नेट पराइरे, करे सजाइ हिवे

वोलाववारे ॥ १० ॥ एक जुंग अलंवरें. ते दे  
 खी अचंवरें, चोसठ कुआ थंजे सोहतोरे ॥ का  
 रीगरे घमियारे, मणि माणिक्य जडियारे, थं  
 ज ते अमियां जड गयणां गणेरें ॥ ११ ॥ सो  
 वन चित्रामरें, चित्रित-अनिरामरें, देखिए ठा  
 मठाम त्यां गोखलरें ॥ ध्वज नेजा जलकैरें, म  
 णि तोरण चलकैरें, चंचल ढलकें चामर चिहुं  
 दिशेरें ॥ १२ ॥ जुंए सातमी एरें, त्यां वेशीं  
 विमर्माणेरें, बेसीने रमिए सोवन सोगठेरें ॥ व  
 हु बंदे ठाजेरें, वाजां घणां वाजेरें, वहाण गा  
 जें रह्युं समुद्रमारे ॥ १३ ॥ पुरें ते रत्नेरें, राजा  
 बहु यत्नेरें, सासरवासो मन मोटे करेरें ॥ वो  
 लावी वेटीरें, हैडाजर नेटीरें, शिक्का गुणपेटी  
 दीधी बहु परेरें ॥ १४ ॥ साजन सह्यु आव्यारें.  
 मिलणां बहु लाव्यारें, काठे सर्वे आव्या आंमुं  
 पाडतारें ॥ वरवहुवोलाव्यारें, मावितर दुःख पा  
 व्यारें, तूर वजडव्यां हिवे प्रयाणनारें ॥ १५ ॥



नांगर उपामाव्यारे, सढ दोर चढाव्यारे, बाहाण  
 चलाव्यां वेगे खलासीएरे ॥ नित्य नाटक थाय  
 रे. गुणजिन गुण गायरे, वरवहु बेऊ सोहावे  
 गोखलरे ॥ १६ ॥ मन चिंते शेठरे, में कीधी वे  
 ठरे, सायर ठेठ फल्यो जुन एहनेरे ॥ जे खाली  
 हाथेरे, आव्यो मुजसाथरे, आज ते आथे सं  
 पुरण थयोरे ॥ १७ ॥ जल इंधण माटेरे, आ  
 व्या एणी वाटेरे, परण्यो रण साटे जुन ए सुंद  
 ररे ॥ लिखमी मुज आधीरे, एने कृणमां ला  
 धीरे, दोलत बाधी देखो पलकमारै ॥ १८ ॥  
 केम मागुं जाडुरे, खत पत्र देखाडुरे, देशे के  
 आडुं अवलुं बोलशेरे ॥ कुंअर ते जाणीरे, मुखे  
 मीठी वाणीरे, जाडु तस आणी आपे दश गु  
 णुरे ॥ १९ ॥ पाम्या अनुक्रमेरे, नरनव जिन  
 धर्मेरे, वहाण रयण दीवे खेमे सहुरे ॥ नांगर ज  
 ल मेल्यारे, सढ दोर संकेल्यारे, हलवे हलवे  
 लोक सहु त्यां उतरयारे ॥ २० ॥ बीजे इम खं

डेरे. जुन पुण्य अखंडेरे, एकण पिंमे उपराजण  
 करीरे ॥ कुवर श्रीपालरे, लह्या जोग रसालरे,  
 पांचमी ढाल इसी वियने कहीरे ॥ २१ ॥

दोहरा ॥ दाण वलावी वस्तुना, जरी अनेक वखा  
 र ॥ व्यापारी व्यापारना, उद्यम करे अपार ॥ १ ॥  
 लाल किनायत जरकसी. चदरुआ चोसाल ॥  
 ऊंचा तंबु ताणिया, पंच रंग पटशाल ॥ २ ॥  
 सोवनपट मंरुप तले, रयणहिंदोला खाट ॥ त्यां  
 बेसी कुंअर जुए, रसनर नवलर नाट ॥ ३ ॥  
 धवलशेट आवी कहे, वस्तु मुल्य बहु आज ॥  
 ते बेचावों का नही, जरया अर्धासें ऊहाज ॥  
 ॥ ४ ॥ कुंअर पनणे शेठने, घडो वस्तुना दाम  
 ॥ अवर वस्तु विणजो वली, करो अमारुं काम  
 ॥ ५ ॥ काम जलाव्युं अप जले, हण्यो दुष्ट  
 किराम ॥ आरत ध्याने जिम पडयो. पामी दूध  
 बिलाड ॥ ६ ॥ इण अवसर आव्यो तिहा, अ  
 वल एक असवार ॥ सुगुण सुरूप सुवेप जस,

आपसमो परिवार ॥ ७ ॥ कुंअरे तेमी आदरे,  
 बेसाडी निज पास ॥ अद्भुत नाटिक देखतां. ते  
 पाम्यो उल्लास ॥ ८ ॥ हिवे नाटीक पुरूं थये.  
 कुंअर तेडी पास ॥ कुण कारण कुण ठामथी.  
 पधारिया अम पास ॥ ९ ॥

ढाल बठी ॥ जांऊरीया मुनिवर धन धन तु  
 म अवतार एदेशी ॥ तेह पुरुश हिवे वीनवेजी,  
 रतनद्वीप सुचंग ॥ रतनसानु पर्वत इहांजी, व  
 लयाकार उत्तंग ॥ १ ॥ प्रज्जु चित्त धरीने अव  
 धारो मुजवात ॥ ए आंकणी ॥ रतनसंचया तिहां  
 वसेजी, नयरी परवतमांह ॥ कनककेतु राजा  
 तिहांजी. विद्याधर नरनाह ॥ प्र० ॥ २ ॥ रत  
 न जिसी रलियाभणीजी, रतनमाला तस नार  
 ॥ सरसुंदर सोहामणीजी, नंदनबे तस चार ॥  
 प्रज्जु० ॥ ३ ॥ ते ऊपर एक इच्छतांजी, पुत्री  
 हुइ गुणधाम ॥ रूप कला रति आगलीजी. म  
 दन मंजुषा नाम ॥ प्र० ॥ ४ ॥ पर्वत शिर सो

हामणोजी, तिहां एक जिनसाद ॥ रायपिताए  
 करावियुंजी, मेरुसुं मंडे वाद ॥ प्र० ॥ ५ ॥ सो  
 वनमय सुहामणाजी, तिहां रिसहेसर देव ॥ क  
 नककेतु राजा तिहांजी, अहनिश सारे सेव ॥  
 ॥ प्रनु० ॥ ६ ॥ नक्ति नली पूजा करे  
 जी, राय कुंअरी त्रणकाल ॥ अगर उवेखो  
 गुण स्तवेजी, गाए गीत रसाल ॥ प्रनु० ॥  
 ॥ ७ ॥ एक दिन जिनआंगी रचीजी, कुं  
 वरीए अति चंग ॥ कनकपत्र करि कोरणीजी,  
 धिचे विचे रतनसुरंग ॥ प्रनु० ॥ ८ ॥ आव्यो  
 राय जुहारवाजी, देखी सुताविज्ञान ॥ मन चिं  
 ते धन्य मुज धूआजी, चउसठ कलानिधान ॥  
 ॥ प्रनु० ॥ ९ ॥ ए सरखो जो वरमिलेजी, तो  
 मुज मन सुख थाय ॥ साची सोवन मुद्रमीजी,  
 काच तिहां न जमाय ॥ प्रनु० ॥ १० ॥ एम उ  
 जो सूने मनेजी, चिंतातुर नृप होय ॥ इणे अ  
 वसरे अचरज थयुंजी, ते सुणजो सह कोय ॥

प्रज्जु० ॥ ११ ॥ उसरती पाठे पगेजी, निजमुख  
 जोती सार ॥ आवी गंजारा बाहरेजी, जव ते  
 राजकुमार ॥ प्रज्जु० ॥ १२ ॥ ताम गंजारा ते  
 हनांजी. देवाणा दोय बार ॥ हलाव्यां हाले न  
 हींजी. सलके नहींथ लिगार ॥ प्र० ॥ १३ ॥ रा  
 जकुंअरी एम चिंतवेजी, मन आणी विपवाद ॥  
 में कीधी आशातनाजी, कोइक धरी प्रमाद ॥  
 ॥ प्र० ॥ १४ ॥ धिग मुज जिन जोवातणोजी,  
 उपन्यो ए अंतराय ॥ दोष सयल मुज सांसहो  
 जी, स्वामि करी सुपसाय ॥ प्रज्जु० ॥ १५ ॥ दा  
 दा दरिमण दीजीएजी, ए दुःख मुज न खमा  
 य ॥ ठोरुं होय कुठोरुआंजी. ठेह नदाखे माय  
 ॥ प्र० ॥ १६ ॥ राय कहे वज्ज सांजलोजी, दोष  
 नही तुज एह ॥ दोष इहांठे माहरोजी, आयो  
 तज पर नेह ॥ प्रज्जु० ॥ १७ ॥ वरनी चिंता  
 चिंतवीजी. जिणहरमाहे जेण ॥ ते लागी आ  
 शातनजी. बार देवाणां तेण ॥ प्रज्जु० ॥ १८ ॥

जिनवर तो रूपे नहींजी, वीतराग सुप्रसिद्ध ॥ प  
 ण कोइक अधिष्टायकेजी, ए मुज शिक्षा दीध ॥  
 ॥ प्र० ॥ १९ ॥ एह कमाड विण ऊवमयेजी.  
 जाऊ नहीं आवास ॥ सपरिवार नृपने तिहां  
 जी, त्रण हुआ उपवास ॥ प्र० ॥ २० ॥ त्रीजे  
 दिन निशि पावलीजी. वाणी हुई आकाश ॥  
 दोप नहीं इहां कोइनोजी, काइ करोरे विपाद  
 ॥ प्र० ॥ २१ ॥ जेहनी नजरे देखतांजी. ऊघड  
 शे ए बार ॥ मदनमंजूबा तणो थशेली, तेहज  
 नर जरतार ॥ प्र० ॥ २२ ॥ ऋपजदेवनी किं  
 करीजी, हुं चक्रेसरी देवी ॥ एक मासमांहे हि  
 वेजी, आवुं वरने लेइ ॥ प्र० ॥ २३ ॥ सुणी तेह  
 इरण्या सहजी, रायने अति आणंद ॥ प्रेमे कीं  
 धां पारणांजी, दूर गया दुःख दंद ॥ प्र० ॥  
 ॥ २४ ॥ दिन गिणता ते मासमाजी, उगोठे दि  
 न एक ॥ तिणे जूए सह वाटडीजी, विकल्प क  
 रेय अनेक ॥ प्र० ॥ २५ ॥ पुत्र शेठ जिन दे

वनोजी, हुं श्रावक जिनदास ॥ प्रवहण आव्यां  
 सांजलीजी, आव्यो इहां. आवास ॥ प्रनु० ॥  
 ॥ २६ ॥ सुणी नाद नाटकतणोजी, देखण आ  
 व्यो जाम ॥ मनमोहन प्रनु तुमतणुजी. दरिशाण  
 दिठुं ताम ॥ प्र० ॥ २७ ॥ जाणु देविचक्रेसरीजी,  
 तुमे आणथा अम पास ॥ जिणहर बार उघाड  
 तांजी, फलशे सहुनी आश ॥ प्र० ॥ २८ ॥ पू  
 ज्यपधारो देहरंजी, जुहारो श्री जगदीश ॥ ऊ  
 घडशे ते बारणाजी. जाणुं विसवा विश ॥ प्र  
 नु० ॥ २९ ॥ बीजे खंडे एणीपरेजी, सुणतां  
 बठी ढाल ॥ विनय कहे श्रोता घरेजी, होजो  
 मंगल माल ॥ प्रनु० ॥ ३० ॥

दोहरा ॥ तव हरखे कुंअर कहे, धवल शेठने  
 तेडि ॥ जइए देव जुहारवा. आवो दुर्मति फेडि  
 ॥ १ ॥ शेठ कहे जिनवर नमो, नवरा तुमे निचिं  
 त ॥ विण उपराजे जेहनी, पोचे मननी खंत ॥  
 ॥ २ ॥ अमने जिमवानो नही, घमी एक परवार

॥ सीरामण वालु जिमण, करिए एकजवार  
 ॥ ३ ॥ हिवे कुंवर जावा तिहां, जव थाए असवा  
 र ॥ हरप्यो हैपारव करे, तेजी ताम तुखार ॥  
 ॥ ४ ॥ साथ लेइ जिणदासने, अवल अवर परीवा  
 र ॥ अनुक्रमे आव्या कुंअर, ऋपनदेवदरवार ॥  
 ॥ ५ ॥ एकेको आवो जई, सहु गंनारापास ॥  
 कुंअर पठी पधारशे, इम बोले जिनदास ॥ ६ ॥  
 जिम निर्णय करी जाणिए, वार उघाडणहार ॥  
 गनारे आव्या जइ, सहुको करी जुहार ॥ ७ ॥  
 हिवे कुंअर करी धोतिया, मुख दार्धा मुखकोप ॥  
 जिणहरमाहे संचरे, मन आणी संतोप ॥ ८ ॥  
 टाल सातमी ॥ बे बे मुनिवर विहरण पागु (घा)जी  
 एदेशी ॥ कुंअर गंनारो नजरे देखतांजी, धेउ  
 उघडीआं वाररे ॥ देव कुसुम वरपे तिहाजी,  
 हुठ जयजयकाररे ॥ कुंअर ० ॥ ९ ॥ गयने गइ  
 तरत पधामणीजी, आजु सफल सुविहाणरे ॥  
 देवि दियो वर इहा आवियोजी. तेजे ऊलामल



जाणरे ॥ कुं० ॥ २ ॥ सोवन नूपण लाख वधाम  
 णीजी, देइ पंचांग पसायरे ॥ सकल सज्जन जन  
 परंवरघोजी, देहरे आवे नररायरे ॥ कुं० ॥ ३ ॥  
 दीठो कुंअर जिन पूजतोजी, केसर कुसुम घन  
 साररे ॥ चैत्यवंदन चित्त उल्लसेजी, स्तवन कहे  
 नमस्काररे ॥ कुं० ॥ ४ ॥ दीठो नंदन नाजिनरिं  
 दनोजी, देवनो देव दयालरे ॥ आज महोदय में  
 लह्योजी, पाप गयां पायालरे ॥ कुं० ॥ ५ ॥ देव  
 पुर्जाने कुंअर आवियाजी, रंगमंरुपमांहे जामरे  
 ॥ राय सज्जन जने परवरघोजी, बेठा करिय प्र  
 णामरे ॥ कुं० ॥ ६ ॥ जिनहर बार उघाडतां  
 जी, अचरज कीधी तुमे वातरे ॥ देवस्वरूपी  
 दीसो आपणांजी, वंश प्रकाशो कुल जातरे ॥  
 कुं० ॥ ७ ॥ कहे उत्तम नाम ते आपणंजी, न  
 व करे आप वखाणरे ॥ उत्तर न दीधोतिणे रा  
 यनेजी, कुंअर सथल गुणजाणरे ॥ कुं० ॥ ८ ॥  
 देख्यो अचंनो एणे अवसरेजी, हुन गयणे उ

द्योतरे ॥ ऊंचे बदनने जोए तव सहजी, ए कुण  
 प्रगटी ज्योतरे ॥ कुं० ॥ ९ ॥ विद्याचारण मुनि  
 आवियाजी, देव घणा तस साथरे ॥ जइ गंजा  
 रे जिन वंदीयाजी, थुएया श्रीजगनाथरे ॥ कुं० ॥  
 ॥ १० ॥ देवरचित वर आसनजी, बेठा ति  
 हां मुनिरायरे ॥ दीए मधुरध्वनि देशनाजी, न  
 विकश्रवणमुखदायरे ॥ कुं० ॥ ११ ॥ नवपद म  
 हिमा तिहां वरणवेजी, सेवो नविक सिद्धचक्ररे  
 ॥ इहजह परजव लहिए एहथीजी, लील लहेर  
 अथग्गरे ॥ कुं० ॥ १२ ॥ दुःख दोहग सवि  
 उपशमेजी, पग पग पामे ऋद्धि विशालरे, ए  
 नव पद आराधताजी, जिम जग कुंअर श्रीपा  
 लरे ॥ कुं० ॥ १३ ॥ प्रेमे सयल पूठ परपत्नी  
 जी, ते कोण कुंअर श्रीपालरे ॥ मुनिवर तव  
 धुरथी कहेजी, तेहनं चरित्र रसालरे ॥ कुं० ॥  
 ॥ १४ ॥ ते तुम पुएये इहा आवियोजी, ऊघा  
 दघा चेत्य दुवाररे ॥ तेह सुणी नृप हरपियो

जी, हरण्यो सवि परिवाररे ॥ कुंअ० ॥ १६ ॥  
 इम कहीने मुनिवर उतपत्ताजी, गयणमारगे  
 ते जायरे ॥ ऊजा थइ ऊंचे मुखेजी, वंदे सहु  
 तस पायरे ॥ कुं० ॥ १६ ॥ ढाल सुणी इम  
 सातमीजी, खंम बीजानी एहरे ॥ विनय कहे  
 सिद्धचक्रनीजी, नक्ति करो गुण गेहरो ॥ कुं० ॥ १७ ॥

दोहरा ॥ बेठा जिनहर बारणे. मुख मंडप  
 सहुकोय ॥ कुंअर निरखी रायनुं, हैडू हर्षित  
 होय ॥ १ ॥ धन रिसहेसर कल्पतरु धन चक्रे  
 सरी देवि ॥ जास पसाये भुज फल्या. मनवांछि  
 त ततखेवि ॥ २ ॥ तिलक वधावी कुंअरने, देइ श्री  
 फल पान ॥ सज्जन साखे प्रेमेकरी, दीधुं कन्या  
 दान ॥ ३ ॥ श्रीफल फोफल सयणने, देइ घ  
 णां तंबोल ॥ तिलक करीने बांटाणां, कीधां के  
 सर घोल ॥ ४ ॥ निज डेरे कुंअर गया, मंदि  
 र पौहोतो राय ॥ बेऊ ठामे विवाहना. घणा म  
 होत्सव थाय ॥ ५ ॥ वमी वडारण देवडी. पा

पड घणां वणाय ॥ केलविए पकवान बहु, मंग  
 ल धवल गवाय ॥ ६ ॥ वागा सीवे नव नवा,  
 दरजी बेठा वार ॥ जडिया मणि माणिक जमे,  
 घाट घडे सोनार ॥ ७ ॥ राय मंडाव्यो मांडवो,  
 सोवन मणिमय थंन ॥ थंन थंन मणिपूतली,  
 करती नाटांन ॥ ८ ॥ तोरण चिहुंदिशि वारणे,  
 नीलरयणमय पान ॥ कुंवे मोती कुंखां, जाणे  
 सरग विमान ॥ ९ ॥ पचवरणना चंद्रा दीपे  
 मोतीदाम ॥ मानू नारामंरुले, आवि करयो वि  
 श्राम ॥ १० ॥ चारि चिहुं पखे चीतरी, सोव  
 न माणिक कुंन ॥ फून माल अति फूटरी, म  
 हेके सवल मुरंन ॥ ११ ॥

ढाल आठमी ॥ राग खंजायति ॥ करडो ति  
 हा कोटवाल एदेशी ॥ हिवे श्रीपालकुमार, विधि  
 पूर्वक मळन करेजी ॥ पहेरे सवि शिणगार, ति  
 लक निलाडे ओजा धरेजी ॥ १ ॥ शिर खृणालो  
 खूं, माणे माणिक मोती जम्योजी ॥ हसेते हि

रा तेज, जाणे हुं नृपशिर चड्योजी ॥ २ ॥ काने  
 कुंमल दोय, हार हिवे सोहे नवलखाजी ॥ ज  
 म्यां कंदोरे रत्न, बाहे वाजुबंध वेरखाजी ॥ ३ ॥  
 सोवन वींटी वेढ, दश आंगुलिये सोहियेजी ॥  
 मुख तंबोल सुरंज, नर नारी मन मोहियेजी ॥  
 ॥ ४ ॥ करधरी श्रीफल पान, वरघोडे सवि सं-  
 चरघाजी ॥ सांबेला श्रीकाग, सहसगपे तव प-  
 रवरघाजी ॥ ५ ॥ बाजे ढोल निशान, सरणाइ जुं-  
 गल घणीजी ॥ रथ बेठी सय बद्ध, गाए मंग  
 ल जानणीजी ॥ ६ ॥ साव सोनेरी साज, हयवर  
 हीसे नाचताजी ॥ शिर सिंदुर सोहंत, दीसे म  
 यंगल माचताजी ॥ ७ ॥ चौटे चौटे लोक, जूए  
 महोत्सव नव नवेजी ॥ एम मोटे मंत्राण, मोह-  
 न आठ्या माडवेजी ॥ ८ ॥ पौखी आख्या  
 माहे, सासुए उलट घणेजी ॥ आणी चोरी माहे,  
 हर्ष घणो कन्यातणेजी ॥ ९ ॥ कर मेलवो कीध,  
 वेद पाठ ब्राम्हण जणेजी ॥ सोहव गाए गीत बेऊ प

खे आप आपणेजी ॥ १० ॥ करी अग्निनी साख, मं  
 गल चारे वरातियांजी ॥ फेराफिरतां ताम,  
 दान नरिंदे बहु दियाजी ॥ ११ ॥ केलवीठ  
 कंमार, सरस सुगंधे महमहेजी ॥ कवल ठवे  
 मुखमाय, माहो माहे मन गह गहेजी ॥ १२ ॥  
 मदनमंजुषा नारि, प्रेमे परणी डणीपरेजी ॥ वेळ  
 नारिसुं जोग, सुख विलसे सुसराघरेजी ॥  
 ॥ १३ ॥ ऋपजदेव प्रासाद, उठव पूजा नि-  
 त करेजी ॥ गीत ग्यान बहु दान, वित्त घणुं  
 तिहां वावरेजी ॥ १४ ॥ चैत्रमासे सुखवास,  
 आविल उली आदरेजी ॥ सिद्धचक्रनी सार,  
 लाखेणी पुजा करेजी ॥ १५ ॥ वरतावी अमार,  
 अठाइ महोत्सव घणेजी ॥ सफल करे अवना  
 र, लाहो लीए लखमीतणेजी ॥ १६ ॥ एक  
 दिन जिनहरमाहि, कुअर राय बेठा मिलीजी ॥  
 नृत्य करावे सार, जिनवर आगल मन रालिजी  
 ॥ १७ ॥ इणे अवसर कोटवाल, आवी अरज

करे इसीजी ॥ दाणचोगिए चोर, पकड्यो तस  
 आजा किसीजी ॥ १८ ॥ बलि जांगी तुम आ-  
 ण, बल बहुलु इणे आदर्युजी ॥ अमे देखा  
 ड्या हाथ, तव मोहु जांख करयुंजी ॥ १९ ॥  
 राजा बोले ताम, दंडचोरनो दीजीएजी ॥ जि-  
 णहरमां एवात, कहे कुंवर केम कीजीएजी ॥  
 ॥ २० ॥ नजरे करी हजूर, पहेला किजे पार-  
 खुंजी ॥ पढे देईजे दंड, सहुए न होए सारखु  
 जी ॥ २१ ॥ आणयो जिसे हजूर, धवलशेट  
 तव जाणियोजी ॥ कहे कुंअर महाराय, चोरन  
 लो तुमे आणियोजी ॥ २२ ॥ ए मुज पितास  
 मान, हुं ए साथे आवियोजी ॥ कोटिध्वज स-  
 रदार, वहाण घणां इहां लावियोजी ॥ २३ ॥  
 छोडावी तस बंध, तेडी पासे बेसाडियोजी ॥ गु-  
 न्हो करावी माफ, रायने पाय लगाडियोजी ॥  
 ॥ २४ ॥ राय कहे अपराध, एहनो परमेसरे स  
 ह्योजी ॥ अजरामर थयो एह, जेह तुमे बांहे

ग्रहोत्री ॥ २५ ॥ एकदिन आवी शेट, कुअर  
 ने इम विनवेजी ॥ वेची वहाणनी वस्तु. पू  
 रया किरियाणे नवेजी ॥ २६ ॥ तुमे अमने आ  
 ठाम, कुशल खेमे जिम आणीयाजी ॥ तिम प  
 होचाडो देश, तो सुख पामे प्राणियाजी ॥ २७ ॥  
 कुंअरे जणाव्यो जाव, निज देशे जावातणोजी  
 ॥ तव नृपने चित्तमाह, असंतोप ऊपन्यो घणो  
 जी ॥ २८ ॥ माग्या नृपण जेह, ते ऊपर भम  
 ता किसीजो ॥ परदेगीसुं प्रीत, दुःखदाइ जा  
 णो इसीजी ॥ २९ ॥ सासु मुमरो दोय, कर  
 जोडी आदर घणेजी ॥ आसु पडते धार, कुंअ  
 रने इणीपरे नणेजी ॥ ३० ॥ मदनमंजुपा एह,  
 अम उत्संगे ऊठरीजी ॥ जन्मथकी सुखसांहि,  
 आज लगी लीला करीजी ॥ ३१ ॥ बाली नीवित प्रा  
 य, तुम हाथे थापण ठवीजी ॥ एहने भदेशे ठे  
 ह, जो पण परणो नव नवीजी ॥ ३२ ॥ पुत्रीने  
 कहे वरन, क्षमा घणी मन आणजोजी ॥ सदा



न ॥ ३ ॥ धवल शैठ जूरे घणु, देखी कुंवरनी  
 ऋद्ध ॥ एकलमो आव्यो हतो, है है देव शुं की  
 ध ॥ ४ ॥ देखी न शके पार की, ऋद्धि हिये ज  
 स खार ॥ सायर थाए दुबलो, गाजंते जलधार  
 ॥ ५ ॥ धरसाले वनराय जे, सवि नवपल्लव था  
 य ॥ जय जावासानुं वशुं, जे ऊनो सुकाय ॥  
 ॥ ६ ॥ जेकिरतार बडा कर्या, ते शूं केही रीश  
 ॥ दांत पड्या गिरि पामतां, कुंजर पाडे चीश  
 ॥ ७ ॥ वहाण अठिसें माहरां, लीधां शिरमां दे  
 इ ॥ जोनुं घरे किम जायबे, ऋद्धि एवडी लेइ ॥  
 ॥ ८ ॥ एक जीवबे एहने, नाखं जलधिमजार ॥ पगी  
 रुयल ए माहरुं, रमणि ऋद्धि परिवार ॥ ९ ॥

ढाल पहेली ॥ शतिल तरुअर बांहिके बांह  
 वालम्मनीरे ॥ एदेशी ॥ देखो कामिनी दोइके का  
 मे व्यापिउरे, के कामे व्यापिउ ॥ बलि घणो ध  
 ननो लोचके बाध्यो पापियोरे, के बाध्यो पापियो ॥  
 लाग्या दोय पिशाचके पीमे अतिघणुंरे ॥ के पी

डे० ॥ धवलशेठनुं चितके वश नहि आपणुंरे ॥  
 केवश० ॥ १ ॥ उदक नजावे अन्नके नावेनिद्र  
 डीरे ॥ केनावे० ॥ उल्लस वालस थायके जक न  
 ही एक घडीरे ॥ केजक० ॥ मुख मूके निश्वास  
 के दिन दिन दूबलोरे ॥ केदिन० ॥ रात दिव  
 स नवि जायके मन बहु आंवलोरे ॥ के० ॥ २ ॥ नार  
 मिल्या तस मित्रके पुठे प्रेमभुरे ॥ केपुठे० ॥ को  
 ण थयो तुम रोगके जुगो इमभुरे ॥ केजुगो० ॥  
 केचिंता उत्पन्नके कोडक आकरारे ॥ केकाड० ॥  
 नाड थाउ धीरके मन कांठु करारे ॥ केमन० ॥  
 ॥ ३ ॥ दुःख कहो अम तासके उपाय विचारीएरे  
 ॥ रेउपा० ॥ चिंतासायर एहके पार उतारीएरे ॥  
 केपार० ॥ लज्जा मुक्ती शेठ कहे मन चितव्युरे  
 ॥ कहे मन० ॥ तव चारे कहे मित्रके धिक्क ए  
 शुं लव्युरे ॥ केधिक० ॥ ४ ॥ परनारीनेपाप  
 नयोजव वसीएरे ॥ न० ॥ किम सुरतरुनी डा  
 ल कृहाडे कुमीएरे ॥ कुहा० ॥ परउपगारी एह

तुमारी वातके विरुइ देखीएरे ॥ केविरुइ० ॥  
 कुंअर सघली वात ते साची सर्दहेरे ॥ तेसाची० ॥  
 दुरजननी गति नांति ते सऊन नवलहेरे ॥ तेस  
 ऊन ० ॥ १३ ॥ जेह वहाणनी कोरके मांचाबांधियारे  
 ॥ केमां० ॥ दोरतणे अवलंबके ऊपर सांधियारे ॥  
 केऊर० ॥ तिहां बेसीने शेठते कुंअरने कहेरे ॥ तेकुं  
 अरने० ॥ देखी अचरज एहके मुज मन ग  
 हगहेरे ॥ के० ॥ १४ ॥ मगर एक मुख आ  
 ठके दीसे जूजूआरे ॥ केदीसे० ॥ एवां रूप  
 स्वरूप न होशके हुआरे ॥ न होशे० ॥ जोवा  
 इहो साहेबके तोआवोवहीरे ॥ केतो० ॥ पढे  
 कांढशोवांकजे कांइकह्यंतहीरे ॥ जे कांइ० ॥  
 ॥ १५ ॥ कुंअर मांचे ताम चढयो उतावलारे  
 ॥ चढयो० ॥ ऊनारियो तव शेठ धरी मन  
 आंवलारे ॥ धरी० ॥ बेज मित्रे बेज पासके  
 दोर ते कापियारे ॥ केदोर० ॥ करतां एहवां  
 कर्म न बीहे पापियारे ॥ न० ॥ १६ ॥ पडतां

सायरमांहे ते नवपद चित्त धरेरे ॥ ते० ॥ सि  
 द्वचक्र प्रत्यक्षके सवि संकट हरेरे ॥ केस० ॥ म  
 गरमचनी पीठके बेठो थिर थईरे ॥ केबेठो० ॥  
 बहाणनी परे तेहके पहोतो तट जईरे ॥ केप  
 हो० ॥ १७ ॥ औपधिने महिमायके जलजय  
 निस्तरेरे ॥ केजल० ॥ सिद्धचक्र परनावके सुर  
 सानिध करेरे ॥ केसुर० ॥ त्रिजे खंमे ढाल ए प  
 हेली मनधरोरे ॥ ए'पहेली० ॥ विनय केहे न  
 विलोकके नवसायर तरोरे ॥ केनव० ॥ १८ ॥

देहरा ॥ कोंकण काठे ऊतरयो, पहोतो एक  
 वनमांय ॥ थाकयो निद्रा अनुसरे, चंपकतरुवर  
 बांय ॥ १ ॥ सदालगे जे जागतो, धर्ममित्र समरच ॥  
 कुंअरनी रक्षाकरे, दूर करे अंतरच ॥ २ ॥ दा  
 वानल जलधर हुए, सर्प हुए फुनमाल ॥ पुण्य  
 वंत प्राणी लहे, पग पग ऋद्धिरसाल ॥ ३ ॥ करे  
 कष्टमा पाडवा, दुर्जन क्रोरु उपाय ॥ पुण्यवंत  
 ने ते सवे, सुखना कारण थाय ॥ ४ ॥ थल प्र

गटे जलनिधिविचे, नयर रानमां थांय ॥ विष  
 अमृत थड परिणमे, पूरवपुण्य पसाय ॥ ५ ॥  
 ढाल बीजी ॥ राग मधुसुदन ॥ जीरे म  
 हारे वाणी अमीय रसाल, सुणतां मुज आशा  
 फली जीरेजी ॥ एदेशी ॥ जीरे मारे जाग्यो कुंअ  
 र जाम, तव देखे दोलत मिलि जीरेजी ॥ जीरे  
 मारे सुन्नट जला सयबद्ध, करे विनती मन र  
 ली जीरेजी ॥ १ ॥ जी० ॥ स्वामी अरज अम  
 एक, अवधारो आदर करी जीरेजी ॥ जी० ॥ न  
 यरी ठाणापुर नाम, वसे जिशी अलकापुरी जी  
 रेजी ॥ २ ॥ जी० ॥ तिहां राजा वसुपाल, राज  
 करे नरराजियो जीरेजी ॥ जी० ॥ कोंकणदेश  
 नरिंद, जस महिमा जग गाजियो जीरेजी ॥  
 ॥ ३ ॥ जी० ॥ एक दिन सनामजार, निमित्तिउ  
 एक आवियो जीरेजी ॥ जी० ॥ प्रश्न पुढवा हे  
 त, रायतणे मन जावियो जीरेजी ॥ ४ ॥ जी० ॥  
 कहो जोशी अम धूअ. मदनमंजरी गुणवती

जीरेजी ॥ जी० ॥ तेहतणो ज़रतार, कोण थ  
 शे ज़लो ज़ूपति जीरेजी ॥ ५ ॥ जी० ॥ किम  
 मिलणे अम तेह, शे अहिनाणेजाणशु जीरेजी  
 ॥ जी० ॥ कोण दिवस कोण मास, घरे तेडीने  
 आणशुं जीरेजी ॥ ६ ॥ जी० ॥ सकल कहो ए  
 वात, जो तुम विद्या वे खरी जीरेजी ॥ जी० ॥  
 शाखतणे परमाण, अम चिंता टालो परी जीरे  
 जी ॥ ७ ॥ जी० ॥ जोशी कहे निमित्त शास्त्र  
 तणे पूरण बले जीरेजी ॥ जी० ॥ पूर्वगत आ  
 म्नाय, ध्रुवतणी परे नवि चले जीरेजी ॥ ८ ॥  
 जी० ॥ शुद्धदशमी बड़शाख, अढी पहोर दिन  
 अतिक्रमे जीरेजी ॥ जी० ॥ रयणायर उपकंठ,  
 जड़ जोज्यो तिणे ममे जीरेजी ॥ ९ ॥ जी० ॥  
 नवनंदन वनमांय, गयन कीध चंपातले जीरे  
 जी ॥ जी० ॥ जोज्यो तस अहिनाण, तरुवर  
 ठाया नविचले जीरेजी ॥ १० ॥ जी० ॥ राये  
 नमानी वात, एम कहे एशुं केवाले जीरेजी ॥

जी ॥ जी० ॥ बीजी रात्रे जोइ, इणीपरे पगण्या  
 कामिनी जीरेजी ॥ २३ ॥ जी० ॥ नृपे दीधा  
 आवास, त्पां सुखनर लीला करे जीरेजी ॥ जी०  
 मयणरेहासुं नेह, दिन दिन अधिकेरी धरे जीरे  
 जी ॥ २४ ॥ जी० ॥ नृपदीए बहु अधिकार, कुं  
 अरन वांठे तेहने जीरेजी ॥ जी० ॥ थायो थर्गा  
 धर आप, पाननणां बीमां दीए जीरेजी ॥ २५ ॥  
 ॥ जी० ॥ जे कोइ अति गुणवंत, मान दिये नृ  
 प जेहने जीरेजी ॥ जी० ॥ तेहने बीडां पान,  
 देवरावे कुं अरकने जीरेजी ॥ २६ ॥ जी० ॥ त्री  
 जे खंमे एह, बीजी ढाल सोहामणी ॥ जीरेजी ॥  
 जी० ॥ सिद्धचक्र गुणश्रेणि, नवि सुणजो विन  
 ये नणी जीरेजी ॥ २७ ॥

दोहरा ॥ वहाणमांहे जे हुई, हिवे सुणो ते बा  
 त ॥ धवल नाम कालो हिये, हृष्यो साते धात  
 ॥ १ ॥ मन चिंते मुज नाग्यथी, मोटी थई स  
 भाध ॥ पलकमांहि विण औषधे, विरुई गई वि

राध ॥ २ ॥ ए धन-ए दोय सुंदरी, एह सहेली  
 साथ ॥ परमेश्वर मुज पाधरो, दीधुं हाथो हाथ  
 ॥ ३ ॥ कुडी माया केलवी, दोयः रीऊवुं नार ॥ हा  
 थ लेइ मन एहनां, सफल करुं संसार ॥ ४ ॥  
 दुःखिया थइये तस दुखे वयण सुकोमलरीत ॥  
 अनुक्रमे वश कीजिए, न होय पराणे प्रीति ॥ ५ ॥  
 धूर्त एम चितमां धेरी, करे अनेक विलाप ॥ मुखे  
 रुप हियडे इसे, पाप विगोवे आप ॥ ६ ॥

ढाल ब्रीजी ॥ रहो रहो रथ फेरवारे ॥ एदेशी ॥  
 जीवजीवन प्रजु कयां गयारे, दियो दर्शन ए  
 क वाररे ॥ सुगुणा साहेब तुम विनारे, अमने  
 कोण आधाररे ॥ जीव० ॥ १ ॥ शीर कूटे पीटे  
 हियरे, मूके मोटी पोकरे ॥ हालकलोल थयो घ  
 णेरे, जेला हूआ लोकरे ॥ जी० ॥ २ ॥ कौतुक जो  
 वाने चढ्यार, माचे वहानणी कोररे ॥ है है दैव  
 ए शुं थयुरे, तुळ्या जुना दोररे ॥ जीव० ॥ ३ ॥  
 जव बेऊ मयणा तणेरे, काने पडीते व तरे ॥ ध्र



सक पड्यो तव धनकोरे, जाणे वजनो घातरे  
 ॥ जीव० ॥ ४ ॥ थड अचेत धरणी ठलीरे, कर  
 ती कोड बिखासरे ॥ सहि सहेली सवि मिलीरे.  
 नाखे जोड निशासरे ॥ जीव० ॥ ५ ॥ ठांट्यां चं  
 दन कमकमारे. करघा वींऊणे वायरे ॥ चेत व  
 ल्युं तव आरडेरे, हियडे दुःख न मायरे ॥ जीव०  
 ॥ ६ ॥ कां ए प्राण पाठा वल्यारे, जो रुठयो किर  
 ताररे ॥ पीहेरीआं अलगां रह्यारे, मूकी गयो  
 जरताररे ॥ जीव० ॥ ७ ॥ माय बापने परहरीरे,  
 कीधो जेहनो साथरे ॥ फट हियडा फाटे नहीरे,  
 विठम्यो ते प्राणनाथरे ॥ जीव० ॥ ८ ॥ धवल  
 शेठ त्यां अवियारे, कूडा करे विलापरे ॥ शुं की  
 जे ए दैवनेरे, दीजे कशा शरापरे ॥ जीव० ॥  
 ॥ ९ ॥ दुःख सह्यां माणस कह्यारे, नूख सह्या  
 जिम ठोररे ॥ धीरज आप न मुकिएरे, करिए  
 ऋदय कठोररे ॥ जीव० ॥ १० ॥ मणि माणिक्य  
 मोती परेरे, जेहना गुण अनिरामरे ॥ जिहां जा

शे तिहां तेहनारे, मुकुट हार शिर ठामरे ॥ जी  
 व० ॥ ११ ॥ ठेंग वचन एहवा सुणीरे, मन चिं  
 ते ते दोयरे ॥ एह कर्म इणे करयुरे, अवर न  
 वेरी कोयरे ॥ जीव० ॥ १२ ॥ धन रमणीनी ला  
 लचेरे, कीधो स्वामि द्रोहरे ॥ मीठो थइ आवी  
 मिलेरे, खारु गलेफ्युं लोहरे ॥ जीव० ॥ १३ ॥  
 शीयल हिवे किम राखशुरे, ए करशे उपघातरे  
 ॥ करिए कंततणी परेरे, सायरे ऊपापातरे ॥ जी  
 व० ॥ १४ ॥ सम काले बेहु जणीरे, मन धारी  
 ए वातरे ॥ इणि अवसरे त्वां उपन्योरे, अति  
 विपमो उत्पातरे ॥ जीव० ॥ १५ ॥ हालकलोळ  
 साथर थयोरे, वाने उन्नड वायरे ॥ घोर घनाघ  
 न गाजियेरे, विजली चिहुदिशि थायरे ॥ जी  
 व० ॥ १६ ॥ कुआ थंजा कडकडेरे, ऊडी जाए  
 सढ दोररे ॥ हाथो हाथ सुजे नहरि, थयुं अंधा  
 रुं घोररे ॥ जीव० ॥ १७ ॥ रुमरुम रुमरू डमक  
 तेरे, मुखे मुके होकाररे ॥ खेत्रपाल तिहा आवि

यारे, हाथ लेइ तरवाररे ॥ जीव० ॥ १८ ॥ वीर  
 बावन्ने परवरघारे. हाथे विविध हथियाररे ॥ ठ  
 डीदार दोमे ठडारे, चार चतुर पडिहाररे ॥ जी  
 व० ॥ १९ ॥ बेठी मृगपाति वाहनेरे. चक्र चमा  
 डे हाथरे ॥ चक्केसरी पधारियारे. देव देवी बहु  
 साथरे ॥ जी० ॥ २० ॥ हणयो कुबुद्धि मित्रनेरे,  
 जेणे वांकी मति दीधरे ॥ खेत्रपाले तवते ग्रहिरे,  
 खंमोखंड तनु कीधरे ॥ जी० ॥ २१ ॥ ते देखी  
 बीहन्यो घणोरे, मयणा शरणे पडठरे ॥ शेठ प  
 शूपरे ध्रुजतोरे, देवी चक्केसरी दीठरे ॥ जी० ॥  
 ॥ २२ ॥ ज्यारे मुक्यो जीवतोरे, सतीशरण सुप  
 सायरे ॥ अंते जाइश जीवथीरे, जो मन धरीश  
 अन्यायरे ॥ जीव० ॥ २३ ॥ मयणाने चक्केस  
 रीरे. बोलावे धरी प्रेमरे ॥ वड कांड चिंता म क  
 रोरे. तुम पियुनेळे खेमरे ॥ जी० ॥ २४ ॥ मा  
 स एक माहे सहीरे, तुमने मिलशे तेहरे ॥ राज  
 रमणी ऋद्धी जोगवेरे, नरपति सुसरा गेहरे ॥

॥ जीव० ॥ २५ ॥ बेऊने कंठे ठवेरे, फूल अ  
 मुलक मालरे ॥ कहे देवी महिमा सुणारे, एह  
 नो अतिहि रसालरे ॥ जीव० ॥ २६ ॥ शीयल  
 यतन एहथी थशेरे, दिन प्रते सरस सुगंधरे ॥  
 जेह कुमिटे जोयशेरे, ते नर थाशे अंधरे ॥ जी०  
 ॥ २७ ॥ एम कही चक्रेसरीरे, उतपतियां आका  
 शरे ॥ सयल देवसुं परवरगारे, पहोच्यां निज  
 आवामरे ॥ जी० ॥ २८ ॥ तव उतपात सवे ठल्यारे,  
 वहाण चाल्यां जायरे ॥ चिंता जांगी सर्वनीरे,  
 वायां वाय सुवायरे ॥ जी० ॥ २९ ॥ मित्र त्र  
 ण कहे शेठनेरे, दीठी परतरुय वातरे ॥ चोथो  
 मित्र अधर्मथीरे, पाम्यो वेगे घानरे ॥ जी० ॥  
 ॥ ३० ॥ तेमाटे ए चित्तयीरे, काढी मूको सालरे  
 ॥ परलखमी परनारने. हिवे मत पडशो रुया  
 लरे ॥ जी० ॥ ३१ ॥ पण दुर्बुद्धि शेठनुरें, चि  
 त्त न आव्युं ठायरे ॥ जई कपुरे वासीएरे, ल  
 सण दुर्गंध न जायरे ॥ जीव० ॥ ३२ ॥ हियडा

करने वधामणारे, अंशन दुःख धरीशरे ॥ जो  
 बंच्योतु जीवतारे, तो सावि काज करीशरे ॥ जी  
 व० ॥ ३३ ॥ जो मुज जाग्यो एवढुंरे, विघ्न  
 थयुं विसरातरे ॥ तो मिलशे ए सुदरींरे,  
 समशे विरहनी जालरे ॥ जीव० ॥ ३४ ॥  
 एम चिंती दुतिमुखरे, कहेवरावे तुम दा  
 सरे ॥ नेक नजर करी निरखीएरे, मानो मुज  
 अरदासरे ॥ जीव० ॥ ३५ ॥ दूतिने काढी प  
 रीरे, देइ गलढो कंठरे ॥ तोय निर्लज्ज लाज्यो न  
 हीरे, बली थयो उल्लंठरे ॥ जीव० ॥ ३६ ॥  
 वेश करी नारीतणारे, आव्यो मयणा पासरे ॥  
 दृष्टि गइ थयो आंधलोरे, काढ्यो करी उपहा  
 सरे ॥ जी० ॥ ३७ ॥ ऊतरीए उत्तरतटेरे, वहा  
 ण चलावो वेगरे ॥ पण सन्मुख होए वायरोरे,  
 शेठ करे उद्वेगरे ॥ जी० ॥ ३८ ॥ अवर देश  
 जावातणारे, कीधा कोड उपायेरे ॥ पण वहाण  
 कौकण तटेरे, आणी मुक्यां वायरे ॥ जीव० ॥

॥ ३९ ॥ त्रीजे खडे एम कहारे, विनये त्रीजी  
 ढालरे ॥ सिद्धचक्र गुण बोलनारे, लहिए सुख  
 रसालरे ॥ जीव० ॥ ४० ॥

दोहरा ॥ कोंकण काठे नांगरयां, सवि वहा  
 ए तिणवार ॥ नृपने मिलवा उतरयो, शेठ लेइ  
 परिवार ॥ १ ॥ आव्यो नरपति पाउले, मिल  
 णां करे रसाल ॥ बेठो पासे रायने, तवद्दीठो  
 श्रीपाल ॥ २ ॥ देखी कुंजर दीपतो, हिये उप  
 नी हुंक ॥ लोचन मीचाई गया, रविदेखी जिम  
 घुरु ॥ ३ ॥ नृप हाथे श्रीपालने, देवरावे तबो  
 ल ॥ शेठ नलिपरे उलखी, चित्त थयुं डमडोल  
 ॥ ४ ॥ है है देव अटारडा, एह कशो उतपाता ॥  
 ॥ नाखी हति खारे जले, प्रगट थई ते वात ॥  
 ॥ ५ ॥ सजा विसरजी राय जब, पहोच्यो म्ह  
 लमऊर ॥ तव शेठे पडिहारने, पूव्यो एह वि  
 चार ॥ ६ ॥ एह थगीघर कोणबे, नवलो दी  
 से कोय ॥ तेह कहे गति एहनी, मणता

रंज होय ॥ ७ ॥ वनमां सुतो जागवी. घर आ  
 एयो नलिजात ॥ परणावी निज कुंअरी, न पु  
 षि जांत ने जात ॥ ८ ॥ शैठ सुणी रीऊयो  
 घणुं, चितमां करे विचार ॥ एने कष्टे पाड्या,  
 नलुं देखाड्युं बार ॥ ९ ॥ देइ कलंक कुजाति  
 नुं, पाडुं एहनी लाज ॥ राजा हणशे एहने, स  
 हेजे सरशे काज ॥ १० ॥ जोपण जेजे में करघां,  
 एने दुखनां हेत ॥ ते ते सवि निष्फळ थयां, मु  
 ज अजिलाप समेत ॥ ११ ॥ तोपण वाज न  
 आविये, मन करीये अनुकुल ॥ उद्यमथी सवि  
 संपजे. उद्यम सुखनुं मुल ॥ १२ ॥ वेरीने बाध्यो  
 घणो, ए मुज खणशे कंद ॥ प्रथमज हणवा  
 एहने, करवो कोइक फंद ॥ १३ ॥ इम चिंतव  
 तो ते गया, उतारे आवास ॥ पलक एक तस  
 जक नहीं, मुख मूके नीसास ॥ १४ ॥

ढाल चौथी ॥ आषाढजूति अणगारनेरे ॥ एदे  
 शी ॥ इणे अवसर तिहां डुंबनुरे, आव्युं टो

लुं एकरे, चतुर नर ॥ उन्ना उलगडी करे हो  
 लाल ॥ तेडी महतर डुंबनेरे, शेठ कहे अविवे  
 करे, चतुरनर ॥ काँज अमारू एक करो होला  
 ल ॥ १ ॥ एह जमाइ रायनो, तेहने कहो तुमे  
 डुंबरे ॥ च० ॥ लाख सोवन तुमने आपशुं होला  
 ल ॥ धाइने वलंगो गलेरे, सघलुं मिली कुटुंबरे  
 ॥ च० ॥ पाड घणो अमे मानशुं होलाल ॥ २ ॥  
 डुंब कहे स्वामी सुणोरे, करशुं ए तुम कामरे ॥  
 च० ॥ मुजरो हमारो मानजो होलाल ॥ केलवशुं  
 कुमी कलारे, लेशुं परठया दामरे ॥ च० ॥ सावा  
 सी देजो पठे होलाल ॥ ३ ॥ डुंब मिली सविते  
 गयारे, रायतणे दरबाररे ॥ च० ॥ गाय उन्ना  
 घूमता होलाल ॥ राग आलापे टेकसुरे, रीऊयो  
 राय अपाररे ॥ च० ॥ मागो काँइ मुखे एम कहे  
 होलाल ॥ ४ ॥ डुंब कहे अम दीजीएरे, महोत  
 वधारी दानरे ॥ च० ॥ महोत अमे वांठुं घणो  
 होलाल ॥ तव नरपति कुंअर



तस पानरे ॥ च० ॥ तेहनं महोत वधारवा हो  
 लाल ॥ ५ ॥ पान देवा जव आवियारे, कुंअर  
 तेहनी पासरे ॥ च० ॥ हस्त वदन जोतो हसी  
 होलाल ॥ वडो डुंव वलग्यो गलेरे, आणी मन  
 उल्लासरे ॥ च० ॥ पुत्र आज नेटयो नले होला  
 ल ॥ ६ ॥ एहवे आवी डुंवडीरे, रोइ वलगी कं  
 ठरे ॥ च० ॥ अंगो अंगे नेटती होलाल ॥ बेन  
 थइने एक मिलीरे, आणी मन उत्कंठरे ॥ च० ॥  
 वीरा जानं तुज नामणे होलाल ॥ ७ ॥ एक  
 कहे मुज माउलोरे, एक कहे चाणेजरे ॥ च० ॥  
 एवना दिन तुमे क्यां रह्या होलाल ॥ एक का  
 की एक फुइ थइरे, देखाडे घणुं हेजरे ॥ च० ॥  
 वाट जोतां हतां ताहरी होलाल ॥ ८ ॥ डुंव कहे  
 नररायनेरे, ए अम कुल आधाररे ॥ च० ॥ री  
 सावी चाल्यो हतो होलाल ॥ तुम पसाय नेलो  
 थयोरे, स्रवि माहरो परिवाररे ॥ च० ॥ जांग्यां  
 दुःख विगोहनां होलाल ॥ ९ ॥ राजा मन चिंते इ

सुंरे, मुणी तेहनी वाचरे ॥ च० ॥ वात घणी वि  
 रुद्ध थड होलाल ॥ एह कुटुंब सवि एहनुरे, दीसे  
 परतरुय साचरे ॥ च० ॥ धिग मुज वंश वि  
 टालीयो होलाल ॥ १० ॥ निमित्तिन तेडाविथोरे,  
 भैं तुज वचन विश्वासरे ॥ च० ॥ पुत्री दीधी एह  
 ने होलाल ॥ किम मातग कह्यो नहीरे. ते दी  
 धो गल पाशरे ॥ च० ॥ निमित्तियो बलतुं कहे  
 होलाल ॥ ११ ॥ मुज निमित्त जुठुं नहीरे. सु  
 एजो साची वानरे ॥ च० ॥ ए बहु मातंगनो  
 घणी होलाल ॥ राय अरथ समजे नहीरे, को  
 प्यो चिंते घातरे ॥ च० ॥ कुंअर निमित्तिया ऊप  
 रे होलाल ॥ १२ ॥ ते बेउने मारवारे, राये की  
 धो विचाररे ॥ च० ॥ सुजट घणा त्यां सज कि  
 या होलाल ॥ मदनमंजरी ते सुणीरे. आवी त्यां  
 तिणी वाररे ॥ च० ॥ रायने इणीपरे विनवे हो  
 लाल ॥ १३ ॥ काज विचारी कीजीएरे, जिम  
 नवि होय उपहासरे ॥ च० ॥ जगमा जश ल

हीए घणो होलाल ॥ आचारे कुल जाणीएरे,  
 जोइए हिए विमासरे ॥ च० ॥ दुबलकना थइ  
 ए नहि होलाल ॥ १४ ॥ कुंअरने नरपति कहे  
 रे, प्रगट करो निज वंशरे ॥ च० ॥ जेम सांसो  
 दुरे टले होलाल ॥ कहे कुंअर किम उच्चरेरे, उ  
 त्तम निज प्रशंसरे ॥ च० ॥ कामे कुक उलखा  
 वशुं होलाल ॥ १५ ॥ सैन्य तुमारुं सज्ज करोरे,  
 मुज कर दो तरवाररे ॥ च० ॥ तव मुज कुल  
 परगट होशे होलाल ॥ माथुं मुंझाव्या पठारे,  
 पूठे नक्षत्र वाररे ॥ च० ॥ ए उखाणो साचव्यो  
 होलाल ॥ १६ ॥ अथवा प्रवहणमांहे ठेरे, दोय  
 परणी मुज नाररे ॥ च० ॥ तेडी पूठे तेहने हो  
 लाल ॥ ते कहेशे सवि माहरोरे. मूलथकी अ  
 धिकाररे ॥ च० ॥ इणीपरे कीजे पारखुं होलाल  
 ॥ १७ ॥ तेहने तेडवा मोकल्योरे. राये निजप्र  
 धानरे ॥ च० ॥ तेह जईने त्यां विनवे होलाल ॥  
 तव मयणा मनु हरपीयारे, पामी आदरमानरे

॥ च० ॥ सहीकंते तेडावीयां होलाल ॥ १८ ॥ वेसी  
 रयण सुखासेनेरे, आव्यां राय हजूररे ॥ च० ॥  
 नूपति मन हर्षित थयो होलाल ॥ नयणेनाह नि  
 हालतारे, प्रगटयो प्रेम अकुररे ॥ च० ॥ साचे  
 जुठ नसाडियुं होलाल ॥ १९ ॥ विद्याधरपुत्री क  
 हरे, सघलो तस विरततरे ॥ च० ॥ विद्याधर  
 मुनिवर कह्यो होलाल ॥ पापी शेठे नाखियोरे,  
 सायरमां अम कंतरे ॥ च० ॥ वखते आज अ  
 मे लह्यो होलाल ॥ २० ॥ ते सुणतां जव उल  
 ख्योरे, तव हर्ष्यो मन रायरे ॥ च० ॥ पुत्र  
 सगी नगनीतणो होलाल ॥ अविचारयुं कीधुं  
 हतुरे, पण आव्युं सवि ठायरे ॥ च० ॥ नोज  
 नमाहे घी ढल्युं होलाल ॥ २१ ॥ नरपति पूठे  
 डबनेरे, कहो ए कशो विचाररे ॥ च० ॥ तव ते  
 बोले कंपता होलाल ॥ शेठे अमने विगोईयारे,  
 लोने थया खुवाररे ॥ च० ॥ कुडू कपट अमे  
 केलव्युं होलाल ॥ २२ ॥ तव राजा रीशे च

द्योरे, बांधी अणाव्यो शेठरे ॥ च० ॥ डुंब सहि  
 त हणवा धस्यो होलाल ॥ तय कुंअर अडो  
 वलीरे, गोमाव्यो ते शेठरे ॥ च० ॥ उत्तम नर  
 इम जाणीए होलाल ॥ २३ ॥ निमित्तिउ तव  
 बोलीउरे, साचुं मुज निमित्तरे ॥ च० ॥ ए बहु  
 मातंगनो धणी होलाल ॥ मातंग कहिय हाथी  
 यारे, तेहनो प्रचु वड वित्तरे ॥ च० ॥ ए राजेस  
 र राजीउ होलाल ॥ २४ ॥ निमित्तियाने नृप  
 दाएरे, दान अने बहु मानरे ॥ च० ॥ विद्यानि  
 धि जगमां वमो होलाल ॥ कुंअर निज घरे आ  
 वियारे, करता नवपद ध्यानरे ॥ च० ॥ मयणा  
 त्रणे एकठीमिली होलाल ॥ २५ ॥ कुंअर पूरव  
 नी परेरे. पाले मननी प्रीतरे ॥ च० ॥ पासे रा  
 खे शेठने होलाल ॥ ते मनथी ठंडे नहीरे, दुर्ज  
 ननी कुल रीतरे ॥ च० ॥ जे जेहवो ते तेहवो  
 होलाल ॥ २६ ॥ बेड हाथ जोये पड्यारे, का  
 ज न एके सिद्धरे ॥ च० ॥ शेठ एवुं मन चिंतवे

होलाल ॥ पीन शकुं तो ढोली शकुंरे, एहवो  
 निश्चय कीधरे ॥ च० ॥ एहने निज हाथे हणु  
 होलाल ॥ २७ ॥ कुंअर पोढयोवे जिहारे, सात  
 मी जुंइए आपरे ॥ च० ॥ लेइ कटारी त्यां  
 चढयो होलाल ॥ पग लपटयो हेठो पढ्यारे,  
 आवी पहोच्युं पापरे ॥ च० ॥ मरी नरके ग  
 यो सातमी होलाल ॥ २८ ॥ लोक प्रजाते  
 त्यांमिल्यारे, बोले धिग धिग वाणरे ॥ च० ॥  
 स्वामिद्रोही ए थयो होलाल ॥ जेह कुंअरने  
 चिंतव्युरे, आप लह्यं निरवाणरे ॥ च० ॥ उग्र  
 पाप तुरतज फल्युं होलाल ॥ २९ ॥ मृतकारज  
 तेहना करेरे, कुंअर मन धरे शोकरे ॥ च० ॥  
 गुण तेहना संजारतो होलाल ॥ सोवन घणुं  
 तपावियेरे, अगनीतणे संयोगरे ॥ च० ॥ तो  
 हे रंग न पालटे होलाल ॥ ३० ॥ माल पांचसे  
 बहाणनोरे, सवी संजाली लीधरे ॥ च० ॥ ल  
 नहीं ॥ से

टनारे, ते अधिकारी कीधरे ॥ च० ॥ गुणनिधि  
 उत्तम पद लहे होलाल ॥ ३१ ॥ इंद्रतणां सु  
 ख नोगेवरे, ते कुंअर श्रीपालरे ॥ च० ॥ मय  
 णा त्रणे परिवरयो होलाल ॥ त्रीजे खंडे एम  
 कहीरे, विनये चौथी ढालरे ॥ च० ॥ सिद्धचक्र  
 महिमा फले होलाल ॥ ३२ ॥

दोहरा ॥ एक दिन रयवाडी चढयो, रमवा  
 ने श्रीपाल ॥ साथ बहु त्यां ऊतरयो, दीठो ऋ  
 द्वि विशाल ॥ १ ॥ सार्थवाह लइ नटेणो, आ  
 व्यो कुंअर पाय ॥ तव तेहने पूढे इस्युं, कुंअर क  
 री सुपसाय ॥ २ ॥ कवण देशथी आविया, क्यां  
 जावा तुम जाव ॥ सार्थवाह तव वीनवे, करजो  
 डी सदजाव ॥ ३ ॥ आव्या कांतीनयरथी, कंबु  
 द्वीव उदेश ॥ कुंअर कहे कोइक कहो, अचर  
 ज दीठ विशेष ॥ ४ ॥ तेह कहे अचरज सुणो.  
 नयर एक अनिराम ॥ कोश इहांथी चारसे, कुं  
 डलपूर तस नास ॥ ५ ॥ मकरकेतु राजा तिहां,

कपूरतिलकाकंत ॥ दोय पुत्र उपरहुई, सुता  
 तास गुणवंत ॥ ६ ॥ नामे ते गुणसुदरी, रूपे  
 रंज समान ॥ जगमां जस जयमा नहीं, चोस  
 ठ कला निधान ॥ ७ ॥ राग रागणी रूप स्वर  
 ताल तंत वितान ॥ वीणा तम ब्रम्हा सुणे, थि  
 र करि आठे कान ॥ ८ ॥ शास्त्र सुनापित का  
 ठ्य रस, वीणानाद विनोद ॥ चतुर मिले जो  
 चतुरने, तो ऊपजे प्रमोद ॥ ९ ॥ डेहेरो गाय त  
 णे गले, खटके जेम कुकट ॥ मूरख सरशी गो  
 ठडी, पग पग हियडे हठ ॥ १० ॥ जो रूस्यो  
 गुणवंतने, तो देजे दुखपोठ ॥ देव न देजे एक  
 तु, साथ गमारां गोठ ॥ ११ ॥ रसियासुं वासो  
 नहीं, ते रसिया इक ताल ॥ कुर्गिने काखर हु  
 ए, जिम विठडी तरु माल ॥ १२ ॥ युक्ति जुक्ति  
 समजे नहीं, सुजे नही जस चोज ॥ इत उत  
 जोइ जगली, जाणे आव्युं रोज ॥ १३ ॥ रोज  
 तणुं मन रीजवी, नशके कोइ सुजाण ॥ नदीमा



( ११२ )

य निशदिन वमे, पलले नहीं पाषाण ॥ १४ ॥  
मर्मन जाणे मांहिनो, चित्त जहीं इकठोर ॥ ज्यां  
त्यां माथूं घालतो, फिरे हरायुं ढोर ॥ १५ ॥ व  
ली चतुरसुं बोलिए, चिते कदा इकवार ॥ ते स  
हेली संसारमां, अवर अकज अवतार ॥ १६ ॥  
रसियांने रसिया मिले, केलवतां गुण गोठ ॥  
हिये नमाये रीऊ रस, केणी नावे होठ ॥ १७ ॥  
परख्या पाखे परणतां, जुंठ मिले जरतार ॥ जा  
य जमारो जुरतां, किशुं करे किरतार ॥ १८ ॥  
ते कारण ते कुंअरी, करी प्रतिज्ञा सार ॥ वीणा  
वादे जीतशे. जे मुज ते जरतार ॥ १९ ॥  
ढाल पांचमी ॥ थारा मेढला उपर मेढ, ऊरूं  
खे वीजली होलाल ॥ ऊरूंखे बीजली ॥ एदेशी ॥ ते  
ह प्रतिज्ञा वात. नयरमां घर घरेहोलाल ॥ न  
यरमां ० ॥ पमरी लोक अनेक, बनावे परपरे हो  
लाल ॥ ब० ॥ राजकुमार असंख ते, शीखण स  
ऊ थया होलाल ॥ ते ० ॥ लेइ वीणा साज, ते

गुरुपासे गया होलाल ॥ ते० ॥ १ ॥ त्रण ग्रा  
 म सुर सात.के एकावीश मूर्खना होलाल ॥ के०  
 ॥ तान उगणपञ्चास, घर्णी विधि धोलना हो  
 लाल ॥ घ० ॥ विद्याचार्य एक, सधावे शीखवे  
 होलाल ॥ स० ॥ करे अज्यास जवान, ते ऊ  
 जम नव नवे होलाल ॥ ते० ॥ २ ॥ शास्त्रसं  
 गीत विचक्षण, देश-विदेशना होलाल के ॥  
 ॥ दे० ॥ करे सनामाहि वाद, ते नाह विशेषना  
 होलाल ॥ ते० ॥ मास मास प्रते होय. तिहां ग  
 ण पारिखा होलाल ॥ ति० ॥ सुणतां कुंवरी वी  
 ण, सवे पशु सारीखा होलाल ॥ स० ॥ चौटामां  
 हे वीण, वजावे वाणिया होलाल ॥ व० ॥ नकरे  
 कोइ व्यापार, ते होंसी प्राणिया होंलाल ॥ ते० ॥  
 इणीपरे वरण अढार, घरोघर आंगणे होलाल  
 ॥ घ० ॥ सघले मेढी मेढेल, ते वीणा रणऊणे  
 होलाल ॥ ते० ॥ ४ ॥ गायो. चारे गोवाल, ते वाण  
 बजावता होलाल ॥ ते० ॥ राजकुंवरी विहाह, म

नोरथ जावता होलाल ॥ म० ॥ सूनां मूकी खे  
 त्र. मिले बहु करषणी होलाल ॥ मिले० ॥ शी  
 खे वीण वजावण, हौस हिये घणी होलाल ॥  
 हौ० ॥ ५ ॥ तेह नगरमां एहवुं. कौतुक थई र  
 ह्युं होलाल के ॥ कौ० ॥ दिठे बने ते वात, न  
 जाये पण कह्युं होलाल ॥ न० ॥ सुणी कुंअर  
 ते वात, हिये रीऊयो घणुं होलाल ॥ हि० ॥ सा  
 र्थवाहने सार, दीए वधामणुं होलाल ॥ दीए० ॥  
 ॥६॥ आव्यो निजआवास, कुंअर मन चिंतवी  
 होलाल ॥ कुं० ॥ नयर रह्युं ते दुर, तो किम जा  
 शुं हिवे होलाल ॥ तो० ॥ देत विधाता पांख  
 तो माणस रूअडा होलाल ॥ तो० ॥ फिरि  
 फिरि कौतुक जोत, जूए जेम सूअडा होलाल ॥  
 ॥जू० ॥ ७ ॥ सिद्धचक्र मुज एह, मनोरथ पूरशे  
 होलाल ॥ मनो० ॥ एहज मुज आधार, विघन  
 सवि चूरशे होलाल ॥ वि० ॥ धिरकरी मन वच  
 काय, रह्यो एक ध्यानसुं होलाल ॥ रह्यो० ॥ त

नमय तत्पर चित्त. थयो एक ग्यानसुं होलाल ॥  
 थ० ॥ ८ ॥ तत्क्षण सोहमवासी. सुरवर आवियो  
 होलाल ॥ सु० ॥ विमलेसर मणिहार, मनोहर  
 लावियो होलाल ॥ म० ॥ थइ घणो मुप्रसन्न, कुं  
 अर कंठे ठवे होलाल ॥ कुं० ॥ तेह तणो करजो  
 डी, महिमा वरणवे होलाल ॥ म० ॥ ९ ॥ जेह  
 वुं वंठे रूप, ते थाये तत्क्षणे होलाल ॥ ते० ॥  
 तत्क्षण वंठितठाम, जाए गयणांगणे होलाल ॥  
 जा० ॥ आवे विण अज्यास. कला जे चित्त धरे  
 होलाल ॥ क० ॥ विपना विपम विकार, ते सघ  
 ला संहरे होलाल ॥ ते० ॥ १० ॥ सिद्धचक्रनो  
 शेवक, हुंठुं देवता होलालके ॥ हुं० ॥ कैक उधा  
 रिया धीर में, एहने सेवता होलाल ॥ में० ॥ सि  
 द्धचक्रनी जक्ति, घणी मन धारजो होलाल ॥  
 घ० ॥ मुजने कोईक काम. पडे संनारजो होला  
 ल ॥ प० ॥ ११ ॥ एम कहीने ते सुरवर निज  
 धानक गयो होलालके ॥ नि० ॥ कुं अर पोढयो से

होलाल ॥ क० ॥ खड्ग अमूलिक एक, करघुं तस  
 जेठणुं होलाल ॥ क० ॥ तव हरष्या गुरु महत्व,  
 दिए तस अति घणुं होलाल ॥ दि० ॥ १९ ॥  
 वीणा एक अणोपम, दीधी तस केर होलालके ॥  
 दी० ॥ देखाडे स्वर नाद, ठेकाणां हादरे होला  
 ल ॥ ठे० ॥ त्रट् त्रट् तूटे तांत, गमां जाये खसी  
 होलाल ॥ ग० ॥ ते देखी विपरीत, सजा सघ  
 ली हसी होलाल ॥ स० ॥ २० ॥ हिवे परीक्षा हे  
 त, सजा मोटी मिली होलाल ॥ स० ॥ चतुर सं  
 गीत विचक्षण, बेठा मन रली होलालके ॥ बे० ॥  
 आवी राज कुमारि, कला गुण वरसती होला  
 ल ॥ क० ॥ वीणा पुस्तक हाथ, जे परतद्ध सर  
 स्वती होलाल ॥ जे० ॥ २१ ॥ दरवाने दरबारे.  
 कुब्ज जव रोकियो होलाल ॥ कु० ॥ दीधुं नूपण  
 रत्न, पगी नवि टोकियो होलाल ॥ प० ॥ आ  
 व्यो कुंवरी पास, इच्छारूपी वडो होलाल ॥ इ० ॥  
 कुवरी देखे रूप, बीजा सवि कुबडो होलाल ॥

बी० ॥ २२ ॥ साचीते मुज एह, प्रतिज्ञा पुरशे  
 होलाल ॥ प्र० ॥ सफल जनमतो मानशुं, दुरिज  
 न जुरशे होलालके ॥ दु० ॥ जो एहथी नवि जां  
 जशे, मननु आतरुं होलालके ॥ म० ॥ करी प्रति  
 ज्ञा वयर, वसाव्युं तो खरुं होलाल ॥ व० ॥ २३ ॥  
 दाखे गुरु आदेशे, निज विणा कला होलालके ॥  
 नि० ॥ जाम कुमार कुमार, सजा मद आकला  
 होलाल ॥ स० ॥ ताम कुमारी देखावे, निजगुण  
 चातुरी होलालके ॥ नि० ॥ लोके जाण्यो अंतर  
 ग्रामने सुरपुरी होलाल ॥ ग्रा० ॥ २४ ॥ कुंमरी कला  
 आगे हुइ, कुंअरतणी कला होलाल ॥ कुं० ॥ चंद्र क  
 ला रवि आगे ते, वाशने बाकला होलाल ॥ ते० ॥  
 लोक प्रशंसा सांचली, वामन आवियो होलालके  
 ॥ वा० ॥ कहे कुंडलपुरवासी, जलो मन जावि  
 यो होलाल ॥ ज० ॥ २५ ॥ कुवरी संकी तेण, वि  
 णां दिए तस करे होलाल ॥ बी० ॥ कहे कुमार  
 अशुद्धवे, एवीणा धुरे होलालके ॥ ए० ॥ वीणा

सगर्जने दंड, दाध्योठे गले ग्रह्यं होलाल ॥ दा० ॥  
 तुंबड तेणे अशुद्ध, पणु में तस कर्ह्यं होलाल ॥  
 प० ॥ २६ ॥ दाखी दोप समारी, वीणा ते आलवे  
 होलाल ॥ वी० ॥ होइ ग्रामनी मुठना, किमपि  
 नकोचवे होलाल ॥ कि० ॥ सुता लोकनां लई  
 मुकुट, मुद्रा मणी होलाल ॥ मु० ॥ वस्त्राचरण ले  
 इ करी, राशिते अतिधणी होलाल ॥ रा० ॥  
 ॥ २७ ॥ जाग्या लोक अठेरुं, देखी एहवुं हो  
 लालके ॥ दे० ॥ पुर्ण प्रतिज्ञा कुमारी, चित्त हर  
 पित हुवुं होलाल ॥ चि० ॥ त्रिजुवनसार कुमार,  
 गले वर मालिका होलाल ॥ ग० ॥ हिवे ठवे नि  
 ज माने, धन्य ते बालिका होलाल ॥ ध० ॥  
 ॥ २८ ॥ वामन वरियो जाणी, नृपादिक दुःख ध  
 रे होलाल ॥ नृ० ॥ ताम कुमार स्वप्नावनुं, रूप  
 ते आदरे होलालके ॥ रू० ॥ शशिरजनी हर  
 गोरी, हरि कमला जिस्यो होलाल ॥ ह० ॥ योग्य  
 मेलावो जाणी, सवे चित्त उल्लस्यो होलाल ॥

स० ॥ २९ ॥ निज बेटी पाणावी, राजाये बलीप  
 रे होलाल ॥ रा० ॥ दिए हय गय धण कंचन,  
 पुरे तस करे होलाल ॥ पु० ॥ पुण्य विशाल जु  
 जाल, तिहा लीला करे होलाल ॥ ति० ॥  
 गुणमुंदरीने साथ, श्रीपालते सुख वरे होलाल ॥  
 ॥ श्री० ॥ ३० ॥ त्रीजे खमे ढाल, रसाल ते पां  
 चमी होलाल ॥ र० ॥ पुरी ए अनकूर, सजन  
 मन सक्रमी होलाल ॥ स० ॥ सिद्धचक्र गुण-  
 गातां, चित्तन कुणतणो होलाल ॥ चि० ॥ हरपेवर  
 से अमिय, ते विनय सुजस-धणो होलाल ॥ ३१ ॥  
 दोहरा ॥ पुण्यवत जिहा पगधरे, तिहा आ  
 वे सवि ऋद्धि ॥ तिहां अजोद्धा राम-जिहां,  
 जिहा-साहस तिहा सिद्धि ॥ १ ॥ पुण्यवंतने ल-  
 ठिनो, इच्छातणो विलंब ॥ कोकिल चाहे कंठ र-  
 व, दिये लुंव जरि, अंब ॥ २ ॥ पुण्ये परणाति  
 होय जलि, पुण्ये मगुण गरिठ ॥ पुण्ये अ-  
 लिय विघन टले, पुण्ये मिलेज इठ ॥ ३ ॥



ढाल बठी॥ सुण सुगुण सनेहीरे साहेबा एदेशी  
 ॥ एकादिन एक परदेशीउ, कहे कुअरने अह-  
 न्त ठामरे ॥ सुण जोयण त्रणें उपरे, ठे न  
 यर कंचनपूर नामरे ॥ जूठ जूठ अचरज अ-  
 तिजलू ॥ एआंकणी ॥ त्यां वृजसेनठे राजी-  
 ठ, अरिकाल सबल करवालरे ॥ तस कंचनमा-  
 लाठे कामनी, मालति माल सकुमालरे ॥ जू० ॥  
 ॥ २ ॥ तेहने सुत चारने उपरे, ठे त्रैलोक्य  
 सुंदरी नामरे ॥ पुत्रीठे वेदने उपरे, उपनिषत्  
 यथा अनिरामरे ॥ जू० ॥ ३ ॥ रंजादिक जे  
 रमणी करी, ते तो एह घमवा करलेखरे ॥ वि-  
 धाने रचना बीजीतणी, एहनो जय जश उल्ले-  
 खरे ॥ ४ ॥ रोमाग्रनिरखे तेहने, ब्रम्हाद्वय अनु-  
 जव होयरे ॥ स्मर द्वय पुरण दर्शने, तेहने तु-  
 ल्य नहीं कोयरे ॥ जू० ॥ ५ ॥ नृपे तस वर स  
 रिखो देखवा, मंडप स्वयंवर कीधरे ॥ मूल मं-  
 डप थंजे पुतली, मणी कंचनमय सुप्रसिद्धरे ॥

॥ जू० ॥ ६ ॥ चिहुं पास विमाणावली स-  
मी, मंचाति मंचनी श्रेणिरे ॥ गौरव कारण कण-  
राशिजे, जीपीजे गिरिवर तेणीरे ॥ जू० ॥  
॥ ७ ॥ तिहां प्रथम पद्ध आपाढनी, बीजते व-  
रण मुहुर्तरे ॥ शुन बीज ते कालवे, पु-  
ण्यवंतने हेतु आयतरे ॥ जू० ॥ ८ ॥ इम नि-  
सुणी सोवन सांकलु, कुंअरे तस दीधु तावरे ॥  
घरे जइ कुञ्जाकृति धरी, तिहा पहोतो हारप्र-  
जावरे ॥ जू० ॥ ९ ॥ मंरुपे पेसतां वारीउ, पो-  
लीयाने नुपण देइरे ॥ तिहा पहोतो मणिमय  
पुतली, पासे वेठो सुखसेइरे ॥ जू० ॥ १० ॥ ख-  
रदंतो नाकते नानडु, होठ लांवा उची पीठरे ॥  
आख पीली केश ते कावरा, रह्यो उजो मांनव  
हेठरे ॥ जू० ॥ ११ ॥ नृप पूठे केड सजागिया, व-  
ली वागीया जागीया तेजर ॥ कद्दो कृण कार-  
णे तुमे आविया, कहे जेण कारणे तुम हेजरे ॥  
जू० ॥ १२ ॥ तवते नृपाति खरु हमे, जूउ

जूठ ए रूपनिधानरे ॥ एहने जे वरसे सुंदरी,  
 तेहनां काज सरयां यल्यां वानरे ॥ जू० ॥ १३ ॥  
 इणि अवसरे नरपति कुअरी, वर अंबर शिवि  
 कारूढरे ॥ जाणीए चमकति वीजली, गिरिउप-  
 रे जलधर गुढरे ॥ जू० ॥ १४ ॥ मुक्ताफल हारे  
 सौदती, वरमाला करमां लेइरे ॥ मुलमंरुपे आ  
 वी कुंअरने, सहसा शुचिरूप पलौइरे ॥ १५ ॥  
 जे सहेज स्वरूप विजावमां, देखे ते अनुभवयो  
 गरे ॥ इणे व्यतिकरे तै हर्षित हुइ, कहे हुन मु  
 ज इष्ट संयोगरे ॥ जू० ॥ १६ ॥ तस द्रष्टिसरा  
 ग विलोकतां, विचे विचे निज वामनरूपरे ॥  
 दाखे तै कुंअर सुवल्लही, परिपरिखे करी  
 चुपरे ॥ जू० ॥ १७ ॥ साची ते नट नांगरत-  
 णी, बाजी वाजी छुन जेमरे ॥ मन राजी लजी  
 शुं करे, आ जीवित एहसुं प्रेमरे ॥ १८ ॥ हिवे  
 वरणवे जे जे नृप प्रते, प्रतिहारी करी गुण पो  
 षरे ॥ तै ते हिले कुअरी दाखवी, वय रूपने जे

शना दोपरे ॥ जू० ॥ १९ ॥ वरणवतां जसं मु-  
 ख उजलु, हेलता तेहनुं श्यामरे ॥ प्रतिहारीथां  
 की कुंअरने, सा निखे रति अजिरामरे ॥ जू०  
 ॥ २० ॥ वे मधुर चथोचित शेलमी, दाधि मधु  
 साकर द्राखरे ॥ पण जेहनुं मन जिहा वेधियु,  
 ते मधुरने बीजा लाखरे ॥ जू० ॥ २१ ॥ इणे अ  
 वसरे थंननी पुतली, मुखे अवतरी हारनो देव  
 रे ॥ कहे गुणग्राहक जो चतुरवे, तो वामन व  
 र ततखेवरे ॥ जू० ॥ २२ ॥ ते सुणि वरियो कुं  
 वरीए, दाखे निजे अतिही कुरूपरे ॥ ते देखी  
 निजुंसे कुब्जने, तवरुख्या राणा नूपरे ॥ जू० ॥  
 ॥ २३ ॥ गुण आवगुण सुग्धा नवि लहे, वरे कू  
 वज तजी वर नूपरे ॥ पण कन्यारत्न नकुब्जनं,  
 ऊकरडे शीवर धुपरे ॥ जू० ॥ २४ ॥ तज माल  
 मगल अमेकहुं, तुं कागठ आति विकरालरे ॥  
 जो न तजे तो ए ताहूँ, गल नाल लुणे कर-  
 वालरे ॥ जू० ॥ २५ ॥ तव हसीय भणे वामन

इरयुं. तुमे जोनवी वरया इणरे ॥ तो दुर्नगो  
 रुपो मुज किशुं, रुपोन विधिसुं केणरे ॥ जू० ॥  
 ॥ २६ ॥ परस्त्री अनिलापना पातकी, शिवे मुज  
 असिधारातीढरे ॥ पामी तुमे शुद्ध थाउ सवे,  
 देखो मुज केवा हठरे ॥ जू० ॥ २७ ॥ एम कहीं  
 कुवजे विक्रम तिस्युं, दाख्युं तेणे नरपाति नठरे ॥  
 चित्त चमकया गगन देवता, तेणे संतति कुसूम  
 नी वुठरे ॥ जू० ॥ २८ ॥ हुठ वज्रसेन राजा खु  
 शी, कहे बलपरे दाखवो रूपरे ॥ तेणे दाख्युं  
 रूप स्वजावनुं. परणावे पुत्रीनुपरे ॥ जू० ॥ २९ ॥  
 दीए आवास उत्तंगते, तिहां विलासे सुख श्री-  
 पालरे ॥ निज त्रैलोकसुंदरीनारिसुं, जेम कम-  
 लासुं गोपालरे ॥ जू० ॥ ३० ॥ बीजे खंडे पू-  
 रण थइ, ए ठठी ढाल रसालरे ॥ जश गातां श्री  
 सिद्धचक्रना, होए घर घर मंगल मालरे ॥ ३१ ॥  
 दोहरा ॥ विलसे धवल आपार सुख, सौ-  
 जागी सरदार ॥ पुण्यबले सावि संपजे, वंछित

सुख निरधार ॥ १ ॥ सामग्री करजतणी, प्राप  
क कारण पंच ॥ इष्टहेतु पुण्यज वडुं, मेले अ-  
वर प्रपंच ॥ २ ॥ त्रिलोकसुंदरि श्रीपालनो, पू-  
ण्ये हुवो संबंध ॥ हिवे शृंगारसुंदरितणो, कहीं  
शुं लान प्रबंध ॥ ३ ॥

ढाल सातमी ॥ साहेबा मोतीडो हमारो, ए-  
देशी ॥ एक दिन राजसजाए आव्यो, चर कहे  
अचरज मुज मन जाव्यो ॥ साहेबा रंगीला ह-  
मारा, मोहनारंगीला ॥ दलपत्तननोवे महाराजा  
॥ धरापाल जस बेन पख ताजा ॥ सा० ॥ ए आं  
कणी ॥ १ ॥ राणी चोराशी तस गुणखाणी, गुण  
मालावे प्रथम वखाणी ॥ पांचवेटी उपर गुण पे-  
टी, शृंगारसुंदरीवे तसवेटी ॥ सा० ॥ २ ॥ पल्लव  
अधर हसित सितफूल, अंग चंग कुचफल बहु  
मूल ॥ जंगमतेवे मोहनवेली, चालति चाल जसी  
गज गेली ॥ सा० ॥ ३ ॥ पंडिता विचक्षणा प्रगु-  
ण नामे, निपुणा दक्षा सम परिणामे ॥ तेहनी

पांच सखी ठेप्यारी, सहुनी मति जिन धर्म सरी  
 ॥ सा० ॥ ४ ॥ ते आगल कहे कुंवरी साचूं, आ-  
 पणं मन मत होजो काचूं ॥ मुख कारण जिनम  
 तनो जाण, वर वरवो बीजो अप्रमाण ॥ सा० ॥  
 ॥ ५ ॥ जाण अजाणतणोजे जोग, केल कथारत  
 णी संयोग ॥ व्याधि मृत्यु दारिद्र वनवास, अ-  
 धिको कुमित्र तणो सहवास ॥ ६ ॥ हेम भु-  
 द्राए अकिकन ठाजे, शो जलधर जे फोकट गा  
 जे ॥ वर वरवो परखीने आप, जेम नहोय क-  
 र्म कुजोडालाप ॥ सा० ॥ ७ ॥ कहे पंडिता प-  
 रनुं चित्त, जाव लखीजे सुणि एक चित्त ॥ सी-  
 थे पाक सुनट आकारे, जेम जाणिजे शुद्ध प्र-  
 कारे ॥ सा० ॥ ८ ॥ करी समश्या पद तुमे दा-  
 खो, जेपूरे ते चित्तमां राखो ॥ एमनिसुणी क-  
 हे कुंवरी तेह. वरुं समश्या पुरे जेह ॥ सा० ॥  
 ॥ ९ ॥ तेह प्रसिद्धि सुणीने मिलिया, बहु पंडित  
 नर बुद्धि बलिया ॥ पण मतिवेग तिहां नबि चाले,

वायु वेगे नवि डुंगर हाले ॥ सा० ॥ १० ॥ पंच स-  
 खीयुत ते नृप बेटी, चित्त परखे करी समझ्या मोटी  
 ॥ सुणिय कहे जिन केम पुरिजे, परमन द्रह किम  
 थाह लहीजे ॥ सा० ॥ ११ ॥ सुणिय कुमार च-  
 मक्यो आवे, घरे कहे मुज हार प्रनावै ॥ दल  
 पत्तननयर ज्यां नृप कन्या, त्या पहोतो सखीयु  
 त ज्या धन्या ॥ १२ ॥ देखी कुंअर अमरसम ते  
 ह, चित्तचमकी कहे जों मुज एह ॥ पुरे समझ्या  
 तो हुं धन्य, पुरि प्रतिज्ञा हुए कहे पुण्य ॥ सा०  
 ॥ १३ ॥ पुढे कुंअर समझ्या कोण, कुअरीसंके  
 त सखी कहे गौण ॥ शीशे कुंअर दीये करंपू  
 रे. पुतल तेइ रहेन अधुरे ॥ सा० ॥ १४ ॥ पंडिता उ  
 वाच ॥ मनवंछित फल होय ॥ पुतलोउवाच ॥  
 दोहरा ॥ अरिहंताइ नव पर्य, नियमन धर  
 जे कोय ॥ निश्चे तस सुरनरस्तवे, मनवंछित फल  
 होय ॥ १ विचक्षणोवाच ॥ अवरम ऊखो आल ॥  
 पुतलोउवाच ॥ अरिहंतदेव सुसाधु गुरु, धर्मज



दया विशाल ॥ जपो मंत्र नवकार तुम, अवर म  
 ऊँखो आल ॥ २ ॥ प्रगुणानुवाच ॥ करि सफ  
 लो अप्पाण ॥ पुतलानुवाच ॥ आराहीने देव गु  
 रु, देइ सुपत्ते दान ॥ तप संजम उवयार करि,  
 करि सफलो अप्पाण ॥ ३ ॥ निपुणानुवाच ॥  
 जित्तो लिख्यो निलाड ॥ पुतलानुवाच ॥ रे म  
 न अप्पा खंतिधर, चिंतां जाल म पाड ॥ फल  
 तितोहिज पामिये, जित्तो लिख्यो निलाड ॥ ४ ॥  
 दहानुवाच ॥ तस तिहुंयण जिणदास ॥ पुत  
 लानुवाच ॥ अष्ठि नवांतरसंचियु, पुन्न सुमुग्गल  
 जास ॥ तसबल तसमई तससरी, तस तिहुंयण  
 जिणदास ॥ ५ ॥ गृंगारसुंदरीनुवाच ॥ रविपहे  
 ला ऊगंत ॥ पुतलानुवाच ॥ जीवतां जगजश  
 नही, जशविण कां जीवत ॥ जे जश लई आ  
 थम्या, रविपहेला ऊगंत ॥ ६ ॥ ढाल पुर्वनी ॥  
 पुरे कुंअर समझ्या सारी, आनंदित हुइ नृपति  
 कुमारी ॥ धरे कुमार ते त्रिजुवनसार, गुणनिधा

न जीवत आधार ॥ सा० ॥ १५ ॥ पुतलमुखे  
 समश्या पुरावी, राजाप्रमुख जन सवि हुआ जा  
 वी ॥ ए अचरन तो कहींए न दीठुं, जेम जोइ  
 ए तेम लागे मीठुं ॥ सा० ॥ १६ ॥ राजा निज  
 पुत्री परणावे, पांच सखीयुत मनने जावे ॥ पां  
 णिग्रहण महोत्सव कीधो, दान अतुल मनवांछि  
 त दीधो ॥ सा० ॥ १७ ॥ सातमी ढाल ते ती  
 जे खडे, पूरण हुइ गुणराग अखंडे ॥ सिद्धचक्र  
 गुण जो गाइजे, विनय सुजश सुख तो पाइ  
 जे ॥ सा० ॥ १८ ॥

दोहरा ॥ अंगनद्व इणे अवसरे, देखी कुंअ  
 रचरित्र ॥ कहे सुणो एक माहरुं, वचन विचार  
 पवित्र ॥ १ ॥ कोल्लागपूरनो राजियो, अवे पुरंदर  
 नाम ॥ विजया राणी तेहनी, लावाणम लीलाधा  
 म ॥ २ ॥ सात पुत्र उपर सुता. जपसंदरी वे  
 तास ॥ रंजा लघु ऊची गई, जोड न आवे जा  
 स ॥ ३ ॥ लावाणम रूप अलंकरी, ते देखी क

त्र शिरे धरयां, मुखकंज अनुसरत मरालरे ॥  
 वि० ॥ ली० ॥ ४ ॥ सोले सामंते प्रणमितो, हय  
 गय मणिमोती जेटरे ॥ वि० ॥ चतुरंगी सेनाए  
 परिवरघो, चाले जननी नमवा नेटरे ॥ वि० ॥  
 ॥ ली० ॥ ५ ॥ गाम ठामे ते आवंतडो, नृपे प्र  
 णमितो सुपवित्तरे ॥ वि० ॥ जेटी जतो बहु जे  
 टणे, सोपारय नगरे पढुतरे ॥ वि० ॥ लि० ॥  
 ॥ ६ ॥ ते परिसर सैन्ये परिवरघो, आव्यो ते श्री  
 पालरे ॥ वि० ॥ कहे जाकि शक्ति नवि दाखवे,  
 शुं सोपारय नरपालरे ॥ वि० ॥ ली० ॥ ७ ॥ क  
 हे नर परधान नवि एहनो, अपराधअठे गुण  
 वंतरे ॥ वि० ॥ नामे महसेनठेए जलो, तारा रा  
 णीनो कंतरे ॥ वि० ॥ ली० ॥ ८ ॥ पुत्री तस कू  
 खे उपनी, ठे तिलकसुंदरी नामरे ॥ वि० ॥ तेतो  
 त्रिजुवर्नातिलकसमी बनी, हरे तिलोत्तमानुं धामरे  
 ॥ वि० ॥ ली० ॥ ९ ॥ ते तो सृष्टिठे चतुर मदनत  
 णी, अंगे जीव्यां सावि उपमानरे ॥ वि० ॥ श्रु

ति जड जे ब्रह्मा तेहनी. रचनावे, सकल सप्ता  
 नरे ॥ वि० ॥ ली० ॥ १० ॥ दीर्घपीठे डंपी सा सुता.  
 कीधा बहु विध उपचाररे ॥ वि० ॥ मणीमंत्र औ  
 पध बहु आपियां, पण नथयो गुण ते लिंगाररे  
 ॥ वि० ॥ ली० ॥ ११ ॥ ते माटे दुःखे पीडीयो,  
 महसेन नृपति तस तातरे ॥ वि० ॥ नवि आ  
 व्यो इणे कारण, मत गणजो बीजो घातरे, ॥  
 वि० ॥ ली० ॥ १२ ॥ राजा कहे किहावे ते दाख  
 वो, तो कीजे तस उपकाररे ॥ वि० ॥ एम कही  
 तुरंगारूढ थयो, दीठां जातां बहु नरनाररे ॥  
 ॥ वि० ॥ ली० ॥ १३ ॥ समशाने लेइ जाती जा  
 णी, त्यां पहोतो ते नरनाहरे ॥ वि० ॥ कहे दाखो  
 मुज हूं सज करूं, मुर्छितने मदियो दाहरे ॥  
 ॥ वि० ॥ ली० ॥ १४ ॥ मादियल मुकी ते थानके.  
 करिहार न्हवण अनिपेकरे ॥ वि० ॥ सज करी  
 सवि लोकना चित्तसुं, थइ वेठी धरीय विवेकरे ॥  
 वि० ॥ ली० ॥ १५ ॥ महसेन मूदित कहे राति

यो, वत्स तुजनेएशुं होतरे ॥ वि० ॥ जो नावत  
 ए वडजागीयो, न करत उपगार उद्योतरो ॥ वि०  
 ॥ ली० ॥ १६ ॥ तुज प्राण दीधावे एहणे, तुं प्रा  
 ण अधिकठे मुजरे ॥ वि० ॥ एहने तुं देवी मु  
 ज घटे, ए जाणजे हृदयनुं गुजरे ॥ वि० ॥ ली०  
 ॥ १७ ॥ स्निग्ध मुग दृग देखतां, एमं कहेतां ते  
 श्रीपालरे ॥ वि० ॥ मन चिंते माहरा प्रेमनी, गति  
 एहसुंठे असरालरे ॥ वि० ॥ ली० ॥ १८ ॥ जो  
 प्राण कहुं तो तेदथी, अधिको केम लखीए प्रे  
 मरे ॥ वि० ॥ कहुं जिन्नतो अनुअव केम मिले,  
 अवीरोध उजय गति केमरे ॥ वि० ॥ ली० ॥ १९ ॥  
 एम स्नेहलसा निज अंगजा, श्रीपालकरे दिए  
 जुपरे ॥ वि० ॥ परणीसा आठे तस मिली, द  
 यिता अति अद्भुत रूपरे ॥ वि० ॥ ली० ॥  
 ॥ २० ॥ अरु दृष्टिसहित पण विरातिने, जेम वं  
 ठे समकितवंतरे ॥ वि० ॥ अडप्रवचनमात स  
 हित मुनि, समताने जेम गुणवंतरे ॥ वि० ॥

॥ ली० ॥ २१ ॥ अड बुद्धिसहित पण सिद्धिने,  
 अड सिद्धिमहित पण मुक्तिरे ॥ वि० ॥ प्रिया  
 आठ सहित पण प्रथमने, नित्य ध्यावे ते इण  
 युक्तिरे ॥ वि० ॥ ली० ॥ २२ ॥ उत्कंठित गचि  
 त तेहसुं, वली जनानिने नमवा हेजरे ॥ वि० ॥  
 श्रीपाल प्रयाण ते पूरियु, देवरावे डका तेजरे ॥  
 ॥ वि० ॥ ली० ॥ २३ ॥ हयगंय रथं नम माणि  
 कंचणे, वली सत्त वत्त बहु मुल्लरे ॥ वि० ॥ प  
 गे-पगे नेटेजे नृप प्रत्ये, तेहनं चक्रवर्तिसमं शु  
 ल्लरे ॥ वि० ॥ ली० ॥ २४ ॥ तस सैन्य  
 जरे नारित महि, अहिपाति फण मणिगण प्रो  
 तरे ॥ वि० ॥ तेणे गिरि पण जाणु नवि-गि  
 रथा, शशि मूर नयण विधि जोतरं ॥ वि० ॥  
 ॥ ली० ॥ २५ ॥ मरहठ सोरठ मेवाडना, व  
 ली लाट ओटना जुपरे ॥ वि० ॥ ते आव्यो  
 सधला साधतो, मालवदेशे रविरूपरे ॥ वि० ॥  
 ॥ ली० ॥ २६ ॥ आगम निसुणी परचक्रनो,

चर मुखथी मालवरायरे ॥ वि० ॥ जयनीत  
 ते गढने सज करे, तेइनुं नवि तेज खमायरे ॥  
 ॥ वि० ॥ ली० ॥ २७ ॥ कापड चोपरु तण  
 कण घणा. संग्रहे ते इंधण नीररे ॥ वि० ॥  
 सन्नद्ध होए सुजट वडा, कायर कंप्पे नही धी  
 ररे ॥ वि० ॥ ली० ॥ २८ ॥ एम उज्जयणी  
 हुइ नगरी ते, लोके संकिरण समीपरे ॥ वि०  
 ॥ वींटी श्रीपाल सुजटे तदा, जेम जलधि अं  
 तरद्वीपरे ॥ वि० ॥ ली० ॥ २९ ॥ डेरा दी  
 धा सवि सैन्यना, पहेली हुइ रयणी जामरे ॥  
 ॥ वि० ॥ जननी घरे पहीतो प्रेमसुं, नृप हा  
 र प्रजावे तामरे ॥ वि० ॥ ली० ॥ ३० ॥ ढा  
 ल पुरी थइ आउमी, पुरो हुवो त्रीजो खंडरे ॥  
 ॥ वि० ॥ होए नव पद विधि आराधतां, जि  
 न विनय सुजश अखंडरे ॥ वि० ॥ ली० ॥  
 ॥ ३१ ॥ चोपाइ ॥ खंरु खंड मिठाइघणी.  
 श्रीश्रीपालचरित्रे भणी ॥ ए वाणी सुरतरुवेल

ढी, कगी द्राखने कशिगेलडी ॥ १ ॥ इति श्री  
मन्नहोपाध्याय श्री विनयविजयगणी उपक्रांते  
महोपाध्याय श्री यशोविजयगणी पुरिते श्री  
श्रीपालचरित्रे प्राकृतप्रबंधे विमलेश्वरदेवेनार्षि  
तम हारप्राप्ति मनोज्ञाष्टदायक पटकन्यायाणिग्र  
हणकरणनोनाम तृतीयखंड समाप्त ॥ ६९ ॥

॥ अथ श्री चतुर्थखंड प्रारंभ ॥

दोहरा ॥ त्रीजो खंड अखंड रस, पुरण हु  
उ प्रमाण ॥ चोथो खंड हिवे वरणवुं, श्रोता मु  
णो सुजाण ॥ १ ॥ गीश धुणावे चमकिउं, रो  
माचित करि देह ॥ विकसित नयन वदन मु  
दा, रस दिए श्रोता तेह ॥ २ ॥ जाणज श्रोता  
आगले, वक्ताकला प्रमाण ॥ ते आगल घनशुं  
करे, जे मगशीलपापाण ॥ दर्पण अंधा आग  
ले. वहिरा आगल गीत ॥ मूरख आगल र  
सकथा. वणये एकज गीत ॥ ४ ॥ ते माटे स  
ज थइ मुणो, श्रोता दर्जि कान ॥ बुजे तेहने



राज्यं, लक्ष नचूले ज्ञान ॥ ५ ॥ आगे आगे  
रसं घणो, कथा सुणंतां थाय ॥ हिवे श्रीपाल  
चरित्रना, आगल गुण कहेवाय ॥ ६ ॥

ढाल पहेली ॥ धन दिनवेलाधनघडी तेह,  
अचिरारो नंदन आदि जिन नेटशंजी, एदेशी ॥  
रहियारे आवास दुवार, वयण सुणे श्रीपाल सो  
हामणांजी ॥ कमलप्रचारे कहे एम, मयणा प्र  
त्ये मुज चिते ए दुःख घणांजी ॥ ७ ॥ वींटीठे  
परचक्र, नगरी सघलुरे लोक हिलोलीयुंजी ॥  
शीगति होशे एणी ठाम, सूतने सुख होजो बीजु  
घोलियुंजी ॥ ८ ॥ घणारे दिवस थया तास, वा  
लम तुज जे गयो देशांतरेजी ॥ हजीय न आ  
वी कांड शुद्धि, जीवेरे माता दुःखणी नवि मरे  
जी ॥ ९ ॥ मयणारे बोले मकरो खेद, मधरो  
जय मनमां परचक्रनोजी ॥ नवपदध्यानेरे पाप  
पलाय, दुरितन चारोठे ग्रह वक्रनोजी ॥ १० ॥ अ  
री करी सागर हरीने व्याल, जलण जलोदर वं

धन, जय सवे नी ॥ जायरे जपनां नवपद जाप,  
 लहि एरे संपत्ति इह जवे परजवे जी ॥ ५ ॥ नवी  
 जारे खोजे कोण प्रमाण, अनुभव जाग्या मुज ए  
 वातनोजी ॥ हुनरे पुजामा अनोपम जावि, आ  
 जरे संध्याए जगतातनोजी ॥ ६ ॥ तद्गर्त चि  
 त्त समय विधान, जाविनी वृद्धि जवजय अति  
 घणोजी ॥ विस्मय पुलक प्रमोद प्रधान, लक्ष्  
 ण एवे अमृतक्रियातणोजी ॥ ७ ॥ अमृतनो  
 लेश लह्यो एकवार, बीजारे औपव करवा जर्त  
 वि पडेजी ॥ अमृतक्रियाते लहि एकवार, बी  
 जारे साधन विण शिव नवि अरुजी ॥ ८ ॥ ए  
 हवोरे पुजामां मुज जाव, आव्योरे जाव्यो ध्या  
 न सोहामेजी ॥ हेजी अन माए मन आणंद,  
 क्षण क्षण होये पुलक निःकारणेजी ॥ ९ ॥ फर  
 केरे वाम नयनने उगोज, आज मिलेवे वं लत  
 माहरोजी ॥ बीजुरे अमृतक्रिया सिद्धरूप, अतुर  
 त फलेवे त्या नवि आतरोजी ॥ १० ॥ किमल

प्रजा कहेरे वढ साच, ताहरी जनि अमृत व  
 से सदाजी ॥ ताहरूरे वचन होशे सुप्रमाण, त्रि  
 विध प्रत्ययवे ते साध्यो मुदाजी ॥ ११ ॥ करवारे  
 वचन प्रियानुं साच, कहेरे श्रीपाल ते बार उ  
 घामीएजी ॥ कमलप्रजा कहे एसुतवाण, मयणा  
 कहे जिनमत नहोये मुधाजी ॥ १२ ॥ उघाड्यां बार  
 नमे श्रीपाल, जननीना चरणसरोज सुहंकरू  
 जी ॥ प्रणमीरे दयिता विनय विशेष, बोलावे  
 तेहने प्रेम मनोहरूती ॥ १३ ॥ जननीरे आ  
 रोपी निजखंध, दयितारे निज हाथे लइ राग  
 सुजी ॥ पहोतोरे हार प्रजावे राय, शिविर आ  
 वासे उल्लासित वेगसुजी ॥ १४ ॥ बेसाडीरे न  
 द्रासन नरनाथ, जननीने प्रेमे एणीपरे विनवेजी  
 ॥ माताजी देखोए फल तास, जपीया में नव  
 पद जे सद्गुरु दियाजी ॥ १५ ॥ बहुरोरे आ  
 ठे लागी पाय, सासुने प्रथमप्रिया मयणातणेजी  
 ॥ तेइनीरे शीश चढावी आशीष, मयणारे

आगल वात सयल जणेजी ॥ १६ ॥ पूठेरे म  
 यणाने श्रीपाल, ताहरोरे तात आणावुं किएप  
 रेजो ॥ सा कहे कंठे धर्गने कुहारु, आवेतो  
 कोई आशातना नवि करेजी ॥ १७ ॥ कहेवरा  
 व्युं दूत मुखेतिणीवार, श्रीपाले राजाने ते वय  
 णडुजी ॥ कोप्योरे मालवराजा ताम, मंत्री कहे  
 नवि कीजे एवडुंजी ॥ ॥ चौथे खंने ए पहेली  
 ढाल, खंड साकरथी मीठी ए जणीजी ॥ गाये  
 जे नवपद सुजश विलास, कीरति बाधे जगमां  
 तेहतणीजी ॥ १९ ॥

दोहरा ॥ मंत्रि कहे नवि कोपिए, प्रबल प्र  
 तापी जेह ॥ नाखाने शुं कीजिए, सूरज सार्मी  
 खेह ॥ १ ॥ उद्धत ऊपर आथड्यु, पसरंतु पण  
 धाम ॥ डलाए जिम दीपनुं, लागे पवन उद्दाम  
 ॥ २ ॥ जे किरतारे वडा किया, तेसु न चाले  
 रीश ॥ आम अंदाजे चालिये, नामीजे तस  
 शीश ॥ ३ ॥ दूत कहे ते कीजिए, अनुचित करे

बलाये ॥ जेनी वेला तेहनी, रक्षा एहज न्याय  
 ॥ ४ ॥ एवां मंत्रिवयण सुणी, धरी कुहामो कंठ ॥  
 मालवनरपति आवियो, शिविरतणे उपकंठ  
 ॥ ५ ॥ ते श्रीपाले ढोडावियो, पहिराव्या अलंकार  
 ॥ सनामध्य तेढ्यो नृपति, आप्युं आसन सार  
 ॥ ६ ॥ तव मयणा निज तातेने, कहे बोल जे  
 मुज ॥ कर्मवशे वर तुमे दियो, तेनुं जुओ ए  
 गुज ॥ ७ ॥ तव विस्मित मालवनृपति, जामा  
 उल प्रणमत ॥ कहे न स्वामि तुज ओलख्यो,  
 गुरुन ने गुणवंत ॥ ८ ॥ कहे श्रीपाल न माहरो,  
 एवढो एह बनाव ॥ गुरुदर्शित नवपदतणो, ए  
 वे प्रबल प्रभाव ॥ ९ ॥ ते अचरज निशुणी मि  
 ल्यो, तिहां विवेक उदार ॥ सौजाग्य सुंदरी रू  
 पसुंदरी, प्रमुख सयल परिवार ॥ १० ॥ स्वज  
 न वर्ग सघलो मिल्यो, वर्यो आणांद पूर ॥ ना  
 टककारण आदेशे, श्री श्रीपाल सनूर ॥ ११ ॥  
 ढाल बीजी ॥ लुंवे लुंवे वरसालो मेह, आ

ज दहाडो धणरी ब्रिजनो होलाल एदेशी ॥ हो  
 जी पहेलु पेडुं ताम, नाचवा ऊठे आफणी हो  
 लाल ॥ होजी मुल नटी पण एक, नवि ऊठे ब  
 हुपरे जणी होलाल ॥ १ ॥ होजी ऊठाडी बहु  
 कष्ट, पण उन्हाइ नसा धरे होलाल ॥ होजी दु  
 हो करी सविपाद, दुहो एक मुखे उच्चरे होला  
 ल ॥ २ ॥ दोहरो ॥ क्या मालव क्या शखपुर,  
 क्यां बठवर क्या नट ॥ सुरसुंदरी नचाविए, देवे  
 दल्यो मरट्ट ॥ १ ॥ ढाल पुर्वनी ॥ होजी वचन  
 सुणी तव तेह, जननी जनकादिक सबे होलाल ॥  
 होजी चित्ते विस्मित चित्त, सुरसुंदरी केम संज  
 ने होलाल ॥ ३ ॥ होजी जननी कंठे विलग्ग,  
 एगी जनके रोवती होलाल ॥ होजी सघलो क  
 ह्यो वृत्तंत, जे तुमे ऋद्धि दीधी हती होलाल ॥  
 ॥ ४ ॥ होजी हुंते ऋद्धि समेत, शखपुरीने परिग  
 रे होलाल ॥ होजी पहोती मुहुर्त हेन, नाथ स  
 हित रही बाहरे होलाल ॥ ५ ॥ होजी सुनट ग

या केइ गेह, गोठे साथे निशा रही होलाल ॥  
 होजी जामाता तुज नठ, धाड पडी तिहां हुं अ  
 ही होलाल ॥ ३ ॥ होजी वंची मुल्ये धाड, सुन  
 ट देश नेपालमां होलाल ॥ होजी सारथवाहं ली  
 ध, फले लख्युं जे जालमां होलाल ॥ ७ ॥ हो  
 जी तेणे पण बब्बरकुल, महाकाल नगरे धरी  
 होलाल ॥ होजी हाटे बेची वेश, लेइ शीखावी  
 नटी करी होलाल ॥ ८ ॥ होजी नाटकाप्रिय महा  
 काल, नृप नटपेटकसुं अही होलाल ॥ होजी वि  
 विध नचावी दीध, मयणसेना पातिने सही हो  
 लाल ॥ ९ ॥ होजी नाटक करतां तास, आगे  
 दिन केता गया होलाल ॥ होजी देखी आपणुं  
 कुटुंब, उल्लस्युं दुःख तुम हुइ दया होलाल  
 ॥ १० ॥ होजी मयणादुःख तव देखी, निज गु  
 रुवयणे मद कीयो होलाल ॥ होजी ते मयणापति  
 दास, जाये अब भुज सिलकीयो होलाल ॥ ११ ॥  
 होजी एकज विजयपताक, मयणा सयणामां ल

हे होलाल ॥ होजी जेहनं शील सलील, महि  
 माए मृगभद्र मह महे होलाल ॥ १२ ॥ होजी  
 मयणाने जिनधर्म, फलिउ बलीउ सुरतरु हो  
 लाल ॥ होजी मुजने मिथ्याधर्म, फलिउ विपफल  
 विपतरु होलाल ॥ १३ ॥ होजी एकज जलाधि उत्पन्न,  
 अमिय विपेजे आतरो होलाल ॥ होजी अम वे  
 उ बेहेनीमाहे, तुमेवे मत कोइ पांतरो होलाल ॥  
 ॥ १४ ॥ होजी मयणा निजकुललान, उद्योत्तक  
 मणिदीपीका होलाल ॥ होजी हुंतुं कुलमलहेत,  
 सघन निशानी जीपिका होलाल ॥ १५ ॥ हो  
 जी मयणा दीठे होय, समकित शुद्ध सोहामणुं  
 होलाल ॥ होजी मुज दीठे मिथ्यात्व, धीठाइ हो  
 ए अतिघणु होलाल ॥ १६ ॥ होजी एवा दो  
 ली बोल, सुरसुंदरीए उपाइउ होलाल ॥ होजी  
 जे आनंद नहोत, नाटक शतके पण कीउ हो  
 लाल ॥ १७ ॥ होजी श्रीपालं बडवेग, हिवे अ  
 रिदमण तेडाविथो होलाल ॥ होजी सरसुंदरी



तसदीध, बहु ऋद्ध बोलावतु होलाल ॥ १८ ॥  
 होजी ते दंपाति श्रीपाल, मयणाने सुपसाजले  
 होलाल ॥ होजी पामे ममकित शुद्ध, अध्यवसाए  
 अति नले होलाल ॥ १९ ॥ होजी कुष्टी पुरुष शत  
 सात, मयणा वयणे लही दया होलाल ॥ होजी  
 आराधी जितधर्म, निरोगी सघला थया होलाल  
 ॥ २० ॥ होजी ते पण नृप श्रीपाल, प्रणमे बहुले  
 प्रेमसु होलाल ॥ होजी राणीम दीए नृप तास,  
 वदन कमल नित्य उल्लस्युं होलाल ॥ २१ ॥  
 होजी आवी नमे नृपपाय, मतिसागर पण मं  
 त्रीवी होलाल ॥ होजी पूरव परे नरनाह, तेह अ  
 मात्य कियो कवि होलाल ॥ २२ ॥ होजी सुस  
 रा सालाजुप, माउल बीजा पण घणा होलाल ॥  
 होजी तेहने दीए बहु मान, नृप आदरनी नहीं  
 मणा होलाल ॥ २३ ॥ होजी जालमिलित कर  
 पद्म, सवि सेवे श्रीपालने होलाल ॥ होजी ए  
 दीन विनवे मंत्री, मतिसागर जुपालने हो

लाल ॥ २४ ॥ होजी चोथे खंडे ढाल, बीजी  
हुइ-सोहामणी होलाल ॥ होजी गुणगातां सिद्धच  
क्र, जश कीर्ति बाधे घणी होलाल ॥ २५ ॥

दोहरा ॥ मतिसागर कहे पितृपदे, ठव्यो बाल  
पण जेण ॥ उठावियो ते तुज अरि, ते सहि दित्तम  
एण ॥ १ ॥ अरि कर गतजे नवि लिए, शक्ति ठते पि  
तरज्ज ॥ लोक हसे बल फोकतस, जिम शारदघ  
नमज्ज ॥ २ ॥ ए बल ए ऋधि ए सकल, सै  
न्यातणो विस्तार ॥ शुं फलजो लेशो नही, ते  
निजराज उदार ॥ ३ ॥ नृप कहे साचुं ते क  
हुं पणवे चार उपाय ॥ शाम होय तो दंड  
श्यो, साकरे पण पित जाय ॥ ४ ॥ अहो बु  
पुद्धि मंत्री जणे, दूत चतुरमुख नाम ॥ नृप शि  
खात्री मोकल्यो, पहातो चंपा ठाम ॥ ५ ॥

ढाल बीजी ॥ राग बगाला ॥ किसके चेले कि  
सके पूत, आतम राम एकला अवधूत ॥ मन  
मानल ए देशी ॥ अजितसेनचे ज्या नृपाल, ते

आगल कहे दूत रसाल ॥ साहेब सेविर ॥ क  
 ला शीखवा जाणी बाल, जे तें मोकल्यो श्रीपा  
 ल ॥ सा० ॥ सकल कला तेणे शीखी सार,  
 सेना लइ चतुरंग उदार ॥ सा० ॥ आव्योढे तुज  
 खंधनो नार, उतारेढेते निरधार ॥ सा० ॥ २ ॥  
 जीरण थंनतणो जे नार, नवो ठवीजे ते निर  
 धार ॥ सा० ॥ लोके पण युक्तवे एह, राज देह  
 तुमे दाखो नेह ॥ सा० ॥ ३ ॥ बिजा पयपंकज  
 तस नूप, सेवे बहु नाक्ति अनुरूप ॥ सा० ॥  
 तुमे नवि आव्याउपायो विरोध, नवि असम  
 र्थ वे तेहसुं शोध ॥ सा० ॥ ४ ॥ किहां स  
 रसव किहां मेरु गिरिंद, किहां तारा किहां शा  
 रदचंद ॥ सा० ॥ किहां खद्योत किहां दिननाथ,  
 किहांसाथर किहां बिल्लर पाथ ॥ सा० ॥ ५ ॥ कि  
 हां पंचायग्रण किहां मृगवाल, किहां ठकिर किहां  
 सोवनथाल ॥ सा० ॥ किहां कोद्रव किहां कूर कपूर,  
 किहां कुकस ने किहां घृत पूर ॥ सा० ॥ ६ ॥ किहां

शून्य वेडी किहां आराम, किहां अन्याया किहां  
 नृपराम ॥ सा० ॥ किहा वाघने किहां वली वी  
 ग, किहा दयाधर्म किहां वली याग ॥ सा० ॥  
 ॥ ७ ॥ किहां जुठने किहां वली साच, किहां  
 रत्न किहा खंडित काच ॥ सा० ॥ चढते उठेवे  
 श्रीपाल, पडते तुम सरखा चूपाल ॥ सा० ॥  
 ॥ ८ ॥ जो तुं निज जीवित नविरूठ, तो प्र  
 णमी करी तेहज तुठ ॥ सा० ॥ जो गर्वित वे  
 देखी रऊ, तो रण करवा थाजे सऊ ॥ सा० ॥  
 ॥ ९ ॥ तस सैनासागर मही जाण, तुज  
 दल साथुचूर्ण प्रमाण ॥ सा० ॥ मोटासु नवि  
 कीले जुंऊ, सवी कहे एम वूऊ अबूऊ ॥  
 सा० ॥ १० ॥ बोली एम रह्यो जव दू  
 त, अजितसेन बोल्हो थइ चूत ॥ राजा न  
 ही मीले ॥ कहेजे तु तुज नृपने एम, दूतप  
 णानो जोवे प्रेम ॥ रा० ॥ चंपानगरीनो राजा न  
 ही मीले ॥ ११ ॥ आदि मध्य अंतेवे जाण,

मधुरे अमल कटु तिक्त प्रमाण ॥ रा० ॥ जोज  
 न वचने सम पीरणाम, तेणे चतुरमुख जे ता  
 हरुं नाम ॥ रा० ॥ १२ ॥ निज नाहिं तेह अ  
 मारो कोय, शत्रुनाव वहिएणे दोय ॥ रा० ॥  
 जीवतो मुक्यो जाणी बाल, तेणे अमे निबल  
 बलियो श्रीपाल ॥ रा० ॥ १३ ॥ निज जीवित  
 ने हुं नहि रूठ, रूठयो तस जमगाय अपूठ ॥  
 जेणे जगायो सुता सिंह, मूज कोपे तस नरहे लीह  
 ॥ रा० ॥ १४ ॥ जस बल सायर साथु प्राय,  
 जेह निबलते बीजा राय ॥ रा० ॥ तेमां हुं व  
 डवानल जाण, सविते शोषुं नकरूं काण ॥  
 ॥ रा० ॥ १५ ॥ कहेजे दूत तुं वेगे जाई, आ  
 वूंहुं तुज पुठे धाई ॥ रा० ॥ बल परखीजे रण  
 मदान, खड्गनी पृथ्वीने विद्यानुं दान ॥ रा० ॥  
 ॥ १६ ॥ चौथे खंडे त्रीजी ढाल, पूरण हुइ गु  
 ण राग बंगाल ॥ रा० ॥ सिद्ध चक्र गुणगावे जेह,  
 विनय सुजश सुख पावे तेह ॥ रा० ॥ १७ ॥

दोहरा ॥ बचन कहे नयरीतणां, दूत जई  
 अति वेग ॥ कडूआं काने ते सुणी, हुओ श्री  
 पाल सतेग ॥ १ ॥ उंच नूमि तटिनीतटे, सेना  
 करि चतुरंग ॥ चंपा दिश जइ तिण दिया, प  
 ट आवास उत्तंग ॥ २ ॥ सामो आव्यो सबल  
 तव, अजितसेन नरनाह ॥ मांडो मांहि दल वे  
 उ मिलाया, सगर्व अधिक उछाह ॥ ३ ॥  
 ढाल चौथी ॥ कमखानी देशी ॥ चंग रणरंग  
 मंगल हुआं अति घणां, नूरि रणतूर अविदूर  
 वाजे ॥ कौतुकी लाख देखण मिलाया देवता, ना  
 द दुंदुंनितणे गयण गाजे ॥ चं० ॥ १ ॥ उग्र  
 ता करण रणनूमि त्यां शोधिए, रोधिए अव-  
 धि करी शस्त्र पूजा ॥ बोधिए सुनटकुलवंशश  
 सा करी, योधिए कवण विण तून दूजा ॥ चं०  
 ॥ २ ॥ चरचिए चारू चंदनरसे सूनटतनु, अ  
 रचिए चंपके मुकुट शीशे ॥ सोहिए हठ वर  
 वीरवलये तथा, कल्पतरु परे वन्या सुनट दीसे

॥ चं० ॥ ३ ॥ कोइ जननी कहे जनक मत ला  
जवे, कोइ कहे माहरुं बिरुद राखे ॥ जनक प  
ति पुत्र तिहु वीर जश उज्जला, सोहि धन ज  
गतमां आणिय आखे ॥ चं० ॥ ४ ॥ कोइ र  
मणी कहे हसिय तुं सहिश किम, समर करवा  
ल शर कुंत धारा ॥ नयण बाणे हणयो तूज में  
वश कियो, त्यांन धीरज रही कर विचारा ॥  
॥ चं० ॥ ५ ॥ कोइ कहे माहरु मोइ तुं मत क  
रे, मरण जीव तन तुज पीठ बांडुं ॥ अधररसे  
अमृतरस दोय तुज सुलजबे, जगत जय हेतु  
हो अचल खांडु ॥ चं० ॥ ६ ॥ इम अधिक कौ  
तुके वीररस जागते, लागते वचन हुआ सुनट  
ताता ॥ सूर पण क्रूर थइ तिमिरदल खंडवा,  
पूर्व दिशि दाखेव किरण रातां ॥ चं० ॥ ७ ॥  
रोपि रणथंन संमरंन करि अति घणो, दोइ द  
ल सुनट तव सबल जुंजे ॥ नूमिने नोग्यता जोइ  
निज योग्यता, अमल आरोगता रण नमूंजे ॥ चं०

॥८॥ निर जिम तीर वरसे तदा जोद्ध घन, संचरे  
 खगपरे धवल नेजा ॥ गाज दल साज ऋतु आ  
 इ पावसतणी, बीज जिम कुंत चमके सतेजा ॥  
 चं० ॥ ९ ॥ नाड ब्रनांड अंतखंड जे करी श  
 के, उठले तेहवा नालगोला ॥ वरसता अग्नि  
 रणमग्न रोपे जरया, मानु ए यमतणा नयणडो  
 ला ॥ चं० ॥ १० ॥ केइ ठेदे शरे अरितणां  
 शिर सुनट, आवतां केइ अरि वाण जाले ॥  
 केइ असि ठिन्न करि कुज मुक्ताफले, ब्रम्हरथ  
 विहगमुख आस घाले ॥ च० ॥ ११ ॥ मद्यरस  
 सद्य अनवद्य कवि पद्य नर, बंदिजन विरुदथी  
 अधिक रसिया ॥ खोज अरिफोजनी मोज ध  
 रिनवि शके, चमकनर धमक दइ मांह धसिया  
 ॥ चं० ॥ १२ ॥ वाल विकराल करवाल इत  
 सुनटशिर, वेग उठलित रवि राहु माने ॥ धू  
 लि धोरणि मिलित - गगन गंगाकमल, कोट  
 अंतरित रथ रहन ठाने ॥ ० ॥ ॥ केइ



जट नार परि शीश परिहार करि, रणरसिक  
 आधिक जुंजे कबंधे ॥ पुर्ण संकेत हित हेत जय  
 जयरवे, नृत्य मनु कृत्य संगीतबंधे ॥ चं० ॥ १४ ॥  
 नूरि रणतूरपूरे गयण गरुगमे, रथ सबलशूर  
 चकचूर जंजे ॥ वीर हकड हयगय पूले चिहं  
 दिशे, जेह होय शूर तस कोण गंजे ॥ चं० ॥  
 ॥ १५ ॥ तेह कणमांह हुइ रणमही घोरतर,  
 रुधिर कर्दम जरी अंतपुरी ॥ प्रीति हुइ पूर्ण  
 व्यंतरतणा देवने, मुजटने होस नविरहि अधू  
 री ॥ चं० ॥ १६ ॥ देखि श्रीपालजट जांजियुं  
 सैन्य निज, ऊठवे तव अजितसेन राजा ॥ नाम  
 मुज राखवो जोर फिरी दाखवो, हो विमल सु  
 जट कुल तेज ताजा ॥ चं० ॥ १७ ॥ तेह इम  
 बुझतो सैन्य सजि जुंझतो, बीटियो जति शय  
 सात राणे ॥ ते वदे नृपति अजिमान तज ह  
 जिय तुं, प्रणमि श्रीपाल हित एह जाणे ॥ चं०  
 ॥ १८ ॥ मानधन जास माने नते हितवचन,

तेहसुं जुंऊनो नविय थाके ॥ बांधियो पाडि क  
 रि तेह सतशय नटे, हुन श्रीपालजश प्रगट  
 वाके ॥ चं० ॥ १९ ॥ पाय श्रीपालने आणियो  
 तेह नृप, तेणे ठोमावियो उचित जाणी ॥ नुमि  
 सुख जोगवो तात मत खेद करो, वदत श्रीपाल  
 इम मधुर वाणी ॥ चं० ॥ २० ॥ खंम चौथे  
 हुई डाल चौथी जली, पूर्ण कमखातणी एइ दे  
 शी ॥ जेह गावे सुजश एम नवपदतणो, ते लहे  
 ऋद्धि सवि शुद्धेशी ॥ चं० ॥ २१ ॥

दोहरा ॥ अजितसेन चिते करयुं, अविमा  
 स्युं में काज ॥ वचन न मान्युं दूतनुं, तो न रही  
 मुज लाज ॥ १ ॥ आप शांति जाणे नही, करे  
 सबलसुं ऊऊ ॥ सुविहितवचन माने नही, आ  
 पद पमे अबुऊ ॥ २ ॥ किहां वृद्धपण हुं सदा,  
 परद्रोहि कृन पाव ॥ किहां बालपण ए सदा, प  
 र उपकार स्वभाव ॥ ३ ॥ गोत्रद्रोह कीर्ति नही,  
 राजद्रोह नावे नीति ॥ बालद्रोह सदगति नहीं,

ए त्रणे भुज चीति ॥ ४ ॥ कोइनकरे तेंमें करधुं,  
 पातक निठुर निजाण ॥ नहि बीजुं बहु  
 पापने ॥ नरक विना मुज ठाण ॥ ५ ॥  
 एहवा पण बहु पापने ॥ उद्धरवा दिये ह्छ  
 ॥ प्रव्रज्जा जिनराजनी, ते इक शुद्ध सम  
 छ ॥ ६ ॥ ते दुखवल्ली वन दहन, ते शिवसु  
 ख तरु कंद ॥ ते कुलघरगुण गणतणुं, ते टाल  
 सवि द्वंद ॥ ७ ॥ ते आकर्षण सिद्धनुं, नवनि  
 कर्षण तेह ॥ ते कषायगिरिनेदपावि, नोकपाय  
 दवमेह ॥ ८ ॥ प्रव्रज्जा गुण इम ग्रहे, देखे न  
 व जल दोष ॥ मोह महा मद मिटिगयो, हुओ  
 जावनो पोष ॥ ९ ॥ नेदाणी बहु पाप थिति;  
 कर्म विवरज दीध ॥ पूरवन्नव तस सांजरयो,  
 रंगे चारित्र लीध ॥ १० ॥

ढाल पांचमी ॥ थारे माथे पंचरंगी पाघ सो  
 नारो बोगले मारूजी एदेशी ॥ हुओ चारित्र  
 जत्तो, सुमतिने गुत्तो, विश्वनो तारूजी ॥ श्री

पालते देखी सुगुण गवेषी मोहियो ॥ वारूजी ॥  
 प्रणमे परिवारे नक्ति उदारे ॥ वि० ॥ कहे तुज  
 गुण थुणिए पातक हणिए आपणां ॥ वा० ॥  
 ॥ १ ॥ उपशम असिधारे क्रोधने मारे ॥ वि० ॥  
 तु मद्दववंजे मद्गिरि नंजे मोटका ॥ वा० ॥  
 मायाविपवेली मूल उखेमी ॥ वि० ॥ ते अऊव खी  
 ले सहज सलीले सामटी ॥ वा० ॥ २ ॥ मूर्च्छाज  
 ल नरियो गहन गुहरियो ॥ वि० ॥ ते तरियो  
 दरियो मुत्ति तरीसुं लोचनो ॥ वा० ॥ ए चार क  
 पाया नवतरूपाया ॥ वि० ॥ बहु नेदे खेदे संजय  
 निकंदी तुं जयो ॥ वा० ॥ ३ ॥ कंदर्पे दर्पे स  
 वि सुर जीत्या ॥ वि० ॥ ते ते एकण धके विक्र  
 म पके मोमीयो ॥ वा० ॥ हरिनादे नाजे गज  
 नवि गाजे ॥ वि० ॥ अष्टापद आगल ते प  
 ण ठागल सारिखो ॥ वा० ॥ ४ ॥ रति अरति  
 निवारि नय पण नारी ॥ वि० ॥ ते मन न  
 वि धरिया तेहज नरिया तुजथी ॥ वा० ॥ ते

तजिय दुगंढा शी तुज वंढा ॥ वि० ॥ तें  
 पूगल अप्पा विहु पखे थप्पा लक्षण ॥ वा० ॥  
 ॥ ५ ॥ परिसहनी फोजे तुं निज मोजे ॥ वि० ॥  
 नवि जाग्यो लाग्यो रण जेम नागो एकलो ॥  
 वा० ॥ उपसर्गने वर्गे तुं अपवर्गे ॥ वि० ॥ चालतां  
 नडियो तुं नवि पमियो पाशमा ॥ वा० ॥ ६ ॥ दोय  
 चोर उठंता विषम वज्जंता ॥ वि० ॥ धीरज प  
 विदंडे तेज प्रचंमे ताडिया ॥ वा० ॥ नइधार  
 ण तरंतां पार उतरंतां ॥ वि० ॥ नवि मारग  
 लेखा विगत विशेषा देखिये ॥ वा० ॥ ७ ॥  
 तिहां जोगनालिका समता नामे ॥ वि० ॥ तें  
 जोवा मांमी उतपत बांमी उद्यमे ॥ वा० ॥ ति  
 हां दीठी दूरे अनंदपूरे ॥ वि० ॥ उदासीनता  
 शेरी नहि जवफेरी चक्रछे ॥ वा० ॥ ८ ॥ ते  
 तुं नवि मूके जोगन चूके ॥ वि० ॥ बाहेरने अं  
 तर तुज निरंतर सत्यछे ॥ वा० ॥ नयछे ब  
 रंगा तिहां न एकंगा ॥ वि० ॥ तुमे नयपद्ध

कारी ठो अधिकारी मुक्तिना ॥ वा० ॥ ९ ॥ तुं  
 मे अनुभव जोगी निजगुण जोगी ॥ वि० ॥ तु  
 मे धर्मसंन्यासी शुद्ध-प्रकाशी तत्त्वना ॥ वा० ॥  
 तुमे आत्मदरशा उपशम वरसी ॥ वि० ॥ सिं  
 चो गुणवाडी थाये ते जानी पुण्यसुं ॥ वा० ॥  
 ॥१०॥ अप्रमत्तप्रमत्तते द्विविध कहिजे ॥ वि०॥  
 जाणज गुण ठाणज एकज जावते ते ग्रह्यो ॥  
 वा० ॥ तुमे आगम अगोचर निश्चय संवर ॥  
 वि० ॥ फरस्यु नवि तरस्युं चित्त तुम केरुं स्व  
 प्रमा ॥ वा० ॥ ११ ॥ तुज मुद्रा सुंदर सुगुण पु  
 रंदर ॥ वि०॥ सूचे अति अनोपम उपशम ली  
 ला चित्तनी ॥ वा० ॥ जो दहन गहन होए अ  
 तरचारी ॥ वि० ॥ तो केम नवपल्लव तरुअर  
 दीसे सोहतुं ॥ वा० ॥ १२ ॥ वैरागी त्यागी  
 तुं सोजागी ॥ वि० ॥ तुज शुभमाति जागी जा  
 ठ जागी मूनथी ॥ वा० ॥ जगपूज्य तु मा  
 पुज्य ठे प्यारो ॥ वि० ॥ पहेला पण न

मियो हिवे उपशमियो आदरयो ॥ वा० ॥ १३ ॥

एम चोथे खंडे रंग अखंमे संथुणयो ॥ वि० ॥

जे मुनि श्रीपाले पंचमी ढाले ते कह्यो ॥ वा० ॥ १४ ॥

दोहरा ॥ अजितसेनमुनि इम थुणी, ते

हने पाट विशाल ॥ तस अंगज गजगति सुम

ति, थापे नृप श्रीपाल ॥ १ ॥ कारज कीधां आ

पणां, आरजने सुख दीध ॥ श्रीपाले बल पुण्य

ने, जे बोल्यो ते कीध ॥ २ ॥

ढाल बठी ॥ बलद नलावे सौरठीरे लाल

एदेशी ॥ विजय करी श्रीपालजीरे लाल, चंपा

नगरीए कीध प्रवेशरे सोनागी ॥ टल्या लोक

ना सकल कलेशरे ॥ सो० ॥ चंपानगरीते बनी

सुविशेषरे ॥ सो० ॥ शिणगारया हाट अशेषरे ॥

सो० ॥ पटकुले बाया प्रदेशरे ॥ सो० ॥ जय

जयजणे नरनारियां होलाल ॥ १ ॥ फरके ध्व

जा त्यां चिहुं दिशेरे लाल, पग पग नाटारंजरे

॥ सो० ॥ मांडयांते सोवन थंजरे ॥ सो० ॥ गा

वे गोरी गीत अदंजरे ॥ सो० ॥ जेणे रूपे जी  
 तीठे रंजरे ॥ सो० ॥ बंजने पण होए अचंजरे  
 ॥ सो० ॥ ज० ॥ २ ॥ सुरपुरी जंपाजे करारे ला  
 ल, चंपा हुइ तेणीवाररे ॥ सो० ॥ मदमोदसमुद्र  
 मां साररे ॥ सो० ॥ फलियो साइस मानु उदाररे  
 ॥ सो० ॥ त्यां आव्यो हरि अवताररे ॥ सो० ॥  
 श्रीपाल ते कुलउद्धाररे ॥ सो० ॥ ज० ॥ ३ ॥  
 मोतीय थाल जरी करारे लाल, वधावे घर ना  
 ररे ॥ सो० ॥ कर कंकणना रणकाररे ॥ सो० ॥ प  
 गे जांजरना ऊमकाररे ॥ सो० ॥ कटिमेखलना  
 खलकाररे ॥ सो० ॥ वाजे मांदलना धौंकाररे ॥  
 ॥ सो० ॥ ज० ॥ ४ ॥ सकल नरेसर तिहां मि  
 लीरे लाल, अनिपेक करे फिरीं तासरे ॥ सो० ॥  
 पितापाटे थापे उल्लासरे ॥ सो० ॥ मयणा अ  
 निपेक विशेषरे ॥ सो० ॥ लघुपाटे आ  
 ठ ॥ जे शेपरे ॥ सो० ॥ सीधोजे कीधो उद्देशरे ॥  
 ॥ सो० ॥ ज० ॥ ५ ॥ एक मांनि मतिसागररे



लाल, त्रण धवलतणाजे मित्तरे ॥ सो० ॥ ए  
 चारे मंत्रि पवित्तरे ॥ सो० ॥ श्रीपालकरे शुच  
 चित्तरे ॥ सो० ॥ एतो तेजे हुउ आदित्तरे ॥  
 ॥ सो० ॥ खरचे बहलुं तिहां वित्तरे ॥ सो० ॥  
 ॥ ज० ॥ ६ ॥ कोसंबी नयरी थकीरे लाल, ते  
 डाव्यो धवलनो पुत्तरे ॥ सो० ॥ तेनं नाम विम  
 लवे युत्तरे ॥ सो० ॥ तेह शेठ करयो सुमुहुत्तरे  
 ॥ सो० ॥ सोवनपट बंध संयुत्तरे ॥ सो० ॥ किधा  
 कोष ते अखय सुगुत्तरे ॥ सो० ॥ ज० ॥ ७ ॥ उत्सव  
 चैत्य अठाहियारे लाल, विरचावे विधि साररे ॥  
 ॥ सो० ॥ सिद्धचक्रनी पुजा उदाररे ॥ सो० ॥  
 करे जाणी तस उपकाररे ॥ सो० ॥ तेनो धर्मी  
 सहु परिवाररे ॥ सो० ॥ धर्म उल्लसे तस दाररे  
 ॥ सो० ॥ ज० ॥ ८ ॥ चैत्य करावे तेहवारे ला  
 ल, जे स्वर्गसुं मंमे वांदरे ॥ सो० ॥ विधुमंमल  
 अमृत आस्वादरे ॥ सो० ॥ ध्वजनिहे लीये अ  
 दरे ॥ सो० ॥ तेणे गाजे गुहिरे नादरे ॥ सो० ॥

मोडे कुमतिना उनमादरे ॥ सो० ॥ ज० ॥ ९ ॥  
 पड्डह अमार वजवियारे लाल, दीधां दान अ-  
 नेकरे ॥ सो० ॥ साचविगा सकल विपेकरे ॥ सो०  
 समकितनी राखी टेकरे ॥ सो० ॥ न्याये राम क-  
 हायो ठेकरे ॥ सो० ॥ ते राजहंस धीजा नेकरे  
 ॥ सो० ॥ ज० ॥ १० ॥ अचरज एक तेणे क-  
 र्युरे लाल, मन गुप्त ग्रहे हुता जेहरे ॥ सो० ॥  
 कर्णादिक नृप ससनेहरे ॥ सो० ॥ छोराविया स  
 घला तेहरे ॥ सो० ॥ निज अभुत चरित अवे-  
 हरे ॥ सो० ॥ देखावी निज गुणगेहरे ॥ सो० ॥  
 ज० ॥ ११ ॥ श्रीपालप्रतापथी तापियोरे लाल  
 विधि शयन करे अरविदरे ॥ सो० ॥ करे जलधि  
 वास मुकुंदरे ॥ सो० ॥ हर गंगधरे निसपंदरे ॥  
 ॥ सो० ॥ फिरे नाठा सूरज वंदरे ॥ सो० ॥ ज० ॥  
 ॥ १२ ॥ तस जशवे गंगा सारिखोरे लाल, तिहां  
 अरिअपजश सेवालरे ॥ सो० ॥ कर्पूरमाहे अंगाररे  
 ॥ सो० ॥ अरविंदमाहे अलिवालरे ॥ सो० ॥ अन्योन्य

સંયોગ નિહાલરે॥સો૦॥દિએ કવિ ઉપમા તત્કાલ  
 રે ॥ સો૦ ॥ જ૦ ॥ ૧૩ ॥ સુરતરુ સ્વર્ગથી ઝૂત  
 રીરે લાલ, ગયાં અગમ અગોચર ઠામરે॥સો૦॥  
 જિહાં કોઈ ન જાણે નામરે ॥ સો૦ ॥ તિહાં તપ  
 સ્યા કરે અનિરામરે ॥ સો૦ ॥ જવ પામ્યાં અદ  
 ખૂત ઠામરે ॥ સો૦ ॥ તસ કરઅંગુલી હુઆં તા  
 મરે ॥ સો૦ ॥ જ૦ ॥ ૧૪ ॥ જશ પ્રતાપ ગુણ આ  
 ગલોરે લાલ, ગુરુઝને ગુણવંતરે ॥ સો૦ ॥ પાલે રા  
 જ મહંતરે ॥ સો૦ ॥ વયરીનો કરે અંતરે ॥ સો૦ ॥  
 મુખપદ્મ સદા વિકસંતરે ॥ સો૦ ॥ લીલાલહેર ધ  
 રંતરે ॥ સો૦ ॥ જ૦ ॥ ૧૫ ॥ મેરુમવે જે અંગ  
 લેરે લાલ, કુશઅગ્રે જલનિધિ નીરરે ॥ સો૦ ॥  
 ફરસે આકાશ સમીરરે ॥ સો૦ ॥ તારાગણ ગ  
 ણિત ગંજીરરે ॥ સો૦ ॥ શ્રીપાલ સુગુણનો તી  
 રરે ॥ સો૦ ॥ તે પણ નવિ પામે ધીરરે ॥ સો૦ ॥  
 જ૦ ॥ ૧૬ ॥ ચોથે ધંડે પુરી થઈરે લાલ, એ ઠ  
 ઠી ઢાલ અનંગરે સો૦ ॥ ઇહાં ઝૂતિ ને યુક્તિ

सुचंगरे ॥सो०॥ नवपद महिमानो रंगरे॥सो०॥  
 एहथी लहीए ज्ञानतरंगरे॥मो० ॥ बलि विनय  
 सुयश सुखसंगरे ॥ सो० ॥ १७ ॥

दोहरा ॥ एहवे राय रिपी नलो, अजितसे  
 न जस नाम ॥ उद्दिनाण तस ऊपन्युं, शुद्धं चं  
 रण परिणाम ॥ १ ॥ तिण नगरी ते आवियो,  
 सुणि आगमन उदंत ॥ रोमांचित श्रीपाल नृप,  
 हर्षित हठ अत्यंत ॥ २ ॥ वंदन निमित्ते आ  
 वियो, जननी नऊ समेत ॥ मुनि नमि करि  
 य प्रदाहिणा, बेठो धर्मसंकेत ॥ ३ ॥ सुणवावां  
 वे धर्म ते, गुरुसन्मुख सुविनीत ॥ गुरु पण तेह  
 ने देशना, दे नय समय अधीत ॥ ४ ॥

ढाल सातमी ॥ हस्तिनागपुरवरनलो, जि  
 हा पांडुराजा साररे एदेशी ॥ प्राणी वाणी जि  
 नतणी, तुमे धारो चित्तमजाररे ॥ मोहे मूझ्यामं  
 त फिरो, मोह मूक्ये सुख निरधाररे ॥ मोह मू  
 क्ये सुख निरधार, संवेग गुण पालीये ॥ पुण्य

वंतरे पुण्यवंत अनंत विज्ञान, वदे इम केवली  
 जगवंतरे ॥ १ ॥ दश दृष्टांते दोहिलो, मानवज  
 व ते पण लिद्धरे ॥ आरिजक्षेत्रे जन्मजे, ते दु  
 र्लज सुकृत संबंधरे ॥ ते दुर्लज० ॥ संवे० ॥ २ ॥  
 आरजक्षेत्रे जनम हुठ, पण उत्तम कुल दुर्लज  
 रे ॥ व्याधादीक कुल उपन्ये, शुं आरजक्षेत्र  
 अचंजरे ॥ शुं० ॥ संवे० ॥ ३ ॥ कुलपामे पण  
 दुलहा, रूप आरोग्य आयु समाजरे ॥ रोगी  
 रूपरहित घणा, हीण आयु दीसेवे आजरे ॥ ही० ॥  
 ॥ संवे० ॥ ४ ॥ ते सविपामे पण सही, दुल्लहोवे  
 सुगुरु संयोगरे ॥ सघले क्षेत्रे नहीं सदा, मुनि पा  
 मी जेशुज योगरे ॥ मुनि० ॥ संवे० ॥ ५ ॥ मोटे पु  
 ण्ये पामीए, जो सदगुरु संग सुरंगरे ॥ तेरे काठीया  
 तोकरे, गुरु दर्शन उत्सव जंगरे ॥ गु० ॥ संवे० ॥  
 ॥ ६ ॥ दर्शन पामे गुरुतणुं, धूर्ते व्युदग्राहित चि  
 त्तरे ॥ सेवाकरी जन नविशके, होए खांटे जाव अ  
 मितरे ॥ हो० ॥ संवे० ॥ ७ ॥ गुरुसेवा पुण्ये ल

ही, पासे पण बेठा नितरे ॥ धर्मश्रवण तोहे दो  
 हिलुं, निद्रादिक दिएजो नितरे ॥ नि०॥ संवे० ॥  
 ॥ ८ ॥ पामी श्रुत पण दुल्लही, तत्त्वबुद्धिते नरने  
 न होयरे ॥ शृंगारादि कथारसे, श्रोता पण निज गुण  
 खोयरे ॥ आ०॥ संवे० ॥ ९ ॥ तत्त्व कहे पण दुल्लही,  
 सदेहणो जाणो संतरे ॥ कोइ निजमति आगळ  
 करे, कोइ डामाडोल फिरंतरे ॥ ते०॥ सं०॥ १० ॥ आ  
 पा विचारें पामिए, कहो तत्त्वतणो केम अंतरे ॥  
 आलमुआ गुरु गीष्यनो, इहा जाव जो मन वृ  
 त्तंतरे ॥ इ० ॥ संवे० ॥ ११ ॥ बठरछ त्र गज आ  
 वतां, जेम प्राप्त अप्राप्त विचारें ॥ करे न तहथी  
 उगरे, तेम आपमति निरधारें ॥ ते० संवे० ॥ १२ ॥  
 आगमने अनुमानथी, बलि ध्यानरसे गुणगेहरें  
 ॥ करे जे तत्त्व गवेपणा, ते पामे नही संदेहरें ॥  
 ॥ ते० ॥ संवे० ॥ १३ ॥ तत्त्व बोधते स्पर्शते, सं  
 वेदन अन्य स्वरूपरें ॥ संवेदन बंध्ये हुवे, जे  
 स्पर्शते प्रापति रूपरें ॥ जे० ॥ संवे० ॥ १४ ॥

तत्त्वते दशविध धर्मते, क्हांत्यादिक श्रमणनो शु  
 द्धरे ॥ धर्मनुं मूल दया कही, ते खंति गुण अ  
 विरुद्धरे ॥ ते० ॥ संवे० ॥ १५ ॥ विनयने वश  
 ते गुण सवे, तेतो मार्दवने आयत्तरे ॥ जेहने  
 मार्दव मनवस्यो, तेणे सवि गुणगण संपत्तरे ॥  
 ते० ॥ संवे० ॥ १६ ॥ आर्यव विण नवि शु  
 द्धते, नवि धर्म आराधे अशुद्धरे ॥ धर्मविना  
 नवि मोक्षते, तेणे रिजु जावी होय बुद्धरे ॥ ते०  
 ॥ संवे० ॥ १७ ॥ द्रव्योपकरण देहना, वलि न  
 क्तपान शुचि जावरे ॥ जाव शौच जेम नवि च  
 ले, तेम कीजे तास बनावरे ॥ ते० ॥ संवे० ॥  
 ॥ १८ ॥ पंचाश्रवथी विरमीए, इंद्रिय निग्रहीजे  
 पंचरे ॥ चार कषाय त्रण दंम जे, तजीए ते सं  
 जम संचरे ॥ ते० ॥ संवे० ॥ १९ ॥ बांधव धन  
 इंद्रिय सुखतणो, वली नय विग्रहनो त्यागरे ॥  
 अहंकार ममकारनो, जे करशे ते महाजागरे ॥  
 जे० ॥ संवे० ॥ २० ॥ अविसंवादनयोगजे, वली

तन मन वचन अमायरे ॥ सत्य चतुर्विध जिन  
 कह्यो, बीजे दर्शने न कहायरे ॥ बी०॥ संवे० ॥  
 ॥ २१ ॥ पटविध बाहिर टप कहुं, अभ्रंतर प  
 टविध होयरे ॥ कर्मखपावे ते सही, पडिसोयवृत्ति  
 पणे जोयरे ॥ प० ॥ संवे० ॥ २२ ॥ दिव्य उदा  
 रिक कामजे, कृत कारीत अनुमाति जेदरे ॥ यो  
 ग त्रिके तस वर्जवुं, ते ब्रम्हहरे सवि खेदरे ॥  
 ते० ॥ संवे० ॥ २३ ॥ अध्यात्मवेदी कहे, मूर्खा  
 ते परिगह नावरे ॥ धर्म अकंचनने जण्यो, ते  
 कारण नवजल नावरे ॥ ते०॥ संवे०॥ २४ ॥ पांच  
 जेदवे खंतिना, उवयार वियार विवागरे ॥ वचन  
 धर्म तिहां त्रणवे, लौकिक दोष अधिक सोजागरे  
 ॥ लौ० ॥ संवे०॥ २५ ॥ अनुष्ठान ते चारवे, प्री  
 ति भक्तिने वचन असंगरे ॥ त्रण क्कमावे दोष  
 मा, अयिम दोषमांहे चंगरे ॥ अ० ॥ संवे० ॥  
 ॥ २६ ॥ वल्लभ स्त्री जननी तथा, तेइना कृतमां  
 जजूत रागरे ॥ पम्कमणादिक कृत्यमा, एम



प्रीति नक्तिनो लागरे ॥ ए० ॥ संवे० ॥ २७ ॥  
 वचन ते आगम आशरे, सहेजे थायेते अमंगरे  
 ॥ चक्र भ्रमण जेम दंरुथी, उत्तर तदजावे चंगरे  
 ॥ उ० ॥ संवे० ॥ २८ ॥ विष गरल अनुष्ठानवे,  
 तद्धेतु अमृतवालि होयरे ॥ त्रिक तजवां देय से  
 ववां, ए पांच नेद पण जोयरे ॥ ए० ॥ संवे० ॥  
 ॥ २९ ॥ विष किरिया ते जाणीए, जे अशनां  
 दिक उद्देशे ॥ विष ततखिण मारे यथा, तेम  
 एह नवे फल लेशे ॥ ते० ॥ संवे० ॥ ३० ॥ पर  
 नवे इंद्रादिक रमा, इच्छा करतां गर थायरे ॥  
 ते कालांतरे फलदीए, मारे जेम इरुकियो वायरे ॥  
 मा० ॥ संवे० ॥ ३१ ॥ लोक करे तिम जेकरे,  
 उठे बेसे समूर्द्धम प्रायेर ॥ विधि विवेक जाणि  
 नही, ते अनुष्ठान कहायेर ॥ ते० ॥ संवे० ॥  
 ॥ ३२ ॥ तद्धेतु शुद्ध रागथी, विधि शुद्धते अमृ  
 त होयरे ॥ सकल विधानजे आचरे, ते दीसे  
 बिरला कोयरे ॥ ते० ॥ संवे० ॥ ३३ ॥ करण प्री

ति आदर घणो, जिज्ञासा जाणनो संगरे ॥ शु  
 न आगम निर्विघ्नता, ए शुद्धक्रियांना लिंगरे ॥  
 ए० ॥ संवे० ॥ ३४ ॥ द्रव्यालिंग अनंतां धरयां,  
 करी किरिया फल नवि लद्धरे ॥ शुद्धक्रिया तो  
 संपजे, पुद्गल आवर्त जो अद्धरे ॥ पु० ॥ संवे० ॥  
 ॥ ३५ ॥ अरिहंत सिद्ध तथा जला, आचारजने  
 उवळ यरे ॥ साधु नाण दंशण चरि, तप नव  
 पद मुगति उपायरे ॥ त० ॥ संवे० ॥ ३६ ॥ ए नव प  
 द ध्याता थकां, प्रगटे निज आतम रूपरे ॥  
 आतम दग्शण जेणें करयुं, तेणे मुद्यो नवजय  
 कूपरे ॥ ते० ॥ संवे० ॥ ३७ ॥ क्कण अर्धजे अ  
 घटले, ते न टले नवनी कोडीरे ॥ तपस्या कर  
 तां अति घणी, नही ज्ञानतणीवे जोमीरे ॥ न० ॥  
 संवे० ॥ ३८ ॥ आतम ज्ञाने मगनजे, ते सवि  
 पुद्गलनो खेलरे ॥ दंजाल करी लेखवे, नमिले  
 तिहा ॥ न० ॥ संवे० ॥ ९  
 जा ॥ आवरण ॥

द्वरे ॥ आरमज्ञानते दुःखहरे, एहिज शिवहेतु  
प्रसिद्धरे ॥ ए० ॥ संवे० ॥ ४० ॥ चोथे खंमे सात  
मी, ढाल पूरण थइ खासरे ॥ नवपदमहीमा जे  
सुणे, ते पामे सुजश विलासरे ॥ ते० ॥ संवे० ॥ ४१ ॥

दोहरा ॥ इणपरे देइ देशना, रह्या जाम मुनि  
चंद ॥ तव श्रीपालते विनवे, धरतो विनय अमंद  
॥ १ ॥ जगवंत कहो कुण कर्मथी, बालपणे मुज देह  
॥ महारोग ए ऊपन्यो, कुण सुकृते हुन बेह ॥ २ ॥  
कवण कर्मथी में लही, ठाम ठाम बहु ऋद्ध ॥  
कवण कुकर्म हूं पड्यो, गुणनिधि जलनिधिमध्य  
॥ ३ ॥ कवण नीच कर्म हुन, दुंबपणुं मुनिराय  
॥ मुजने ए सवि किम हुन, कहिये करि  
सुपसाय ॥ ४ ॥

ढाल आठमी ॥ बे बे मुनिवर वहिरण पांग  
रघारे एदेशी ॥ सांजलजो हिवे कर्मविपाक कहे  
मुनिरे, कांइ कीधुं कीधुं कर्म न जायरे ॥ कर्म व  
शे होय सघली मुखदुख जीवनेरे, कर्मथी बली

यो कोइ नव थायरे ॥ सां० ॥ १ ॥ भरतक्षेत्रमां  
 नयर हिरण्यपुर हुजरे, महीपति मोटोते श्रीकांत  
 रे ॥ व्यमन तेहने लग्युं आहेमातणरे, कांइ  
 वारे वारे राणी एकांतरे ॥ सां० ॥ २ ॥ राणी  
 तेहनी जाणो सुगुणा श्रीमतिरे, समकित शी  
 लनी रेपरे ॥ जिनधर्मे मति रुमी कुडी नहि म  
 नेरे, दाखे दाखे शीख विशेषरे ॥ सां० ॥ ३ ॥  
 पियु तुजने आहेमे जावुं नवि घटेरे, जेहने के  
 डेढे नरकनी ज्ञीतिरे ॥ धरणीने परणी बे लाजे  
 तुजथकीरे, मांडी जेणे जीव हिंसानी अनीतिरे  
 ॥ सां० ॥ ४ ॥ मुखे तृण दीधे अरिपण मूके जी  
 वतोरें, एवोढे रुडो क्षत्रीनो आचाररे ॥ तृण  
 आहार सदाजे मृगपशु आचररे, तेहने जे मारे  
 आहेडे ते गामररे ॥ सां० ॥ ५ ॥ ससलां नासे  
 पासे नही, आयुत्र धरेरे, राणीजाया बाणी ते  
 हने केडरे ॥ जे लागेते आगे दुःख लेशे घणारे,  
 नाठासुं बलन करे क्षत्री वेडरे ॥ सां० ॥ ६ ॥

अबल कुलासी ऊखने निज द्रुम पीडतारे, ख-  
 गते मृगने तृण नद्धीने दोषरे ॥ हणतां नृपने  
 न होय एम जे उपदिशेरे, तेणे कीधां तस हिं  
 सक कुल पोषरे ॥ सां० ॥ ७ ॥ हिंमानीते खिसा  
 सघली सांजलीरे, हिंमा नवि रुमी किणही हेतेरे ॥  
 आप संतापे परसंतापे पापी उरे, आहेडीते जाणो  
 कुलमां केतरे ॥ सां० ॥ ८ ॥ जाउरसातल विक्रमजे  
 दुर्बल हणरे, एतो लेइया कृष्णनो घन परिणामरे  
 ॥ जुंडी करणीथी जग आपजश पामीएरे, ल  
 हालो खातां मुख होयते श्यामरे ॥ सां० ॥ ९ ॥  
 एहवा राणीए वयण कह्यां पण रायनेरे, चित्तमांहे  
 नवि जाग्यो कोइ प्रतिबोधरे ॥ घन वरसे पण न  
 वि निजे मगसेलीउगे, मूरखने हित उपदेशे हो  
 ये क्रोधरे ॥ १० ॥ अन्य दिवस शतसात डल्लं  
 ठे परवग्येरे, मृगया संगे आव्यो गहने रायरे ॥  
 मुनि तिहां देखां कहे ए व्याधिठे कीढीयोरे, उ  
 छंठते मारे देइ घन घायरे ॥ सां० ॥ ११ ॥ जे

म जेम तामे मुनिने तेम नृपने हुएरे, हास्ये त  
 णो रस मुनिमनते रस शातरे ॥ करी उपमर्ग  
 ने मृगयाथी बल्या सातसेरे, नृपसाथेते पहोता  
 घरे मन खांतरे ॥ सां० ॥ १२ ॥ अन्य दिवस  
 मृगपूठे धायो एकलोरे, मृगलो पेठो नदी तट  
 रानरे ॥ जूलो नृपते देखे नदी तट साधुनेरे, बो  
 ले ते जलमा जाली कानरे ॥ सां० ॥ १३ ॥ कां  
 इच्छ करुणा आवी काढ्यो नीरंथीरे, घरे आवी  
 ने केहे राणीने वातरे ॥ सा कहे बीजानी पण  
 हिंसा दुःख दिएरे, जन्म अनंतादिए ऋषिघात  
 रे ॥ सां० ॥ १४ ॥ राजा जापे नवि करशुं फि  
 री एश्वरे, विद्या केटलाएक वासर जामरे ॥ गो  
 ख थकी मुनि दीठो फिगतो गोचरीरे, विसारी  
 घग्णीनी शिद्धा तामरे ॥ सां० ॥ १५ ॥ नग  
 री बटाले कहे नृप छंठनेरे, काढो बाहेर जालो  
 एहने कंठरे ॥ राणीए दीठा गोखथकी ते काढ  
 तारे, राजाने आदेशे लाग्या छंठरे ॥ सां० ॥ १६ ॥

राणी रूठी राजाने कहे ए शुं करोरे, पोतानुं बोल्युं  
 पालोन वचनरे ॥ मुनि उपसर्गे स्वर्गे जावुं दोहि  
 लुरे, नरके जावा लाग्युं ते तुज मनरे ॥ सां० ॥ १७ ॥  
 नृप उपशमिउ नमियो मुनिने तेमी घररे, रा  
 णी जापे राजा ए अन्नाणरे ॥ मुनि उपसर्गे पा  
 प कर्युं इणे मोटकुरे, ए छूटे ते कहिये कांड वि  
 न्नाणरे ॥ सां० ॥ १८ ॥ सज्जन जे नूडुं करतां  
 रूडुं करेरे, तेहनं जगमां रहेशे नाम प्रकाशरे ॥  
 आंबो पत्तर मारे तेहने फल दिएरे, चंदन आ  
 पे कापे तेहने वासरे ॥ सां० ॥ १९ ॥ मुनि क  
 हे मोटा पातकनुं शुं पालवुरे, तो पण जो होय  
 एहने जाव उल्लासरे ॥ नवपद जपतां तपतां ते  
 हनुं तप नलुरे, आराध्ये सिद्धचक्र होए अध  
 नाशरे ॥ सां० ॥ २० ॥ पूजा तप विधि शी  
 खी आराध्यो नृपेरे, राणी साथेते सिद्धचक्र वि  
 ख्यातरे ॥ ऊजमणामांहे आठे राणीनी सहारे,  
 अनुमोदे वली नृपनुं तप शतसातरे ॥ सां० ॥

॥ २१ ॥ अन्य दिवसे गयाते सिंह नृप गाममे  
 रे, नांजी तेवलीयां लेइ गोवंगरे ॥ केड करी  
 ने सिंह मारयाते मरीरे, कोढी हुआ क्वात्रि मुं  
 नि उपसंगरे ॥ सां० ॥ २२ ॥ पुण्यप्रभावे  
 राजा हुन श्रीकांत तुंरे, श्रीमति राणी मयणा  
 सुंदरी तुजरे ॥ कुष्टिपणु जलमज्जन डुंवपणु तुमेरे,  
 पाम्या ए मुनि आशातनाफल गुजरे ॥ सां० ॥  
 ॥ २३ ॥ सिद्धचक्र श्रीमति वयणे आराधीयेरे,  
 तेहथी पाम्यो सघले ऋद्धि विशेषरे ॥ आठ स  
 खी राणीनुं तप अनुनोदियुगे, तेणेते लघु देवी  
 हुइ तुज शून वेपरे ॥ सां० ॥ २४ ॥ साप खाउ  
 तुज आठमीए कह्युं सोक्यनेरे, तेणे सापे रूपी  
 न टले पापरे ॥ धर्म प्रशंसा करी राणा हुआ  
 सातसेरे, घात विधुरथा सिंह लीए व्रत आपरे  
 ॥ सां० ॥ २५ ॥ मास आणशणे अजितसेनते हुं  
 हुनरे, बालपणे तुज राज्य हरयो ते गणरे ॥ बां  
 धी पुरव वेरे तुज आगल धरयोरे, पृथ्व आभ्या



से मुजने आव्युं नाणरे ॥ सां० ॥ २६ ॥ जाति  
 संजारी संजम ग्रहि लहि उहिनेरे, इहां आव्या  
 जेणे जेवां कीधां कर्मरे ॥ तेहने तेवां आव्या  
 फल सुख दुःखतणारे, सदुगुरु पाखे जाणे कु-  
 ण ए मर्मरे ॥ सां० ॥ २७ ॥ चौथे खंडे ढाल  
 थइ ए आठमीरे, एहमा गायो नवपद महिमा  
 साररे ॥ श्री जिन विनये सुजश लह्यो एहथी-  
 रे, जगमां होएनिश्चे जेजेकाररे ॥ सां० ॥ २८ ॥  
 दोहरा ॥ एम सांजली श्रीपालनूप, चिते चि-  
 त्तमकार ॥ अहो अहो जव नाटके, लहिए इस्या  
 प्रकार ॥ १ ॥ कहे गुरुने हमणां नथी, मुजचा  
 रित्रनि शक्ति ॥ करि पमाय तेणे उपदिशो, उ-  
 चित करण पडिवति ॥ २ ॥ बलतुं मुनि जाषे नृ-  
 पति, निश्चे गति तुं जोय ॥ कर्म जोग फल तुं  
 ज घणुं, इह जव चरम न होय ॥ ३ ॥ पण न  
 वपद आराधतां, पामिश नवमुंसगग ॥ नरसुख  
 सुरसुख अनुजवी, नवमे जव अपवगग ॥ ४ ॥ ते

सुणि रोमांचित हृत्, निजघर पहतो नृप ॥ मु  
 नि पण विहरंतो गयो, ठाणांतर अनुरूप ॥५॥  
 ढाल नवमी ॥ कंत तमाकु परिहरोरे एदेशी  
 ॥ हारेलाल हिवे नरपाति श्रीपालते, निज परि  
 वारसंयुक्त मेरे लाल ॥ आराधे सिद्धचक्रने, वि  
 धि सहित ग्रही सुमुहुत्त मेरे लाल ॥ मनने म  
 होटे मोजमां ॥ १ ॥ मयणासुंदरी त्यारे जणे,  
 पूर्वे पूज्यो सिद्धचक्र मेरे लाल ॥ धन त्यारे थो  
 डु हतुं, हमणा तो ऋद्धि शक्र ॥ मे० ॥ म०॥  
 ॥ २ ॥ धन मोटे ठोटुं करे, जे करणी धर्मनुं ते  
 ह ॥ मे० ॥ फल पूरूं पामे नहीं, मत करजो  
 तिहां संदेह ॥ मे० ॥ म० ॥ ३ ॥ विस्तारे नव  
 पद तणी, तेणे पूजा करो सुविवेक ॥ मे० ॥ धननो  
 लाहो लीजीए, राखो मोटी टेक ॥ मे० ॥ म० ॥ ४ ॥  
 मयणा वयणा मन धरी, गुरु जक्ति शक्ति अनु  
 सार ॥ म० ॥ अरिहंतादिक पद जलां, आराधे  
 ते नवपद सार ॥ मे० ॥ म० ॥ ५ ॥ नव जिन

घर नव पद्मिमा जली, नव जीर्णोद्धार करावी  
 ॥ मे० ॥ नानाविध पूजा करी, जिन आराधन  
 शुभ जावि ॥ मे० ॥ म०॥ ६ ॥ एम सिद्धतणी  
 प्रतिमातणु, पूजन त्रिहुं काल प्रमाण ॥ मे०॥  
 तन्मय ध्याने सिद्धनुं, करे आराधना अजिराम  
 ॥ मे० ॥ म० ॥ ७ ॥ आदर जक्तिने वंदना,  
 वेयावच्चादिक लग्न ॥ मे०॥ शुश्रूषा विधि सां  
 चवी, आराधे सूरि समग्न ॥ मे०॥ म०॥ ८ ॥ अध्या  
 पक जणता प्रते, वसनासन ठाण बनाय ॥ मे०॥  
 द्विविध जक्ति करतो थको, आराधे नृप उवळा  
 य ॥ मे०॥ ९ ॥ नमन वंदन अजिगमनथी, व  
 सही अशनादिक दान ॥ मे०॥ करतो वेयावच्च  
 घणुं, आराधे मुनिपद ठाण ॥ मे०॥ म०॥ १० ॥  
 तीर्थयात्रा करी अतिघणी, संघ पूजाने रहजत्त ॥  
 मे० ॥ आराधे दर्शनपद जलुं, शासन उन्नति  
 दृढ चित्त ॥ मे०॥ म०॥ ११ ॥ सिद्धांत लिखावी तेह  
 ने, फलते अर्चादिक हेत ॥ मे०॥ नाणपद आ

राधन करे, सज्जाय उचित-मन देत ॥ मे० ॥ १२ ॥  
 व्रत नियमादिक पालतो, विरतिनी जक्ति करंत  
 ॥ मे० ॥ आराधे चाग्रि धर्मने, रागी जति धर्म  
 एकंत ॥ मे० ॥ म० ॥ १३ ॥ तजी इच्छा इह परलो  
 कनी, थइ सघले अप्रतिबद्ध ॥ मे० ॥ पट बाह्य  
 अभ्यंतर पटे करी, आराधो नवपद शुद्ध ॥ मे० ॥  
 म० ॥ १४ ॥ उत्तम नव पद द्रव्य जावथी, शुभ  
 जक्ति करी श्रीपाल ॥ मे० ॥ आराधे सिद्धचक्र  
 ने, नित पामे मंगल माल ॥ मे० ॥ म० ॥ १५ ॥  
 एम सिद्धचक्रनी सेवना, करी साढा चार ते वर्ष  
 ॥ मे० ॥ हिवे ऊजमणा विधितणो, पूरे तप उप  
 न्यो हर्ष ॥ मे० ॥ म० ॥ १६ ॥ चौथे खमे प  
 री थइ, ढाल नवमी चढते रंग ॥ मे० ॥ विनयसु  
 जग सुख ते लहे, सिद्धचक्र थुणेजे चंग ॥ मे० ॥ १७ ॥  
 दोहरा ॥ हिवे राजा निज राजनी, ललित  
 णे अनुसार ॥ ऊजमण तेह तपतणुं, मांडे अ  
 तिहि उदार ॥ १ ॥

ढाल दशमी॥जोलीमा हंसारे विषय न राची  
 ए एदेशी ॥ विस्तिरण जिन जुवनने विरचाण, पु  
 एय त्रवेदिक पीठ ॥ चंद्र चांद्रिकारे धवल जुवन  
 तले, नवरंग चित्र विसिठ ॥ १ ॥ तप ऊजम  
 णुरे इणीपरे कीजीए, जेम विरचे श्रीपाल ॥ त  
 प फल वाधेरे ऊजमणुं करे, जेम जलपंकजनाल  
 ॥ तप० ॥ २ ॥ पंच वरणनारे शालि प्रमुख न  
 ला, मंत्र पवित्र करी धाना॥सिद्धचक्रनीरे रचना  
 तिहांकरे, संपूरण शुभ ध्यान ॥ त० ॥ ३ ॥ अ  
 गिहंतादिक नवपदने विषे, श्रीफल गोल ठवंन ॥  
 सामान्ये घृत गांभ सहित सवे, नृप मन अवि  
 केरे खंत ॥ त० ॥ ४ ॥ जिन पद धवलुंरे गोल  
 कते ठवे, शुचि कर्ककेतन अठ ॥ चोत्रीशे हीरे  
 रे सहित विराजतुं, गिरूऊ सगुण गरीठ ॥ त० ॥  
 ॥ ५ ॥ सिद्धपदे अरुमाणिकय रातमां, बालि इग  
 तीश प्रवाल ॥ घृमृण विलेपित गोलक तेठवे,  
 मुक्ति राग विशाल ॥ त० ॥ ६ ॥ पण मणिपीत

ઠગીશ ગોમેદેફે, સુરિપદે ઠવે' ગોલ ॥ નીલર  
 યણ પંચવીશ પાઠક પદે, ઠવે વિપુલ રંગ રોલ  
 ॥ ત૦ ॥ ૭ ॥ રિષ્ટરતન સગવીશતે મુનિપદે,  
 પંચરાય પટ અંક ॥ સગસઠ એગવન્ન સિત્તરી અં  
 ચાસતે, મુગતા શેષ નિશંક ॥ ત૦ ॥ ૮ ॥ તે તે  
 વરણેરે ચીંગાદિક ઠવે, નવપદનણેરે હદેશ ॥ કી  
 જી પણ સામગ્રી મોટકી, માંડે તેહ નરેશ ॥  
 ત૦ ॥ ૯ ॥ વીજોરાં સ્વારક દામિમ જલાં, કેલાં  
 સરસ નારિંગ ॥ પુંગીફલ વલી કલશ કંચન  
 તણા, રતન પુંજ અતિ ચંગ ॥ ત૦ ॥ ૧૦ ॥ જે  
 જે ઠામેરે જે ઠવવું ઘટે, તેતે ઠવેરે નરિંદ ॥ ગ્રહ  
 દિગ્પાલપદે ફલ ફૂલમા, ધરે સર્વણ આનંદ ॥  
 ત૦ ॥ ૧૧ ॥ ગુરુ વિસ્તારેરે ઝનમનુ કરી, જ  
 રસવ ન્હવણ કરાય ॥ આઠ પ્રકારેરે જિનપૂના  
 કરે, મંગલ અવસર થાય ॥ ત૦ ॥ ૧૨ ॥ સઘ તે  
 વોરે તિલક માલાતણું મંગલ નૃપને કરેઈ ॥  
 શ્રીજિનમાન્ધેરે સંઘે જે કરયો, મંગલ તે શિવ દે

ई ॥ त० ॥ १३ ॥ तप ऊजमणुंरे वीर्य उल्लासने,  
 तेइज मुगति निदान ॥ सर्व अनव्यारे तप पू  
 रां करयां, पण नाव्युं प्रणिधान ॥ त० ॥ १४ ॥  
 लघु कर्मीनेरे किरिया फल दीए, सफल मुगुरु  
 उवएस ॥ सिरहोए तिहां कूप खनन घटे, नहि  
 तो होय कलेश ॥ त० ॥ १५ ॥ सफल हुन सवी  
 नृप श्रीपालने, द्रव्य जाव जस शुद्ध ॥ मत को  
 इ राचोरे काचो मत लेइ, साचो बेउ नय शुद्ध  
 ॥ त० ॥ १६ ॥ चोथे खंडेरे दशमी ढालए, पूरे  
 ए हुइ सुप्रमाण ॥ श्री जिन विनय सुजश न  
 कि करी, पगपग होय कल्याण ॥ त० ॥ १७ ॥  
 दोहरा ॥ नमस्कार कहे एहवा, हिवे गंजीर  
 उदार ॥ योगीसर पण ते सुणी, चमके हृदय  
 मजार ॥ १ ॥ वप्पयवंद ॥ जो धुर सिरि अरि  
 हंत, मूल दृढ पीठ पइठो ॥ सिद्ध सूरि उवजा  
 य, साहु पास गिरिठो ॥ दंशण नाण चरि  
 सुंदरू ॥ तत्तद्धर सबग ॥ ल

द्वि गुरुपयदल तुंबरू, दिशिपाल जह्नु जह्नुणि  
 पमुह ॥ सुर असुर कुसुमेहिं अलंकियो, सो सिद्ध  
 चक्र गुरु कप्पतरु ॥ अंम्ह मन वंठित दियो ॥  
 ॥ १ ॥ नमस्कार करि उच्चरी, शक्रस्तव श्रीपाल  
 ॥ नवपद स्तवन कहे मुदा, स्वरपद वर्ण विशा  
 ल ॥ २ ॥ भंगलतूर वजावते, नाचंते वर पात्र  
 ॥ गायंते बहु विधि धवल, विरुद पठंते वात्र ॥  
 ॥ ३ ॥ संघपूजा साहमिवठल, करी तेह नरना  
 थ ॥ शासन जैन प्रजावतो, मेले शिवपुर साथ  
 ॥ ४ ॥ पटदेवी परिवार अन्य, साथे अविहल  
 राग ॥ आराधे सिद्धचक्रने, पामे जवजल ता  
 ग ॥ ५ ॥ त्रिजुवनपालादिक तनय, मयणादिक  
 संयोग ॥ नव निरुपम गुणनिधि हुआ, जोग  
 वता सुख जोग ॥ ६ ॥ गय रह सहसते नवहु  
 आ, नव लख जच्च तुरंग ॥ पति हुआ नव  
 कोडि तस, राजनीति नवरंग ॥ ७ ॥ राज नि  
 कंटक पालतां, नव शत वरस विलीन ॥ थापी



तिहुंयण पालने, नृप हुउ नवपदलीन ॥ ८ ॥

ढाल इगीयारमी ॥ श्री श्रीमंदर साहेब आ  
गे एदेशी ॥ त्रीजे नवगर थानक तप करी, जे  
ए बांध्युं जिन नाम ॥ चोसट इंद्रे पूजित जे जिन,  
कोजे तास प्रणामरे नवीका ॥ सिद्धचक्र पद वं  
दो, जिम चिरकाले नंदारे ॥ न० ॥ सि० ॥ १ ॥  
ए आंकणी ॥ जेहने होए कल्याणक दिवसे, न  
रके पण अजुआलुं ॥ सकल अधिक गुण अ  
तिशय धारी, ते जिन नभी अध टालुंरे ॥ न०  
॥ सि० ॥ २ ॥ जे तिहुनाण समग्ग उपन्या,  
जोग करम क्षिण जाणी ॥ लेइ दीक्षा शिक्षा  
दिये जनने, ते नमिये जिन नाणीरे ॥ न० ॥ सि० ॥  
॥ ३ ॥ महागोप महामाहण कहीए, निर्यामक स  
ब्राह्म ॥ उपमा एहवी जेहने बाजे, ते जिन नमिए  
उबाहरे ॥ न० ॥ सि० ॥ ४ ॥ आठ प्रातिहारन  
जस बाजे, पांत्रीश गुणयुत वाणी ॥ जे प्रतिवों  
ध करे जगजनने, ते जिन नमिए प्राणीरे ॥ न०

॥ सि० ॥ ५ ॥ ममय पए संतर अण फगसो,  
 चरम तिनाग-विशेष ॥ अवगाहन लेही जे शि  
 व पढोता, सिद्ध नमं ते अशेपरे ॥ ज० ॥  
 ॥ सि० ॥ ६ ॥ पूर्व प्रयोगने गति परिणामे, बंध  
 न वेद असंगे ॥ समय एक ऊरध गति जेह  
 नी, ते सिद्ध समरुं गंगेरे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ७ ॥  
 निर्मल सिद्ध भिलाने ऊपर, जोयण एक लो  
 कंत ॥ सादि अनंत तिहा स्थिति जेहनी, ते  
 सिद्ध प्रणमो संतरे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ८ ॥ ज  
 णे पण नशके कही पगुण, प्राकृत तेम गुण  
 जास ॥ उपमाविण नाणी नवगाहे, ते सिद्ध दि  
 यो उल्लासरे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ९ ॥ ज्योतिमुं  
 ज्योति मिली जस अनुपम, विरमी मकल उपा  
 धि ॥ आतमराम रमायति समरो, ते सिद्ध स  
 हज समाधिरे ॥ ज० ॥ सि० ॥ १० ॥ पंच आ  
 चार जे सुत्रा पाले, मारग नापे साचुं ॥ ते आ  
 चारिज नमिए तेहसु, प्रेम करीजे जाचुंरे ॥

ज०॥ सि०॥ ११ ॥ वर ठत्रीश गुणे करी सोहे,  
 युग प्रधान जनमोहे ॥ जग बोहे नरहे खिण को  
 हे, मूरि नमूं ते जोहेरे ॥ ज० ॥ सि० ॥ १२ ॥  
 नित अप्रमत्त धर्म उवएसे, नहि विकथा न क  
 पाय ॥ जेहने ते आचारिज नमिए, अकलुप अ  
 मल अमायरे ॥ ज० ॥ सि० ॥ १३ ॥ जे दिये  
 सारण वारण चोयण, पमिचोयण वलि जनने ॥  
 पटधारी गढथंज आचारज, ते मान्या मुनि म  
 ननेरे ॥ ज० ॥ सि० ॥ १४ ॥ अछमिए जिन  
 सूरज केवल, वंदीजे जगदीवो ॥ जुवन पदारथ  
 प्रगट पटुते, आचारज चिरंजीवोरे ॥ ज० ॥  
 सि० ॥ १५ ॥ द्वादश अंग सज्जाय करेते, पारग  
 धारग तास ॥ सूत्र अर्थ विस्तार रसिकते, न  
 मो उवज्जाय उल्लासरे ॥ ज० ॥ सि० ॥ १६ ॥  
 अर्थ सूत्रने दान विनागे, आचारज उवज्जाय ॥  
 जब त्रणे लहे जे शिव संपद, नमिए ते सुप  
 सायरे ॥ ज०॥ सि० ॥ १७ ॥ मुख शिष्य नि

પાઙ્ગે પ્રજ્ઞ, પહાણને પેલ્લવ આણે ॥ તે ઉવઝ્ઞાય  
 સકલજન પૂજિત, મૂત્રઅરથ સવિ જાણેરે ॥ જ૦  
 સિ૦ ॥ ૧૮ ॥ રાજકૂવર સરસ્વા ગણચિંતક,  
 આચારજ પદયોગ ॥ જે ઉવઝ્ઞાય સદાતે નમતાં,  
 નાથે જવનય શોગરે ॥ જ૦ ॥ સિ૦ ॥ ૧૯ ॥ વ વ  
 નાચંદનરસ સમ વયણે, અહિત તાપ સવિ  
 ટાલે ॥ તે ઉવઝ્ઞાય નમીજે જેવલી, જિનશાસન  
 ઝજૂઆલેરે ॥ જ૦ ॥ સિ૦ ॥ ૨૦ ॥ જિમ ત  
 રૂફૂલે જમરો બેસે, પીઢા તસન ઉપાય ॥ લ  
 ઙ રસને આતમ સંતોષે, તેમ મનિ ગોચરી જા  
 યરે ॥ જ૦ ॥ સિ૦ ॥ ૨૧ ॥ પંચેન્દ્રિયને જે નિત્ય  
 જીતે, પટકાયક પ્રતિપાલ ॥ સંજમ સતરે પ્રકારે  
 આરાધે, વંદુ તેહ દયાલરે ॥ જ૦ ॥ સિ૦ ॥ ૨૨ ॥  
 અંઢારસહસ સિલાંગના ધોરી, અચલ આચાર  
 ચરિત્ર ॥ મુનિમહંત જયણાયુન વંદી, કીજે મન્મ  
 પવિત્રરે ॥ જ૦ ॥ સિ૦ ॥ ૨૩ ॥ નવવિધ બ્રમ્હ  
 ગુપ્તિ જે પાલે, બારસવિહ તપ શૂરા ॥ એહવા મુ

નિ નમિએ જો પ્રગટે, પૂજ્ય પુણ્ય અંકુરે ॥ જ૦ ॥  
 સિ૦ ॥ ૨૪ ॥ સોનાતણાં પરે પરીક્ષા દામે, દિન  
 દિન ચઢતે વાના ॥ મંજમ સ્વપ કરતા મુનિ નમિએ, દે  
 શ કાલ અનુમાને ॥ જ૦ ॥ સિ૦ ॥ ૨૫ ॥ શુદ્ધ દેવ  
 ગુરુ ધર્મ પરીક્ષા, સર્વદેહના પરિણામ ॥ જેહ પામીજે  
 તેહ નમિજે, સમ્યક દર્શન નામે ॥ જ૦ ॥ સિ૦ ॥  
 ॥ ૨૬ ॥ મલઉપશમ ક્ષયઉપશમ ક્ષયથી, જેહોય ત્રિ  
 વિધ અનંગ ॥ સમ્યગદર્શન તેહ નમીજે, જિનધર્મે દ  
 ઢ રંગે ॥ જ૦ ॥ સિ૦ ॥ ૨૭ ॥ પાંચ વાર ઉપ  
 શમિયે લહીજે, સ્વય ઉવસમિય અસંખ ॥ એક  
 વાર ક્ષાયકતે સમ્યક, દર્શન નમીએ અસંખરે ॥  
 જ૦ ॥ સિ૦ ॥ ૨૮ ॥ જેવિણ નાણ પ્રમાણ  
 નહોએ, ચારિત્રતરુ નવિ ફલિયું ॥ સુખ નિર્વાણ  
 ન જેવિણ લહિએ, સમકિત દર્શન બલિયું ॥ જ૦ ॥  
 સિ૦ ॥ ૨૯ ॥ સમસઠ બોલેજે અલંકરયું, જ્ઞા  
 ન ચારિત્રનું મૂલ ॥ સમકિત દર્શન તે નિત પ્રણ  
 , શિવપંથે અનુકુલરે ॥ જ૦ ॥ સિ૦ ॥ ૩૦ ॥

नद अन्नदण जेविण लहिए, पेय अपेय विचार  
 ॥ कृत्य अकृत्यण जेविण लहिय, ज्ञान ते सकल आ  
 धारे ॥ न० ॥ सि० ॥ ३१ ॥ प्रथम ज्ञानने प  
 ठी अहिंसा, श्रीसिद्धाते जाण्युं ॥ ज्ञानने वंदो  
 ज्ञानमानंदो, ज्ञानीए शिवसुख चारुं ॥ न० ॥  
 ॥ सि० ॥ ३२ ॥ सकल क्रियानुं मूलजे श्रद्धा,  
 तेहनं मूल जे कहिए ॥ तेह ज्ञाननित वंदीजे,  
 तेहविण कहो केम रहीएरे ॥ न० ॥ सि० ॥ ३३ ॥  
 पाच ज्ञानमाहे जेह सदागम, स्वपर प्रकाशक ते  
 ह ॥ दीपक परे विजुवन उपकारी, बलि जेम र  
 वि शशि मेहरे ॥ न० ॥ सि० ॥ ३४ ॥ लोक-ऊर्ध्व  
 अध तिर्यग उद्योतिष, वैमानिकने सिद्धि ॥ लोक  
 अलोक प्रगटसवि जेहथी, ते ज्ञाने मुज मुद्धिरे  
 ॥ न० ॥ सि० ॥ ३५ ॥ देशविरतिने सर्वविरति  
 जे, गृही यतिने अजिराम ॥ ते चारित्र जगत्त ज  
 यवतुं, कीजे तास प्रणानरे ॥ न० ॥ सि० ॥  
 ॥ ३६ ॥ तृणपरे जे पटखंड मुख ठामी, चक्रव

तिं पण वरियुं ॥ ते चारित्र अह्य मुख कार  
 ण, ते में मनमाहे धरियुरे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ३७ ॥  
 हुआ रांक पण जेह आदरी, पूजित इंद्र नरिं  
 दे ॥ अशरण शरण चरणते वंदू, पूयूं ज्ञान आ  
 नंदेरे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ३८ ॥ वारामास पर्याय जे  
 हने, अनुत्तर सुख अतिक्रमिए ॥ शुक्ल शुक्ल अ  
 निजात्यत ऊपर, ते चारित्रने नमिएरे ॥ ज० ॥  
 ॥ सि० ॥ ३९ ॥ चयते आठ कर्मनो संचय, रि  
 क्त करेजे तेह ॥ चारित्र नाम निरुक्तिए जाण्युं,  
 ते वंदू गुणगेहरे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ४० ॥ जाण  
 तां त्रिहं ज्ञाने संयुक्त, तेचव मुक्ति जिणंद ॥ जे  
 ह आदरे कर्म खपेवा, ते तप शिवतरु वंदरे ॥  
 ज० ॥ सि० ॥ ४१ ॥ कर्म निकांचित पण ह्य  
 जाय, क्षमा सहितते करतां ॥ ते तप नमिए जे  
 ह दीपावे, जिनशासन उजमंतारे ॥ ज० ॥ सि०  
 ॥ ४२ ॥ आमोसही पमुहा बहु लाद्धि, उपजे जा  
 स प्रजावे ॥ अष्ट महा सिद्धि नवनिधि प्रगटे,

नमीए ते तप जावेरे ॥ ज०॥सि० ॥४३॥ फल  
 शिव सुख महोटु मुरनरवर, संपाति जेहनुं फूल  
 ॥ ते तप सुरतरू सरिखुं वंदु, सम मकरंद अ  
 मूलरे ॥ ज०॥ सि० ॥४४॥ सर्व मंगलमांहे प  
 हेलुं मंगल, वर्णवीए जे ग्रंथे ॥ ते तपपद त्रिहुं  
 काल नमीजे, वरसहाय शिवपंथेरे ॥ ज० ॥  
 सि०॥ ४५॥ इम नवपद थुणतो तिहां लीनो, हुउ  
 तन्मय श्रीपाल ॥ सुजश विठासे चोथे खंढे, एह  
 इगीयारमी ढालरे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ४६ ॥

दोहरा ॥ इम नव पद थुणतो थको, ते  
 ध्याने श्रीपाल ॥ पाम्यो पूरण आनुपो, नवमो  
 कल्प विशाल ॥ १ ॥ राणी मयणा प्रमुख सवि,  
 माता पण शुभ ध्यान ॥ आनुपे तिहां ऊपन्यां, मुख  
 जोगवे विमान ॥ २ ॥ नर नव अंतर स्वर्गते,  
 चार वार लहि सर्व ॥ नवमे नव शिव पामजे,  
 गोतम कहे निगर्व ॥ ३ ॥ ते निसुणी श्रेणिक  
 कंहे, नव पद उलसित जाव ॥ अहो नवपद म



हिमा वनो, एउे नवजल नाव ॥ ४ ॥ बलतुं गौ  
 तम गुरु कहे, एक एक पद नक्ति ॥ देवपाल सु  
 ख सुख लह्यां, नवपद महिमा तहति ॥ ५ ॥  
 किंबहुना मगधेश तुं, ए पद नक्ति प्रनाव ॥  
 होइश तीर्थकर प्रथम, निश्चय ए मन जाव ॥  
 ॥ ६ ॥ गौतम वचन सुणी इस्यां, उठयो मगध  
 नरेन्द्र ॥ वधामणी आवी तदा, आव्या वीर जि  
 णेन्द्र ॥ ७ ॥ देवें समोवसरण रच्युं, कुसुमवृष्टि  
 त्यां कीध ॥ अंबर गाजे दुंदुभि, वर अशोक  
 सुप्रसिद्ध ॥ ८ ॥ सिंहासन माम्युं तिहां, चामर ठ  
 अ ठलंत ॥ दिव्यध्वनि दिए देशना, प्रजु नामंफल  
 वंत ॥ ९ ॥ वधामणी देइ वांदवा, आव्यो श्रेणि  
 कंराय ॥ वांदी बेठो परखदा, उचित थानके आय  
 ॥ १० ॥ श्रेणीक उद्देशी कहे, नवपदमहिमा वीर ॥ न  
 वपदसेवे बहु नविक, पाम्या नवजल तरि ॥ ११ ॥  
 आराधननुं मूल तस, आतम जाव अवेह ॥ ते  
 ए नवपद ठे आतमा, नवमाहे पद तेह ॥ १२ ॥

ध्येय समापंति होय तव, ध्याता ध्यान प्रमाण॥  
 तेणे नवपद आतमा, जाणे कोइ सुजाण॥१३॥  
 लेइ असंग क्रियाबले, जस ध्याने जेणे सिद्धि॥तेणे  
 तेहवुं पद अनुभव्युं, घटमां सकल समृद्धि॥१४॥

ढाल बारमी ॥ स्वामि श्रीमंधर उपदेशे, ए दे  
 शी ॥ अरिहंत मद् ध्यातो थको, दबह गुण प  
 जायरे ॥ नेद वेद करी आतमा, अरिहंतरूपा  
 थायरे ॥ १ ॥ विर जिणेश्वर उपदिशे, मानालजो  
 चित्त लायरे ॥ आतमध्याने आतमा, ऋद्धी मिले  
 सवि आइरे ॥ वी० ॥ २ ॥ रूपातीत स्वभावजे, के  
 वल दंसण नाणीरे ॥ ते ध्याता निज आतमा, होए  
 सिद्धगुण खाणीरे ॥ वी० ॥ ३ ॥ ध्यातां आचारिज न  
 ला, माहामंत्र शुच ध्यानीरे ॥ पंच प्रस्थाने आ  
 तमा, आचारिज होए प्राणीरे ॥ वी० ॥ ४ ॥ तप  
 सक्काए रत सदा, द्वादश अंगनो ध्यातारे ॥ उ  
 पाध्याय ए आतमा, जगबंधव जगभ्रातारे ॥ वी० ॥  
 ॥ ५ ॥ अप्रमते जे नित रहे, नवि हरपे नवि

लोचरे ॥ साधु सुधाते आतमा, सुमुंदये सुनो  
 वरे ॥ वी० ॥ ६ ॥ सम संवेगादिक गुणा, क्षय  
 उपशमजे आवरे ॥ दर्शन तेहिज आतमा, शुं  
 एहो नाम धरावरे ॥ वी० ॥ ७ ॥ ज्ञानावरणी  
 जे कर्मठे, क्षय उपशम तस थायरे ॥ तो एहो  
 एहज आतमा, जन अवोधता जायरे ॥ वी० ॥  
 ॥ ८ ॥ जाणो चारित्र ते आतमा, निज स्वप्ना  
 वमां रमतोरे ॥ लेश्या शुद्ध अलंकरयो, मोह वने  
 नवि नमतोरे ॥ वी० ॥ ९ ॥ इच्छा रोधे संवरी  
 परिणति समता योगेरे ॥ तपते एहिज आतमां,  
 वरते निजगुण जोगेरे ॥ वी० ॥ १० ॥ आग  
 मनो आगमतणो, जाव ते जाणो साचोरे ॥ आ  
 तमजावे धिर होजो, परजावे मत राचोरे ॥ वी०  
 ॥ ११ ॥ अष्ट सकल समृद्धिनी, घटमांही ऋद्धि  
 दाखीरे ॥ तेम नवपद ऋद्धि जाणजो, आतमराम  
 ठे साखीरे ॥ वी० ॥ १२ ॥ योग असंखजे जिन  
 कह्या, नव पद मुख्यते जाणोरे ॥ तेहतणे अव

लंबने, आत्मध्यान प्रमाणेरे ॥ वी० ॥ १३ ॥  
 ढाल बारमी ए कही, चौथे खंडे पूगीरे ॥ वाणी  
 वाचक जशतणी, कोइ नये न अधूरीरे ॥ वी० ॥ १४ ॥

दोहरा ॥ वचनामृत जिनवरिना, निसुणि श्रे  
 णिकजुप ॥ आनंदित पहोतो घरे, ध्यातो शुद्ध  
 स्वरूप ॥ १ ॥ कुमतितिमिर सवि टालतो, वर्द्ध  
 मान जिनजाण ॥ नविक कमल पडीबोहतो, वि  
 हरे महियल जाण ॥ २ ॥ ए श्रीपाल नृपति क  
 था, नवपद महिमा विशाल ॥ नणे गुणेने सा  
 नले, तस घरे मंगल माल ॥ ३ ॥

ढाल तेरमी ॥ राग घनाश्री ॥ थुणिउ थुणिउरे,  
 प्रजुतं सुरपति जिनथुणिउ एदेशी ॥ तुठयो तुठयो  
 रे, मुज साहेव जगनो तुठयो ॥ ए श्रीपालनो रास  
 करंतां ज्ञानअमृतरस वुठयो ॥ मुज० ॥ १ ॥  
 पायसमा जेम वृद्धिनु कारण, गोयमनो अंगूठो  
 ॥ ज्ञानमाहे अनुभव तेम जाणो, तेविण ज्ञान  
 ते जूठेरे ॥ मुज० ॥ २ ॥ उदक पयोमृत कल्प

ज्ञान तिहां, त्रीजो अनुभव मीठो ॥ तेविण स  
 कल तृषा केम जांजे, अनुभव प्रेम गरीठोरे ॥  
 मुज० ॥ ३ ॥ प्रेमतणीपरे शीखो साधो, जोइ  
 सेलमी सांठो ॥ जिहां गांठ तिहां रस नवि दी  
 से, जिहां रस तिहां नवि गांठोरे ॥ मुज० ॥ ४ ॥  
 जिणही पाया तिणही बिपाया, ए पण एकठे  
 चांठो ॥ अनुभव सुरज तेज बिपे किम, तेतो स  
 घले दीठोरे ॥ मुज० ॥ ५ ॥ पूरव लिखित लिखे  
 सविलेइ, मसी कागलने कांठो ॥ जाव अपूरवे  
 कहेंता पंडित, बहु बोलते वांठोरे ॥ मुज० ॥ ६ ॥  
 अवयव सवि सुंदर होय देहे, नाके दीसै चांठो ॥  
 ग्रंथ ज्ञान अनुभवविण तेहवुं, शुक जिरियो सुत  
 पाठोरे ॥ मुज० ॥ ७ ॥ संशय नवि जांजे श्रुतज्ञाने,  
 अनुभव निश्चय जेठो ॥ वादविवाद अनिश्चित क  
 रतो, अनुभवविण जाए हेठोरे ॥ मुज० ॥ ८ ॥  
 जेम जेम बहुश्रुत बहुजन संमत, बहुल शिष्य  
 नो शेठो ॥ तेम तेम जिनशासननो वयरी, जो

नवि अनुजव नेठारे ॥ मुज० ॥ ९ ॥ माहरेतो  
 गुरु चरणपसार्ये, अनुजव दिलमां पेठो ॥ ऋद्धि  
 वृद्धि प्रगटी घटमांहे, आतमरातिहुइ बेठारे ॥  
 ॥ मुज० ॥ १० ॥ ऊग्यो समकित रवि ऊलह  
 लतो, जर्म तिमिर सवि नाठो ॥ तगतगता दू  
 नयजे तारा, तेहनो बल पण गाठारे ॥ मुज० ॥  
 ॥ ११ ॥ मेरु धीरता सवि हरि लीनी, रह्यो ते के  
 वल नाठो ॥ हरि सुर घट सुरतरुकी शोभा, ते  
 तो माटी काठारे ॥ मुज० ॥ १२ ॥ हरव्यो अ  
 नुजव जोरहतोजे, मोहमल्ल जग लूंठो ॥ परिपरि  
 तेहना मर्म देखावी, नारे कीधो जुंठारे ॥ मुज० ॥  
 ॥ १३ ॥ अनुजव गुण आव्यो निज अंगे, मिटयो  
 रूप निज माठो ॥ साहेब सन्मुख सुन जरजोतां,  
 कोण थाए उपराठारे ॥ मुज० ॥ १४ ॥ थोमे पण  
 दंजे दुःख पाम्या, पीठ अने महापीठो ॥ अनु  
 जववंतते दंजन राखे, दंज धरेते धीठारे ॥ मुज० ॥  
 ॥ १५ ॥ अनुजववंत अदंजनी रचना, गांठ स

रस सुकंठो ॥ जाव सुधारस घटघट पीठ, हुठ  
पूरण उत्कंठारे ॥ मुज० ॥ १६ ॥

कलश ॥ राग धनाश्री ॥ ते तरियारे जाइ  
ते तरिया एदेशी ॥ तपगठ नंदन मुरतरु प्रग  
ठ्या, हीर विजय गुरुरायाजी ॥ अकबरशाहे जस  
उपदेशे, पढह अमार वजायाजी ॥ १ ॥ हेमसू  
रि जिनशासन मुद्राए, हेमसमान कहायाजी ॥  
जाचो हीरो जे प्रजु होता, शासन सोह चढाया  
जी ॥ २ ॥ तास पढे पूर्वाचल उदयो, दिनकर  
तुल्य प्रतापीजी ॥ गंगाजल निर्मल जस कीर  
ति, सघले जगमांहे व्यापीजी ॥ ३ ॥ शाह स  
नामांहे वाद करीने, जिनमत थिरता थापीजी ॥  
बहु आदर जस शाहे दीधो, विरुद सवाइ आ  
पीजी ॥ ४ ॥ श्री विजयदेवसूरि तस पटधर, उ  
दया बहु गुणवंताजी ॥ जास नाम दशदिशबे  
चावुं, जे महिमाए महंताजी ॥ ५ ॥ श्री विजय  
प्रज तस पटधारी, सूरि प्रतापी बाजेजी ॥ एह

रासनी रचना कीधी, सुंदर तेहने राजेजी ॥६॥  
 सूरि हीर गुरुनी बहु कीर्ति, कीर्तीविजय उव  
 ज्ञायजी ॥ ७ ॥ विद्या विनय विवेक विचक्षण,  
 लक्षण लक्ष्मीत देहाजी ॥ सोनागी गीतारथ  
 सारथ. संगत सखर सनेहाजी ॥ ८ ॥ संवत  
 सत्तर सन्नीशे वरसे, रही रानेर चोमासेजी ॥  
 संघतणा आग्रहथी मांडयो, रास अधिक उल्ला  
 सेजी ॥ ९ ॥ सार्द्ध सप्त शत गाथा विरची, पही  
 ताते सुरलोकेजी ॥ तेहना गुण गावेठे गोरी, मिली  
 मिली थोके थोकेजी ॥ १० ॥ तास विश्वासना  
 जन तस पूरण, प्रेम पवित्र कहायाजी ॥ श्री  
 नयविनय विबुधपय शैवक, सुजश विजय उ  
 वज्ञायजी ॥ ११ ॥ जाग थाकतो पूरण कीधो,  
 तास वचन संकेतेजी ॥ तेणे बलि समकित दृष्टि  
 जे नर, तेहतणे हित हेतेजी ॥ १२ ॥ जे जावे ए  
 नणशे गणशे, तस घर मंगल मालाजी ॥ बंधुरसिंधु  
 र सुंदर मंदिर, मणिमय जाकजमालाजी ॥ १३ ॥



देह सबल ससनेह परिच्छद, रंग अजंग रसा  
लाजी ॥ अनुक्रमे तेह महोदय पदवी, लेशे  
ज्ञान विशालाजी ॥ १४ ॥

इति श्रीमन्महोपाध्याय श्री कीर्तिविजयगणि शि  
ष्योपाध्याय श्री विनयविजयगणि विरचिते श्री  
श्रीपालचरित्रे प्राकृतप्रबंधे तन्मध्ये उपाध्याय  
श्रीयशोविजयगणि पुरिते चतुर्थखंडः ॥ संपूर्णम् ॥

- १ जैन धर्म ज्ञान प्रदीपक पोथी किंमत १॥ रुपया.  
२ कल्पसूत्रको भावार्थ किंमत २ रुपया.  
३ जैन सत्यार्थसागर किंमत २ रुपया.  
४ हरिवंश ढाळसागर किंमत १॥ रुपया.  
५ रामलछमणजीको रास किंमत १ रुपया.  
६ चंद्रराजाको रास किंमत १ रुपया.  
७ उपदेश रत्नमाला रास किंमत १ रुपया.  
८ जैन रामायण [ बालायबोध ] किंमत १ रुपया.  
९ जैन धर्म सिद्धांतसार किंमत १ रुपया.  
१० जैन कथारतन कोश किंमत १ रुपया.  
११ विवधरतन प्रकाश पुस्तक किंमत ८ आना.  
१२ जैन धर्म ज्ञानप्रकाश किंमत १२ आना.  
१३ लछमणबोध नाटक किंमत १२ आना.  
१४ हरीबल मच्छोको रास किंमत १ रुपया.  
१५ साधु श्री भिखणजी स्वामीको रास किं. १ रुपया.  
१६ जैन ज्ञानसार संग्रह किंमत १२ आना.  
१७ रतनपालको रास किंमत ८ आना.  
१८ मारवाडी शिलोका संग्रह किंमत ८ आना.

॥ समाप्त ॥

